गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका अक्टूबर- 2012

गुरुत्व ज्योतिष

नवरात्र विशेष



NON PROFIT PUBLICATION

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका

अक्टूबर 2012

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

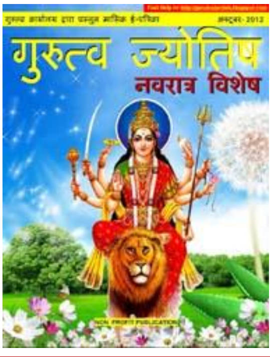
स्वस्तिक.ऐन.जोशी

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी, स्वस्तिक आर्ट

हमारे मुख्य सहयोगी

स्वस्तिक.ऐन.जोशी (स्वस्तिक सोफ्टेक इन्डिया लि)



हिन्दु परंपरा में देवी को विभिन्न रूपों से जाना और पूजा जाता हैं। *ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥* | **भावार्थ:** जयंती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा धात्री और स्वधा के नामों से प्रसिद्ध जगदम्बा देवी। आपको मेरा नमस्कार हैं।...4

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नम: । नम: प्रकृत्यै भद्रायै नियता: प्रणता: स्मताम्॥

अर्थात: देवी को नमस्कार हैं, महादेवी को नमस्कार हैं। महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार हैं। प्रकृति एवं भद्रा को मेरा प्रणाम हैं। हम लोग नियमपूर्वक देवी जगदम्बा को नमस्कार करते हैं। ...6

नवरात्र विशेष में पढ़े

सर्व कार्य सिद्धि कवच ...37



गणेश लक्ष्मी यंत्र...19



नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र..69

दुर्गा बीसा यंत्र ...21



राशि रत्न...72



मंत्र सिद्ध रूद्राक्ष ...73

अमोघ महामृत्युंजय कवच ...78

◈◈◈ विशेष में ◈◈◈

◈◈◈ स्थायी और अन्य लेख ◈◈◈

◈◈◈ नवरात्र विशेष ◈◈◈

◈◈◈ हमारे उत्पाद ◈◈◈

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

संपादकीय

जय गुरुदेव

हिन्दु परंपरा में देवी को विभिन्न रूपों से जाना और पूजा जाता हैं।

ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥

भावार्थ: जयंती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा धात्री और स्वधा के नामों से प्रसिद्ध जगदम्बा देवी। आपको मेरा नमस्कार हैं।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

अर्थात: देवी को नमस्कार हैं, महादेवी को नमस्कार हैं। महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार हैं। प्रकृति एवं भद्रा को मेरा प्रणाम हैं। हम लोग नियमपूर्वक देवी जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

शास्त्रोक्त वर्णन हैं की देवी दुर्गा के उक्त मंत्र का स्मरण कर प्रार्थना करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करती हैं। समस्त देव गण जिनकी स्तुति प्राथना करते हैं। माँ दुर्गा अपने भक्तो की रक्षा कर उन पर कृपा द्रष्टी वर्षाती हैं और उसको उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। इस लिये ईश्वर में श्रद्धा विश्वार रखने वाले सभी मनुष्य को देवी की शरण में जाकर देवी से निर्मल हृदय से प्रार्थना करनी चाहिये।

मां जगदम्बा की कृपा प्राप्ति हेतु नवरात्री विशेष लाभ प्रदान करने वाली हैं। क्योकि नवरात्र को आद्य शक्ति की उपासना का महापर्व माना गया हैं। देवी भागवत के आठवें स्कंध में देवी उपासना का विस्तार से वर्णन किया गया है।

मार्कण्डेयपुराण के अंतर्गत देवी माहात्म्य में उल्लेख हैं की स्वयं मां जगदम्बा का वचन हैं... की

शरत्काले महापूजा क्रियतेया चवार्षिकी। तस्यांममैतन्माहात्म्यंश्रुत्वाभक्तिसमन्वितः॥

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोधनधान्यसुतान्वितः। मनुष्योमत्प्रसादेनभविष्यतिन संशयः॥

अर्थात: शरद ऋतु के नवरात्रमें जब मेरी वार्षिक महापूजा होती हैं, उस काल में जो मनुष्य मेरे माहात्म्य (दुर्गासप्तशती) को भक्तिपूर्वकसुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त होकर धन-धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न हो जायेगा।

मां दुर्गा की कृपा प्राप्ति हेतु विभिन्न शास्त्र एवं ग्रंथो में विभिन्न मंत्रों का उल्लेख किया गया हैं। पाठको के मार्गदर्शन एवं जानकारी हेतु पत्रिका के इस अंक में कुछ विशेष प्राभावी मंत्रो का संकलन करने का प्रयास किया गया हैं। इस अंक में कलश स्थापना से संबंधित वर्णन भी किया गया हैं। जिससे इच्छुक बंधु/बहन विशेष लाभ प्राप्त कर अपने मनोरथो को सिद्ध करने में समर्थ हों।

गुरुत्व कार्यालय परिवार की ओर से आप सभी को नवरात्र की शुभकामनएं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो मां भगवती आप सभी का कल्याण करें। आद्य शक्ति मां जगदम्बा से यही प्राथना हैं।

विशेष सूचना: पीछले कुछ महिनो से हमारे प्रिय एवं आत्मिय बंधु/बहनो को हमारी मासिक ई-पत्रिका प्रतिमाह 1 तारिख को उपलब्ध नहीं हो पाती इस का मुख्य कारण हैं, हमारे प्रिय पाठको को अधिक से अधिक ज्ञान वर्धक जानकारीयां उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संबंधित विषयों पर नई-नई खोज, नये प्रयोग एवं कुछ तकनिकी सुधार व पत्रिका को बेहतर बनाने के विभिन्न प्रयासो के कारण समय का अभाव हो रहा हैं, इस कारण इस नवरात्र विशेष अंक में संबंधित प्राय सभी लेखों का पुनः प्रकाशन किया गया हैं।

अपना सहयोग बनाएं रखे हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं.....

चिंतन जोशी

***** नवरात्र विशेषांक से संबंधित विशेष सूचना *****

- पत्रिका में प्रकाशित नवरात्र विशेष में सम्बन्धित सभी जानकारीयां गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- पौराणिक ग्रंथो पर अविश्वास रखने वाले व्यक्ति इस अंक में उपलब्ध सभी विषय को मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- धार्मिक विषय आस्था एवं विश्वास पर आधारित होने के कारण इस अंकमें वर्णित सभी जानकारीया भारतिय ग्रंथो से प्रेरित होकर लिखी गई हैं।
- धर्म से संबंधित विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- इस अंक में वर्णित संबंधित सभी लेख में वर्णित मंत्र, यंत्र व प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- धर्म से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय उनका स्वयं का होगा।
- शास्त्रोक्त विषयों से संबंधित जानकारी पर पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- धर्म से संबंधित लेख प्रामाणिक ग्रंथो, हमारे वर्षो के अनुभव एव अनुशंधान के आधार पर दिये गये हैं।
- हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा धर्म से संबंधित विषयों पर विश्वास किए जाने पर उसके लाभ या नुक्शान की जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी धार्मिक विषयो पर विश्वास करने वाले या उसका प्रयोग करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु यहां वर्णित जानकारी की आधार पर प्रयोग कर्ता हैं अथवा धार्मिक विषयो के उपयोग करने मे त्रुटि रखता हैं या उससे त्रुटि होती हैं तो इस कारण से प्रतिकूल अथवा विपरित परिणाम मिलने भी संभव हैं।
- धार्मिक विषयो से संबंधित जानकारी को मानकर उससे प्राप्त होने वाले लाभ, हानी कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये धार्मिक विषयो पर आधारित लेखों में वर्णित जानकारी को हमने कई बार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण ने भी अपने नीजी जीवन में अनुभव किया हैं। जिस्से हम कई बार धार्मिक विषयो के आधार पर से विशेष लाभ की प्राप्ति हुई हैं। अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।

मां दुर्गा की उपासना क्यों की जाती हैं?

चिंतन जोशी

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

अर्थातः देवी को नमस्कार हैं, महादेवी को नमस्कार हैं। महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार हैं। प्रकृति एवं भद्रा को मेरा प्रणाम हैं। हम लोग नियमपूर्वक देवी जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

उपरोक्त मंत्र से देवी दुर्गा का स्मरण कर प्रार्थना करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करती हैं। समस्त देव गण जिनकी स्तुति प्राथना करते हैं। माँ दुर्गा अपने भक्तो की रक्षा कर उन पर कृपा द्रष्टी वर्षाती हैं और उसको उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। इस लिये ईश्वर में श्रद्धा विश्वार रखने वाले सभी मनुष्य को देवी की शरण में जाकर देवी से निर्मल हृदय से प्रार्थना करनी चाहिये।

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
पसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य।

अर्थातः शरणागत कि पीड़ा दूर करने वाली देवी आप हम पर प्रसन्न हों। संपूर्ण जगत माता प्रसन्न हों। विश्वेश्वरी देवी विश्व कि रक्षा करो। देवी आप हि एक मात्र चराचर जगत कि अधिश्वरी हो।

सर्वमंगल-मांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः हे देवी नारायणी आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याण दायिनी शिवा हो। सब पुरूषार्थो को सिद्ध करने वाली शरणा गतवत्सला तीन नेत्रों वाली गौरी हो, आपको नमस्कार हैं। आप सृष्टि का पालन और संहार करने वाली शक्तिभूता सनातनी देवी, आप गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

इस मंत्र के जप से माँ कि शरणागती प्राप्त होती हैं। जिस्से मनुष्य के जन्म-जन्म के पापों का नाश होता है। मां जननी सृष्टि कि आदि, अंत और मध्य हैं।

देवी से प्रार्थना करें –

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः शरण में आए हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब कि पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी आपको नमस्कार है।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हाश्रयतां प्रयान्ति।

अर्थातः देवी आप प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके है। उनको विपत्ति आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

सर्वबाधाप्रशमनं त्रेलोक्यस्याखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यमस्यध्दैरिविनाशनम्।

अर्थातः हे सर्वेश्वरी आप तीनों लोकों कि समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे सभी शत्रुओं का नाश करती रहो।

शांतिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्रदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु महात्मयं शणुयात्मम।

अर्थातः सर्वत्र शांति कर्म में, बुरे स्वप्न दिखाई देने पर तथा ग्रह जनित पीड़ा उपस्थित होने पर माहात्म्य श्रवण करना चाहिए। इससे सब पीड़ाएँ शांत और दूर हो जाती हैं।

यहि कारण हैं सहस्त्रयुगों से मां भगवती जगतजननी दुर्गा की उपासना प्रति वर्ष वसंत, आश्विन एवं गुप्त नवरात्री में विशेष रुप से करने का विधान हिन्दु धर्म ग्रंथो में हैं।

***

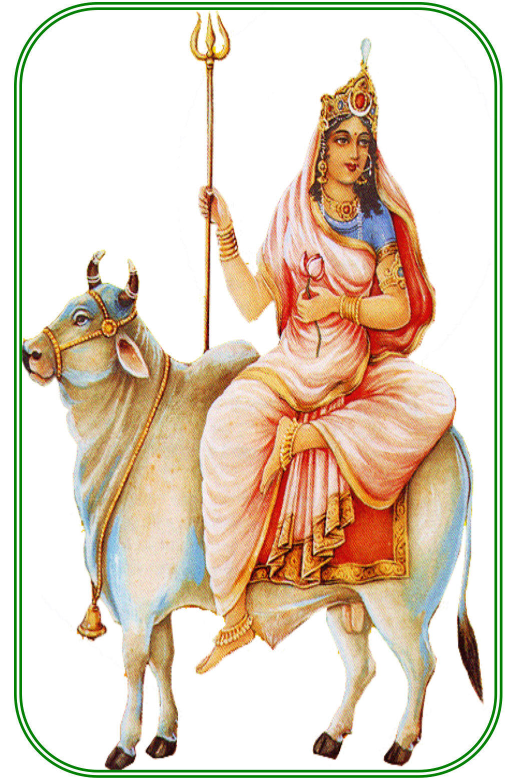
प्रथम शैलपुत्री

चिंतन जोशी

नवरात्र के प्रथम दिन मां के शैलपुत्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। पर्वतराज (शैलराज) हिमालय के यहां पार्वती रुप में जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा जाता हैं।

भगवती नंदी नाम के वृषभ पर सवार हैं। माता शैलपुत्री के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल पुष्प सुशोभित हैं।

मां शैलपुत्री को शास्त्रों में तीनो लोक के समस्त वन्य जीव-जंतुओं का रक्षक माना गया हैं। इसी कारण से वन्य जीवन जीने वाली सभ्यताओं में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना की जाती हैं जिस सें उनका निवास स्थान एवं उनके आस-पास के स्थान सुरक्षित रहे।



मूल मंत्र:-

वन्दे वांछितलाभाय चन्दार्धकृतशेखराम्। वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

ध्यान मंत्र:-

वन्दे वांछितलाभायाचन्द्रार्धकृतशेखराम्। वृषारूढांशूलधरांशैलपुत्रीयशस्विनीम्।
पूणेन्दुनिभांगौरी मूलाधार स्थितांप्रथम दुर्गा त्रिनेत्रा।
पटाम्बरपरिधानांरत्नकिरीठांनानालंकारभूषिता।
प्रफुल्ल वंदना पल्लवाधंराकातंकपोलांतुगकुचाम्।
कमनीयांलावण्यांस्मेरमुखीक्षीणमध्यांनितम्बनीम्।

स्तोत्र:-

प्रथम दुर्गा त्वंहिभवसागर तारणीम्। धन ऐश्वर्य दायनींशैलपुत्रीप्रणमाम्हम्।
चराचरेश्वरीत्वंहिमहामोह विनाशिन। भुक्ति मुक्ति दायनी,शैलपुत्रीप्रणमाम्यहम्।

कवच:-

ओमकार: मेशिर: पातुमूलाधार निवासिनी। हींकारपातुललाटेबीजरूपामहेश्वरी। श्रींकारपातुवदनेलज्जारूपामहेश्वरी। हुंकार पातुहृदयेतारिणी शक्ति स्वघृत। फट्कार:पातुसर्वागेसर्व सिद्धि फलप्रदा।

मां शैलपुत्री का मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति को सदा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख साधनो को कमी महसुस नहीं होतीं।

नवरात्र के प्रथम दिन की उपासना से योग साधना को प्रारंभ करने वाले योगी अपने मन से 'मूलाधार' चक्र को जाग्रत कर अपनी उर्जा शक्ति को केंद्रित करते हैं, जिससे उन्हें अनेक प्रकार कि सिद्धियां एवं उपलब्धियां प्राप्त होती हैं।

***

द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

चिंतन जोशी

नवरात्र के दूसरे दिन मां के ब्रह्मचारिणी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। मां ब्रह्मचारिणी तप का आचरण करने वाली भगवती हैं इसी कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया।

शास्त्रो में मां ब्रह्मचारिणी को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया हैं। शास्त्रो में ब्रह्मचारिणी देवी के स्वरूप का वर्णन पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यंत दिव्य दर्शाया गया हैं।

मां ब्रह्मचारिणी श्वेत वस्त्र पहने उनके दाहिने हाथ में अष्टदल कि जप माला एवं बायें हाथ में कमंडल सुशोभित रहता हैं। शक्ति स्वरुपा देवी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर तपस्या रत रहीं और 3000 साल तक शिव कि तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर कि, उनकी इसी कठिन तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी नाम से जाना गया।



मंत्र:

दधानापरपद्माभ्यामक्षमालाककमण्डलम्। देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित लाभायचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
जपमालाकमण्डलुधरांब्रह्मचारिणी शुभाम्।
गौरवर्णास्वाधिष्ठानस्थितांद्वितीय दुर्गा त्रिनेत्राम्।
धवल परिधानांब्रह्मरूपांपुष्पालंकारभूषिताम्।
पदमवंदनांपल्लवाधरांकातंकपोलांपीन पयोधराम्।
कमनीयांलावण्यांस्मेरमुखींनिम्न नाभिंनितम्बनीम्।।

स्तोत्र:-

तपश्चारिणीत्वंहितापत्रयनिवारणीम्। ब्रह्मरूपधराब्रह्मचारिणींप्रणमाम्यहम्।।
नवचग्रभेदनी त्वंहिनवऐश्वर्यप्रदायनीम्। धनदासुखदा ब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्॥
शंकरप्रियात्वंहिभुक्ति-मुक्ति दायिनी शांतिदामानदाब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्।

कवच:-

त्रिपुरा मेहृदयेपातुललाटेपातुशंकरभामिनी। अर्पणासदापातुनेत्रोअधरोचकपोलो॥ पंचदशीकण्ठेपातुमध्यदेशेपातुमाहेश्वरी षोडशीसदापातुनाभोगृहोचपादयो। अंग प्रत्यंग सतत पातुब्रह्मचारिणी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

***

तृतीयं चन्द्रघण्टा

✍ चिंतन जोशी

नवरात्र के तीसरे दिन मां के चन्द्रघण्टा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। चन्द्रघण्टा का स्वरूप शांतिदायक और परम कल्याणकारी हैं। चन्द्रघण्टा के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र शोभित रहता हैं । इस लिये मां को चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता हैं। चन्द्रघण्टा के देह का रंग स्वर्ण के समान चमकीला हैं और देवि उपस्थिति में चारों तरफ अद्भुत तेज दिखाई देता हैं।

मां तीन नेत्र एवं दस भुजाए हैं, जिसमें कमल, धनुष-बाण, खड्ग, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा आदि अस्त्र-शस्त्र, बाण आदि सुशोभित रहते हैं। मां के कंठ में सफेद पुष्पों कि माला और शीर्ष पर रत्नज़डित मुकुट शोभायमान हैं। चन्द्रघण्टा का वाहन सिंह हैं, इनकी मुद्रा युद्ध के लिए तैयार रहने की होती हैं। इनके घण्टे सी भयानक प्रचंड ध्वनि से अत्याचारी दैत्य, दानव, राक्षस व दैव भयभित रहते हैं।



मंत्र:

पिण्डज प्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता। प्रसादं तनुते मह्यं चन्दघण्टेति विश्रुता।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित लाभायचन्द्रार्धकृतशेखराम्।
सिंहारूढादशभुजांचन्द्रघण्टायशस्वनीम्॥
कंचनाभांमणिपुर स्थितांतृतीय दुर्गा त्रिनेत्राम्।
खंग गदा त्रिशूल चापहरंपदमकमण्डलु माला वराभीतकराम्।
पटाम्बरपरिधांनामृदुहास्यांनानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, हार, केयूर किंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वंदना बिबाधाराकातंकपोलांतुंग कुचाम्।
कमनीयांलावण्यांक्षीणकंटिनितम्बनीम्॥

स्त्रोत:-

आपदुद्धारिणी स्वंहिआघाशक्तिः शुभा पराम्। मणिमादिसिदिधदात्रीचन्द्रघण्टेप्रणभाम्यहम्॥
चन्द्रमुखीइष्टदात्री इष्ट मंत्र स्वरूपणीम्। धनदात्रीआनंददात्रीचन्द्रघण्टेप्रणमाम्यहम्॥
नानारूपधारिणीइच्छामयीऐश्वर्यदायनीम्। सौभाग्यारोग्यदायनीचन्द्रघण्टेप्रणमाम्यहम्॥

कवच:-

रहस्यं श्रुणुवक्ष्यामिशैवेशीकमलानने। श्री चन्द्रघण्टास्यकवचंसर्वसिद्धि दायकम्॥ बिना न्यासंबिना विनियोगंबिना शापोद्धारबिना होमं। स्नानंशौचादिकंनास्तिश्रद्धामात्रेणसिद्धिदम्॥ कुशिष्यामकुटिलायवंचकायनिन्दाकायच। न दातव्यंन दातव्यंपदातव्यंकदाचितम्॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने से व्यक्ति का मणिपुर चक्र जाग्रत हो जाता हैं। उपासना से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होनता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया है।

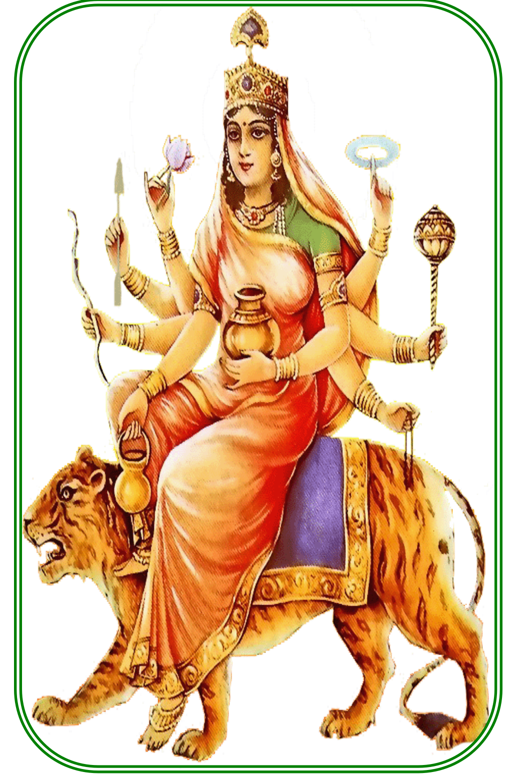
चतुर्थ कूष्माण्डा

✍ चिंतन जोशी

नवरात्र के चतुर्थ दिन मां के कूष्माण्डा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया।

शास्त्रोक्त उल्लेख हैं, कि जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार हि था। उस समय कूष्माण्डा देवी ने अपने मंद सी हास्य से ब्रह्मांड कि उत्पत्ति कि। कूष्माण्डा देवी सूरज के घेरे में निवास करती हैं। इसलिये कूष्माण्डा देवी के अंदर इतनी शक्ति हैं, जो सूरज कि गरमी को सहन कर सकें। कूष्माण्डा देवी को जीवन कि शक्ति प्रदान करता माना गया हैं।

कूष्माण्डा देवी का स्वरुप अपने वाहन सिंह पर सवार हैं, मां अष्ट भुजा वाली हैं। उनके मस्तक पर रत्न ज़डित मुकुट सुशोभित हैं, जिस्से उनका स्वरूप अत्यंय उज्जवल प्रतित होता हैं। उनके हाथमें हाथों में क्रमशः कमण्डल, माला, धनुष-बाण, कमल, पुष्प, कलश, चक्र तथा गदा सुशोभित रहती हैं।



मंत्र:

सुरासम्पूर्णकलशं रूधिराप्लुतमेव च। दधाना हस्तपद्माभ्यां कुष्मांडा शुभदास्तुमे।।

ध्यानः-

वन्दे वांछित कामर्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
सिंहरूढाअष्टभुजा कुष्माण्डायशस्वनीम्॥
भास्वर भानु निभांअनाहत स्थितांचतुर्थ दुर्गा त्रिनेत्राम्।
कमण्डलु चाप, बाण, पदमसुधाकलशचक्र गदा जपवटीधराम्॥
पटाम्बरपरिधानांकमनीयाकृदुहगस्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर हार केयूर किंकिणरत्नकुण्डलमण्डिताम्।
प्रफुल्ल वदनांनारू चिकुकांकांत कपोलांतुंग कूचाम्।
कोलांगीस्मेरमुखींक्षीणकटिनिम्ननाभिनितम्बनीम्॥

स्रोतः-

दुर्गतिनाशिनी त्वंहिदारिद्रादिविनाशिनीम्। जयंदाधनदांकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥
जगन्माता जगतकत्रीजगदाधाररूपणीम्। चराचरेश्वरीकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यसुंदरीत्वंहिदु:ख शोक निवारिणाम्। परमानंदमयीकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥

कवचः-

हसरै मेशिरः पातुकूष्माण्डेभवनाशिनीम्। हसलकरींनेत्रथ,हसरौश्चललाटकम्॥ कौमारी पातुसर्वगात्रेवाराहीउत्तरेतथा। पूर्वे पातुवैष्णवी इन्द्राणी दक्षिणेमम। दिग्दिधसर्वत्रैवकूंबीजंसर्वदावतु॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का अनाहत चक्र जाग्रत हो हैं। मां कूष्माण्डाका के पूजन से सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

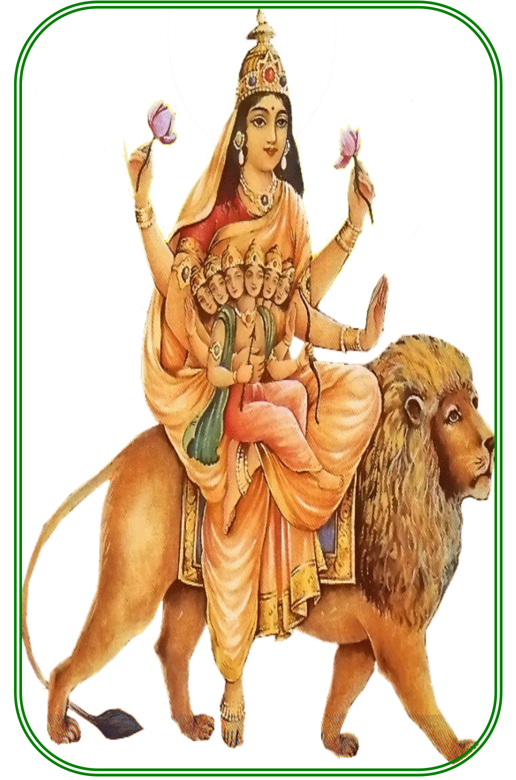
पंचम स्कंदमाता

✍ चिंतन जोशी

नवरात्र के पांचवें दिन मां के स्कंदमाता स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं।स्कंदमाता कुमार अर्थात् कार्तिकेय कि माता होने के कारण, उन्हें स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता हैं। सिंह और मयूर स्कंदमाता के वाहन हैं। देवी स्कंदमाता कमल के आसन पर पद्मासन कि मुद्रा में विराजमान रहती हैं, इसलिए उन्हें पद्मासन देवी के नाम से भी जाना जाता हैं। स्कंदमाता का स्वरुप चार भुजा वाला हैं। उनके दोनों हाथों में कमलदल लिए हुए हैं, उनकी दाहिनी तरफ कि ऊपर वाली भुजा में ब्रह्मस्वरूप स्कन्द्र कुमार को अपनी गोद में लिये हुए हैं। और स्कंदमाता के दाहिने तरफ कि नीचे वाली भुजा वरमुद्रामें हैं। स्कंदमाता यह स्वरुप परम कल्याणकारी मनागया हैं।

मंत्र:

सिंहासानगता नितयं पद्माश्रितकरद्वया। शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।



ध्यान:-

वन्दे वांछित कामर्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्। सिंहारूढाचतुर्भुजास्कन्धमातायशस्वनीम्॥ धवलवर्णाविशुद्ध चक्रस्थितांपंचम दुर्गा त्रिनेत्राम। अभय पदमयुग्म करांदक्षिण उरूपुत्रधरामभजेम्॥ पटाम्बरपरिधानाकृदुहज्ञसयानानालंकारभूषिताम्। मंजीर हार केयूर किंकिणिरत्नकुण्डलधारिणीम।। प्रभुल्लवंदनापल्लवाधरांकांत कपोलांपीन पयोधराम्। कमनीयांलावण्यांजारूत्रिवलींनितम्बनीम्॥

स्तोत्र:-

नमामि स्कन्धमातास्कन्धधारिणीम्। समग्रतत्वसागरमपारपारगहराम्॥
शिप्रभांसमुल्वलांस्फुरच्छशागशेखराम्। ललाटरत्नभास्कराजगतप्रदीप्तभास्कराम्॥
महेन्द्रकश्यपार्चितांसनत्कुमारसंस्तुताम्। सुरासेरेन्द्रवन्दितांयथार्थनिर्मलादभुताम्॥
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितांविशेषतत्वमूचिताम्। नानालंकारभूषितांकृगेन्द्रवाहनाग्रताम्।।
सुशुद्धतत्वातोषणांत्रिवेदमारभषणाम्। सुधार्मिककौपकारिणीसुरेन्द्रवैरिघातिनीम्॥
शुभांपुष्पमालिनीसुवर्णकल्पशाखिनीम्। तमोअन्कारयामिनीशिवस्वभावकामिनीम्॥
सहस्त्रसूर्यराजिकांधनज्जयोग्रकारिकाम्। सुशुद्धकाल कन्दलांसुभृडकृन्दमज्जुलाम्॥
प्रजायिनीप्रजावती नमामिमातरंसतीम्। स्वकर्मधारणेगतिंहरिप्रयच्छपार्वतीम्॥
इनन्तशक्तिकान्तिदांयशोथमुक्तिदाम्। पुन:पुनर्जगद्धितांनमाम्यहंसुरार्चिताम॥
जयेश्वरित्रिलाचनेप्रसीददेवि पाहिमाम्॥

कवच:-

ऐं बीजालिंकादेवी पदयुग्मधरापरा। हृदयंपातुसा देवी कातिकययुता॥ श्रीहीं हुं ऐं देवी पूर्वस्यांपातुसर्वदा। सर्वांग में सदा पातुस्कन्धमातापुत्रप्रदा॥ वाणवाणामृतेहुं फट् बीज समन्विता। उत्तरस्यातथाग्नेचवारूणेनेत्रतेअवतु॥ इन्द्राणी भैरवी चैवासितांगीचसंहारिणी। सर्वदापातुमां देवी चान्यान्यासुहि दिक्षवै॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का विशुद्ध चक्र जाग्रत होता हैं। व्यक्ति कि समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

षष्ठम् कात्यायनी

चिंतन जोशी

नवरात्र के छठें दिन मां के कात्यायनी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महर्षि कात्यायन कि पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नामसे जाना जाता हैं। कात्यायनी माता का जन्म आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को हुवा था, जन्म के पश्चयाता मां कात्यायनी ने शुक्ल सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तक तीन दिन तक कात्यायन ऋषि कि पूजा ग्रहण किथी एवं विजया दशमी को महिषासुर का वध किया था।

देवी कात्यायनी का वर्ण स्वर्ण के समान चमकीला हैं, इस कारण देवी कात्यायनी का स्वरूप अत्यंत ही भव्य एवं दिव्य प्रतित होता हैं। कात्यायनी कि चार भुजाएं हैं। उनेके दाहिनी तरफ का ऊपर वाला हाथ अभय मुद्रामें है, तथा नीचे वाला वरमुद्रामें, बाई तरफ के ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित हैं, नीचे वाले हाथमें तलवार सुशोभित रहती हैं। कात्यायनी देवी अपने वाहन सिंह विराजन होती हैं।



मंत्र:

चंद्रहासोज्जवलकरा शाइलवरवाहना। कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित मनोरथार्थचन्द्रार्धकृतशेखराम्। सिंहारूढचतुर्भुजाकात्यायनी यशस्वनीम्॥
स्वर्णवर्णाआज्ञाचक्रस्थितांषष्ठम्दुर्गा त्रिनेत्राम। वराभीतंकरांषगपदधरांकात्यायनसुतांभजामि॥
पटाम्बरपरिधानांस्मेरमुखींनानालंकारभूषिताम्। मंजीर हार केयुरकिंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्।।
प्रसन्नवंदनापज्जवाधरांकातंकपोलातुगकुचाम्। कमनीयांलावण्यांत्रिवलीविभूषितनिम्न नाभिम्॥

स्तोत्र:-

कंचनाभां कराभयंपदमधरामुकुटोज्वलां। स्मेरमुखीशिवपत्नीकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
पटाम्बरपरिधानांनानालंकारभूषितां। सिंहास्थितांपदमहस्तांकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
परमदंदमयीदेवि परब्रह्म परमात्मा। परमशक्ति,परमभक्तिकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
विश्वकर्ती,विश्वभर्ती,विश्वहर्ती,विश्वप्रीता। विश्वाचितां,विश्वातीताकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
कां बीजा, कां जपानंदकां बीज जप तोषिते। कां कां बीज जपदासक्ताकां कां सन्तुता॥
कांकारहर्षिणीकां धनदाधनमासना। कां बीज जपकारिणीकां बीज तप मानसा॥
कां कारिणी कां मूत्रपूजिताकां बीज धारिणी। कां कीं कूंकै क:ठ:छ:स्वाहारूपणी॥

कवच:-

कात्यायनौमुख पातुकां कां स्वाहास्वरूपणी। ललाटेविजया पातुपातुमालिनी नित्य संदरी॥ कल्याणी हृदयंपातुजया भगमालिनी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का आज्ञा चक्र जाग्रत होता हैं। देवी कात्यायनी के पूजन से रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं।

सप्तम कालरात्रि

✍ चिंतन जोशी

नवरात्र के सातवें दिन मां के कालरात्रि स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। कालरात्रि देवी के शरीर का रंग घने अंधकार कि तरह एकदम काला हैं, सिर के बाल फैलाकर रखने वाली हैं।

कालरात्रि का स्वरुप तीन नेत्र वाला एवं गले में चमकने वाली माला धारण करने वाली हैं। कालरात्रि कि आंखों से अग्नि की वर्षा होती है एवं नासिका के श्वास में अग्नि की भंयकर ज्वालाएं निकलती रहती हैं। कालरात्रि के ऊपर उठे हुए दाहिने हाथ के वरमुद्रासे सभी मनुष्यो को वर प्रदान करती हैं। दाहिनी तरफ का नीचे वाला हाथ अभयमुद्रामें हैं। एक हाथ से शत्रुओं की गर्दन पकडे हुए हैं, दूसरे हाथ में खड्ग-तलवार शस्त्र से शत्रु का नाश करने वाली कालरात्रि विकट रूप में अपने वाहन गर्दभ(गधे) विराजमान हैं।



मंत्रः

एक वेधी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता। लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी।।
वामपदोल्लसल्लोहलताकण्टक भूषणा। वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयंकरी।।

ध्यान:-

करालवदनां घोरांमुक्तकेशींचतुर्भुताम्। कालरात्रिंकरालिंकादिव्यांविद्युत्मालाविभूषिताम्॥
दिव्य लौहवज्रखड्ग वामाघोर्ध्वकराम्बुजाम्। अभयंवरदांचैवदक्षिणोध्वाघ:पाणिकाम्॥
महामेघप्रभांश्यामांतथा चैपगर्दभारूढां। घोरदंष्टाकारालास्यांपीनोन्नतपयोधराम्॥
सुख प्रसन्न वदनास्मेरानसरोरूहाम्। एवं संचियन्तयेत्कालरात्रिंसर्वकामसमृद्धिधदाम्॥

स्तोत्र:-

हीं कालरात्रि श्रींकराली चक्लींकल्याणी कलावती।
कालमाताकलिदर्पध्नीकमदींशकृपन्विता॥
कामबीजजपान्दाकमबीजस्वरूपिणी। कुमतिघनीकुलीनार्तिनशिनीकुल कामिनी॥
क्लींहीं श्रींमंत्रवर्णेनकालकण्टकघातिनी। कृपामयीकृपाधाराकृपापाराकृपागमा॥

कवच:-

ॐ क्लींमें हृदयंपातुपादौश्रींकालरात्रि। ललाटेसततंपातुदुष्टग्रहनिवारिणी॥ रसनांपातुकौमारी भैरवी चक्षुणोर्मम
हौपृष्ठेमहेशानीकर्णोशंकरभामिनी। वर्जितानितुस्थानाभियानिचकवचेनहि। तानिसर्वाणिमें देवी सततंपातुस्तम्भिनी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का भानु चक्र जाग्रत होता हैं। कालरात्रि के पूजन से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यंत भयानक होते हुवे भी सदैव शुभ फल देने वाला होता हैं, इस लिये कालरात्रि को शुभंकरी के नामसे भी जाना जाता हैं। कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार कर ने वाली देवी हैं।

अष्टम महागौरी

✍ चिंतन जोशी

नवरात्र के आठवें दिन मां के महागौरी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी हैं। महागौरी मस्तक पर चन्द्र का मुकुट धारण किये हुए हैं। कान्तिमणि के समान कान्ति वाली देवी जो अपनी चारों भुजाओं में क्रमशः शंख, चक्र, धनुष और बाण धारण किए हुए हैं, उनके कानों में रत्न जडितकुण्डल झिलमिलाते रहते हैं। महागौरीवृषभ के पीठ पर विराजमान हैं। महागौरी गायन एवं संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' माना जाता हैं।

मंत्र:

श्वेते वृषे समरूढ़ा श्वेताम्बराधरा शुचिः। महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा।।



ध्यान:-

वन्दे वांछित कामार्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
सिंहारूढाचतुर्भुजामहागौरीयशस्वीनीम्॥
पुणेन्दुनिभांगौरी सोमवक्रस्थितांअष्टम दुर्गा त्रिनेत्रम।
वराभीतिकरांत्रिशूल ढमरूधरांमहागौरींभजेम्॥
पटाम्बरपरिधानामृदुहास्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, कार, केयूर, किंकिणिरत्न कुण्डल मण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वदनांपल्लवाधरांकांत कपोलांचैवोक्यमोहनीम्।
कमनीयांलावण्यांमृणालांचंदन गन्ध लिप्ताम्॥

स्तोत्र:-

सर्वसंकट हंत्रीत्वंहिधन ऐश्वर्य प्रदायनीम्।
ज्ञानदाचतुर्वेदमयी,महागौरीप्रणमाम्यहम्॥
सुख शांति दात्री, धन धान्य प्रदायनीम्।
डमरूवाघप्रिया अघा महागौरीप्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यमंगलात्वंहितापत्रयप्रणमाम्यहम्।
वरदाचैतन्यमयीमहागौरीप्रणमाम्यहम्॥

कवच:-

ओंकारः पातुशीर्षोमां, हीं बीजंमां हृदयो। क्लींबीजंसदापातुनभोगृहोचपादयो॥ ललाट कर्णो,हूं, बीजंपात महागौरीमां नेत्र घ्राणों। कपोल चिबुकोफट् पातुस्वाहा मां सर्ववदनो॥

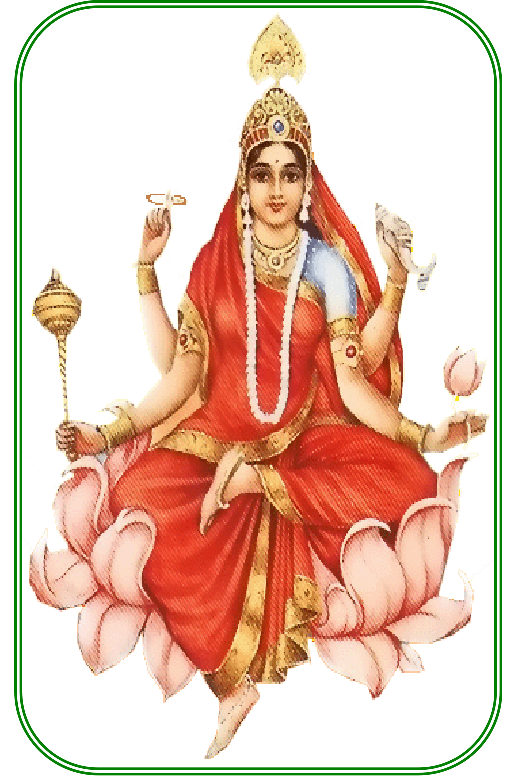
मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का सोमचक्र जाग्रत होता हैं। महागौरी के पूजन से व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्ति दिलाने वाली देवी महागौरी हैं।

नवम् सिद्धिदात्री

✍ चिंतन जोशी

नवरात्र के नौवें दिन मां के सिद्धिदात्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं।
देवी सिद्धिदात्री का स्वरूप कमल आसन पर विराजित, चार भुजा वाला, दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा, बाई तरफ से नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित रहते हैं।

मंत्र : सिद्धगंधर्वयक्षाद्यैरसुरैररमरैरपि। सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।



ध्यान:-

वन्दे वांछितमनरोरार्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
कमलस्थिताचतुर्भुजासिद्धि यशस्वनीम्॥
स्वर्णावर्णानिर्वाणचक्रस्थितानवम् दुर्गा त्रिनेत्राम।
शंख, चक्र, गदा पदमधरा सिद्धिदात्रीभजेम्॥
पटाम्बरपरिधानांसुहास्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, हार केयूर, किंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वदनापल्लवाधराकांत कपोलापीनपयोधराम्।
कमनीयांलावण्यांक्षीणकटिंनिम्ननाभिंनितम्बनीम्॥

स्तोत्र:-

कंचनाभा शंखचक्रगदामधरामुकुटोज्वलां। स्मेरमुखीशिवपत्नीसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
पटाम्बरपरिधानांनानालंकारभूषितां। नलिनस्थितांपलिनाक्षींसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
परमानंदमयीदेवि परब्रह्म परमात्मा। परमशक्ति,परमभक्तिसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
विश्वकर्तीविश्वभर्तीविश्वहर्तीविश्वप्रीता। विश्वर्चिताविश्वतीतासिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
भुक्तिमुक्तिकारणीभक्तकष्टनिवारिणी। भवसागर तारिणी सिद्धिदात्रीनमोअस्तुते।।
धर्मार्थकामप्रदायिनीमहामोह विनाशिनी। मोक्षदायिनीसिद्धिदात्रीसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥

कवच:-

ओंकार: पातुशीर्षोमां, ऐं बीजंमां हृदयो। हीं बीजंसदापातुनभोगृहोचपादयो॥ ललाट कर्णोश्रींबीजंपातुक्लींबीजंमां नेत्र घ्राणो। कपोल चिबुकोहसौ:पातुजगत्प्रसूत्यैमां सर्व वदनो॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का निर्वाण चक्र जाग्रत होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

शारदीय नवरात्र व्रत से सुख-समृद्धि दायक हैं

चिंतन जोशी

नवरात्र को शक्ति की उपासना का महापर्व माना गया हैं। मार्कण्डेयपुराण के अनुशार देवी माहात्म्य में स्वयं मां जगदम्बा का वचन हैं-।

शरत्काले महापूजा क्रियतेया चवार्षिकी।

तस्यांममैतन्माहात्म्यंश्रुत्वाभक्तिसमन्वित: ॥

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोधनधान्यसुतान्वित: ।
मनुष्योमत्प्रसादेनभविष्यतिन संशय: ॥

अर्थातः शरद ऋतु के नवरात्रमें जब मेरी वार्षिक महापूजा होती हैं, उस काल में जो मनुष्य मेरे माहात्म्य (दुर्गासप्तशती) को भक्तिपूर्वकसुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त होकर धन-धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न हो जायेगा।



नवरात्र में दुर्गासप्तशती को पढने या सुनने से देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। सप्तशती का पाठ उसकी मूल भाषा संस्कृत में करने पर ही पूर्ण प्रभावी होता हैं।

व्यक्ति को श्रीदुर्गासप्तशती को भगवती दुर्गा का ही स्वरूप समझना चाहिए। पाठ करने से पूर्व श्रीदुर्गासप्तशती कि पुस्तक का इस मंत्र से पंचोपचारपूजन करें-

नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततंनम: ।
नम: प्रकृत्यैभद्रायैनियता: प्रणता: स्मताम् ॥

जो व्यक्ति दुर्गासप्तशतीके मूल संस्कृत में पाठ करने में असमर्थ हों तो उस व्यक्ति को सप्तश्लोकी दुर्गा को पढने से लाभ प्राप्त होता हैं। क्योकि सात श्लोकों वाले इस स्तोत्र में श्रीदुर्गासप्तशती का सार समाया हुवा हैं।

जो व्यक्ति सप्तश्लोकी दुर्गा का भी न कर सके वह केवल नर्वाण मंत्र का अधिकाधिक जप करें।

देवी के पूजन के समय इस मंत्र का जप करे।

जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधानमोऽस्तुते॥

देवी से प्रार्थना करें-

विधेहिदेवि कल्याणंविधेहिपरमां - श्रियम्।रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि॥

अर्थातः हे देवि! आप मेरा कल्याण करो। मुझे श्रेष्ठ सम्पत्ति प्रदान करो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध इत्यादि शत्रुओं का नाश करो।

विद्वानो के मतानुशार सम्पूर्ण नवरात्रव्रत का पालन करने में जो लोगों असमर्थ हो वह नवरात्र के सात रात्री,पांच रात्री, दों रात्री और एक रात्री का व्रत करके भी विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नवरात्र में नवदुर्गा की उपासना करने से नवग्रहों का प्रकोप स्वतः शांत हो जाता हैं।

नवरात्र व्रत की सरल विधि?

स्वस्तिक.ऐन.जोशी

नव दिनों तक चलने वाले इस पर्व पर हम व्रत रखकर मां के नौ अलग-अलग रूप की पूजा की जाती हैं। इस दौरान घर में किया जाने वाला विधिवत हवन भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभप्रद हैं। हवन से आत्मिक शांति और वातावरण कि शुद्धि के अलावा घर नकारात्मक शक्तियों का नाश हो कर सकारात्मक शक्तियो का प्रवेश होता हैं।

नवरात्र व्रत

नवरात्र में नव रात्र से लेकर सात रात्री,पांच रात्री, दों रात्री और एक रात्री व्रत करने का भी विधान हैं।
नवरात्र व्रत के धार्मिक महत्व के अलावा वैज्ञानिक महत्व हैं, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभदायक होता हैं। व्रत करने से शरीर में चुस्ती-फुर्ती बनी रहती हैं। रोजाना कार्य करने वाले पाचन तंत्र को भी व्रत के दिन आराम मिलता हैं। बच्चे, बुजुर्ग, बीमार, गर्भवती महिला को नवरात्र व्रत का नहीं रखना चाहिए।

नवरात्र व्रत से संबंधित उपयोगी सुझाव

- व्रत के दौरान अधिक समय मौन धारण करें।
- व्रत के शुरुआत में भूख काफी लगती हैं। ऐसे में नींबू पानी पिया जा सकता है। इससे भूख को नियंत्रित रखने में मदद मिलेगी।
- जहा तक संभव हो निर्जला उपवास न रखें। इससे शरीर में पानी कि कमी हो जाती हैं और अपशिष्ट पदार्थ शरीर के बाहर नहीं आ पाते। इससे पेट में जलन, कब्ज, संक्रमण, पेशाब में जलन जैसी कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं।
- एक साथ खूब सारा पानी पीने के बजाए दिन में कई बार नींबू पानी पिएं।
- ज्यादातर लोगो को उपवास में अक्सर कब्ज की शिकायत हो जाती हैं। इसलिए व्रत शुरू करने के पहले त्रिफला, आंवला, पालक का सूप या करेले के रस इत्यादि पदार्थो का सेवन करें। इससे पेट साफ रहता है।
- व्रत के दौरान चाय, काफी का सेवन काफी बढ़ जाता है। इस पर नियंत्रण रखें।

व्रत के दौरान कौनसे खाद्य पदार्थ ग्रहण करें?

- व्रत में अन्न का सेवन वर्जित हैं। जिस कारण शरीर में ऊर्जा की कमी हो जाती हैं।
- अनाज कि जगह फलों व सब्जियों का सेवन किया जा सकता हैं। इससे शरीर को जरुरी ऊर्जा मिलती हैं।
- सुबह के समय आलू को फ्राई करके खाया जा सकता हैं। आलू में कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में होता है। इस लिए आलू खाने से शरीर को ताकत मिलती है।
- सुबह एक गिलास दूध पिलें। दोपहर के समय फल या जूस लें। शाम को चाय पी सकते हैं।

कई लोग व्रत में एक बार ही भोजन करते हैं। ऐसे में एक निश्चित अंतराल पर फल खा सकते हैं। रात के खाने में सिंघाड़े के आटे से बने पकवान खा सकते हैं।

देवी कृपा से मनोवांच्छित कार्यो सिद्धि

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

देवी भागवत के आठवें स्कंध में देवी उपासना का विस्तार से वर्णन है। देवी का पूजन-अर्चन-उपासना-साधना इत्यादि के पश्चयात दान देने पर मनुष्य के लिये लोक और परलोक दोनों सुख देने वाले होते हैं।

- प्रतिपदा तिथि के दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके नैवेद्य के रूप में देवी को गाय का घृत (घी) अर्पण करना चाहिए। मां को चरणों चढ़ाये गये घृत को ब्राम्हणों में बांटने से रोगों से मुक्ति मिलती है।
- द्वितीया तिथि के दिन देवी को चीनी का भोग लगाकर दान करना चाहिए। चीनी का भोग लागाने से व्यक्ति दीर्घजीवी होता हैं।
- तृतीया तिथि के दिन देवी को दूध का भोग लगाकर दान करना चाहिए। दूध का भोग लागाने से व्यक्ति को दुखों से मुक्ति मिलती हैं।
- चतुर्थी तिथि के दिन देवी को मालपुआ भोग लगाकर दान करना चाहिए। मालपुए का भोग लागाने से व्यक्ति कि विपत्ति का नाश होता हैं।
- पंचमी तिथि के दिन देवी को केले का भोग लगाकर दान करना चाहिए। केले का भोग लागाने से व्यक्ति कि बुद्धि, विवेक का विकास होता हैं। व्यक्ति के परिवारीकसुख समृद्धि में वृद्धि होती हैं।
- षष्ठी तिथि के दिन देवी को मधु (शहद, महु, मध) का भोग लगाकर दान करना चाहिए। मधु का भोग लागाने से व्यक्ति को सुंदर स्वरूप कि प्राप्ति होती हैं।
- सप्तमी तिथि के दिन देवी को गुड़ का भोग लगाकर दान करना चाहिए। गुड़ का भोग लागाने से व्यक्ति के समस्त शोक दूर होते हैं।
- अष्टमी तिथि के दिन देवी को श्रीफल (नारियल) का भोग लगाकर दान करना चाहिए। गुड़ का भोग लागाने से व्यक्ति के संताप दूर होते हैं।
- नवमी तिथि के दिन देवी को धान के लावे का भोग लगाकर दान करना चाहिए। धान के लावे का भोग लागाने से व्यक्ति के लोक और परलोक का सुख प्राप्त होता हैं।

सरल विधि-विधान से शारदीय नवरात्र व्रत उपासना

✍ चिंतन जोशी

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, मंगलवार, 16 अक्टूबर को शारदीय नवरात्र आरंभ हो रहे हैं। नवरात्र में मां दुर्गा देवी का आह्वान, स्थापना व पूजन का समय प्रात:काल होता हैं। इसीलिए द्विस्वभाव कन्या लग्न में घट स्थापना का समय से संबंधित जानकारी इस अंक में उपलब्ध हैं। चर लग्न के चौघड़िए अथवा अभिजित काल में भी घट स्थापना की जा सकती है। शारदीय नवरात्र देवी उपासना के लिए अधिक अति उत्तम माना गया है।

जो भक्त नवरात्र के दौरान देवि का शास्त्रोक्त विधि-विधान से पूजन करना चाहें, उन्हें नवरात्र के एक दिन पूर्व सभी पूजन सामग्री को एकत्रित कर लेना चाहिये।

जिस स्थान पर मां भगवती को स्थापित करना हो वहां मंडप बनाने के लिये उस स्थान को समतल बनाले, उस स्थान या भूमिको मिट्टी या गाय के गोबर से लीपकर भूमि का शुद्धिकरण कर लें।

विद्वानो के मत अनुशार प्रतिमा स्थापित करने हेतु मंडप नौ हाथ लंबा और सात हाथ चौड़ा बनाने का शास्त्रोक्त विधान है। मंडप बनाकर उसे विभिन्न शृंगार सामग्री से सुसज्जित करें। मां भगवती की प्रतिमा स्थापित करने के लिए मंडप के मध्यम में चार हाथ लंबी और एक हाथ ऊंची वेदी बनालें। उस वेदी पर रेशमी लाल वस्त्र बिछाले।

देवी प्रतिमा हेतु मां भगवती की प्रतिमा चार भुजा वाली एवं सिंह पर सवारी किये हुए हो वैसी ही प्रतिमा स्थापित करना उत्तम होता हैं। इस के पीछे का आध्यात्मिक सिद्धांत होता हैं की भक्त की चारों दिशाओं से सुरक्षा हो सके और उसे समस्त प्रकार के सुख-समृद्धि व शांति प्राप्त हो।

कलश स्थापीत करने हेतु मंत्र उच्चारण करते हुए तीर्थ स्थलों के जल का आह्वान कर कलश की स्थापना करनी चाहिये।हवन वेदी त्रिकोण बनाएं और उसपर जुआरे उगाएं। पूजन सामग्री: चंदन, अगरू, कपूर, कमल, अशोक, सुगंधित पुष्प।

नवरात्र व्रत:

नवरात्र का व्रत सभी वर्ग के भक्तो के लिए उत्तम होता है। यदि कोई भक्त नौ दिन तक व्रत न रख सकें तो दो-रात्री के व्रत अवश्य करने चाहिये अर्थात पहला और अंतिम नवरात्र का व्रत करना उपयुक्त होता हैं।

सरल पूजन विधि: सर्वप्रथम भक्त श्री गणेशजी का आह्वान करने के बाद अपनी कुलदेवी का पूजन करना चाहिये। उसके बाद माता भगवती का पूजन अपने कुल की परंपरा के अनुसार करना चाहिये।

नवरात्र में दुर्गा सप्तशती का पाठ पूर्ण पाठ करना अति उत्तम होता हैं।

आश्विन नवरात्रि घट स्थापना मुहूर्त, विधि-विधान (16-अक्टूबर-2012)

स्वस्तिक.ऐन.जोशी

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा अर्थात नवरात्री का पहला दिन। इसी दिन से ही आश्विनी नवरात्र का प्रारंभ होता हैं। जो अश्विन शुक्ल नवमी को समाप्त होते हैं, इन नौ दिनों देवि दुर्गा की विशेष आराधना करने का विधान हमारे शास्त्रो में बताया गया हैं। परंतु इस वर्ष 2012 तृतिया तिथी का क्षय होने के कारण नवरात्र नौ दिन की जगह आठ दिनो के होंगे।

पारंपरिक पद्धति के अनुशास नवरात्रि के पहले दिन घट अर्थात कलश की स्थापना करने का विधान हैं। इस कलश में ज्वारे(अर्थात जौ और गेहूं) बोया जाता है।

घट स्थापनकी शास्त्रोक्त विधि इस प्रकार हैं।

घट स्थापना आश्विन प्रतिपदा के दिन कि जाती हैं।

घट स्थापना हेतु चित्रा नक्षत्र को वर्जित माना गया हैं। (चित्रा नक्षत्र 16-अक्टूबर-2012 को प्रातः 06:45:28 बजे तक रहेगा।) घट स्थापना में चित्रा नक्षत्र को निषेध माना गया हैं। अतः घट स्थापना इससे पश्चयात करना शुभ होता हैं।

घट स्थापना हेतु सबसे शुभ अभिजित मुहुर्त माना गया हैं। जो 16-अक्टूबर-2012 को सुबह 11:30 से दोपहर 12:42 बजे के बीच है।



विद्वनो के मत से इस वर्ष शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होने वाले शारदीय नवरात्र में सूर्योदयी नक्षत्र चित्रा रहेगा जो प्रातः **06:45:28** बजे समाप्त हो जायेगा और उसके पश्चयात विशाखा नक्षत्र रहेगा। विशाखा नक्षत्र को पूजन हेतु उत्तम माना जाता हैं। हैं। इस लिये सूर्योदय के पश्चयात **06:45:28** बजे के बाद से ही कलश (घट) की स्थापना करना शुभदायक रहेगा।

इस वर्ष प्रतिपदा तिथि दोपहर 02:17:56 बजे तक रहने के कारण घट स्थापना इस समय से पूर्व करना उत्तम रहेगा। लेकिन शास्त्रोक्त विधान से प्रतिपदा तिथि सोमवार 15 अक्टूबर-2012 को संध्या 17:32:20 से प्रारंभ होकर मंगलवार 16-अक्टूबर-2012 को दोपहर 02:17:56 बजे तक रहने से प्रतिपदा तिथि सूर्योदय कालिन तिथि होने से संपूर्ण दिन प्रतिपदा माना जायेगा।

घट स्थापना के शुभ मुहुर्त सुबह 9.30 से 11 बजे, सुबह 11.30 से दोपहर 12.42 तक अभिजित मुहुर्त, सुबह 10.59 बजे से दोपहर 1.05 बजे तक वृष्चिक्र लग्न मुहुर्त, दोपहर 2.52 से शाम 4.23 तक कुंभ लग्न मुहुर्त और 7.28 बजे से रात्रि 9.24 तक वृषभ लग्न मुर्हुत रहेगा। कुछ जानकार विद्वानो का मत हैं की नवरात्र स्वयं अपने आप में स्वयं सिद्ध मुहुर्त होने के कारण इस तिथि में व्याप्त समस्त दोष स्वतः नष्ट हो जाते हैं इस लिए घट स्थापना प्रतिपदा के दिन किसी भी समय कर सकते हैं।

यदि ऐसे योग बन रहे हो, तो घट स्थापना दोपहर में अभिजित मुहूर्त या अन्य शुभ मुहूर्त में करना उत्तम रहता हैं।

कलश स्थापना हेतु अन्य शुभ मुहूर्त

- लाभ मुहूर्त सुबह १०:30 से 12 बजे तक
- अमृत मुहूर्त दिन 12.00 से 01.30 बजे तक
- शुभ मुहूर्त सुबह 03.00 से 04.30 बजे तक
- अभिजित मुहुर्त सुबह 11.30 से दोपहर 12.42 बजे तक
- वृष्चिक लग्न सुबह 10.59 बजे से दोपहर 1.05 बजेतक
- कुंभ लग्न दोपहर 2.52 से शाम 4.23 बजे तक
- वृषभ लग्न 7.28 बजे से रात्रि 9.24 बजे तक

के मुहूर्त घट स्थापना का श्रेष्ठ मुहूर्त रहेंगे।

घट स्थापना हेतु सर्वप्रथम स्नान इत्यादि के पश्चयात गाय के गोबर से पूजा स्थल का लेपन करना चाहिए। घट स्थापना हेतु शुद्ध मिट्टी से वेदी का निर्माण करना चाहिए, फिर उसमें जौ और गेहूं बोएं तथा उस पर अपनी इच्छा के अनुसार मिट्टी, तांबे, चांदी या सोने का कलश स्थापित करना चाहिए।

यदि पूर्ण विधि-विधान से घट स्थापना करना हो तो पंचांग पूजन (अर्थात गणेश-अंबिका, वरुण, षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, नवग्रह आदि देवों का पूजन) तथा पुण्याहवाचन (मंत्रोंच्चार) विद्वान ब्राह्मण द्वारा कराएं अथवा अमर्थता हो, तो स्वयं करें।

पश्चयात देवी की मूर्ति स्थापित करें तथा देवी प्रतिमाका षोडशोपचारपूर्वक पूजन करें। इसके बाद श्रीदुर्गासप्तशती का संपुट अथवा साधारण पाठ करना चाहिए। पाठ की पूर्णाहुति के दिन दशांश हवन अथवा दशांश पाठ करना चाहिए।

घट स्थापना के साथ दीपक की स्थापना भी की जाती है। पूजा के समय घी का दीपक जलाएं तथा उसका गंध, चावल, व पुष्प से पूजन करना चाहिए।

पूजन के समय इस मंत्र का जप करें-

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं ह्यन्धकारनिवारक।

इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय।।

नोटः उपरोक्त वर्णित मुहूर्त को सूर्योदय कालिन तिथि या समय का निरधारण नई दिल्ली के अक्षांश रेखांश के अनुशार आधुनिक पद्धति से किया गया हैं। इस विषय में विभिन्न मत एवं सूर्योदय ज्ञात करने का तरीका भिन्न होने के कारण सूर्योदय समय का निरधारण भिन्न हो सकता हैं। सूर्योदय समय का निरधारण स्थानिय सूर्योदय के अनुशार हि करना उचित होगा।

इस लिए किसी भी मुहूर्त का चयन करने से पूर्व किसी विद्वान व जानकार से इस विषय में सलाह विमर्श करना उचित रहेगा।

नवरात्र स्पेशल घट स्थापना विधि

✍ स्वस्तिक.ऐन.जोशी, विजय ठाकुर

दुर्गा पूजन सामग्री-

कलावा (मौली, रक्षा सूत्र), रोली, सिंदूर, १ श्रीफल (नारियल), अक्षत (बिना टूटे चावल), लाल वस्त्र, सगंधित फूल- माला, 5 पान के पत्ते , 5 सुपारी, लौंग, कलश, कलश हेतु आम के पल्लव, लकड़ी की चौकी, समिधा, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, कमल गट्टे, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, शर्करा(चीनी)), फल, मिठाई, ऊन का आसन, साबूत हल्दी, अगरबत्ती, इत्र, घी, दीपक, आरती की थाली, कुशा, रक्त चंदन, श्वेत चंदन (श्रीखंड चंदन), जौ, तिल, सुवर्ण गणेश व दुर्गा की प्रतिमा 2 (सुवर्ण उप्लब्ध न हो तो पीतल, कई लोग मिट्टी की प्रतिमा से पूजन करते हैं।), आभूषण व श्रृंगार सामग्री, पंचमेवा, पंचमिठाई, रूई इत्यादि,

दुर्गा पूजन से पूर्व चौकी को शुद्ध करके श्रृंगार करके चौकी सजालें।

तत पश्चयात लाल कपडे का आसन बिछाकर गणपति एवं दुर्गा माता की प्रतिमाके सम्मुख बैठ जाए।

तत पश्चयात आसन को इस मंत्र से शुद्धि करण करें:

ॐ अपवित्र : पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने ऊपर तथा आसन पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छींटें लगायें।

तत पश्चयात आचमन करें:

ॐ केशवाय नमः
ॐ नारायण नमः
ॐ मध्वाये नमः
ॐ गोविन्दाय नमः

तत पश्चयात हाथ धोकर, पुनः आसन शुद्धि मंत्र का उच्चारण करें:-

ॐ पृथ्वी त्वयाधृता लोका देवि त्यवं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शुद्धि करण और आचमन के पश्चयात चंदन लगाना चाहिए।

अनामिका उंगली से श्रीखंड चंदन लगाते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें:-

चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।

पंचोपचार पूजन करने के पश्चयात संकल्प करना चाहिएं। संकल्प में पुष्प, फल, सुपारी, पान, चांदी का सिक्का, श्रीफल (नारियल), मिठाई, मेवा, आदि सभी सामग्री थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकर संकल्प मंत्र का उच्चारण करें:-

॥ संकल्प वाक्य॥

हरि ॐ तत्सत । नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय श्री मद भगवते महा पुरुषस्य विष्णो राज्ञाया प्रवर्त मान स्याद्य ब्राह्मणों द्वितीय प्रहरार्द्ध श्रीश्वेत्वाराह काले वै वस्तव -मन्वन्तरे अश्त्विश्तित्मे कल्युगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्ड भारत वर्षे आर्या वर्तान्तर्गत देशैक पुण्य क्षेत्र षष्टि सम्वस्ताराणां मध्ये 'अमुक ' नामिन संवत्सरे 'अमुक ' अयने 'अमुक 'त्रृतौ .अमुक मासे 'अमुक पक्षे .अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे ,अमुक योग 'अमुक 'वासरे 'अमुक राशिस्ये सूर्ये, भौमें, बुधे, गुरौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुण विशिष्टाया तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्ने 'अमुक 'नाम्नि शर्मा (वर्मा इत्यादि) सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री दुर्गा पूजनं च अहं करिष्ये। तत्पूर्वांगंत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथा मिलितोपचारे गणपति पूजनं करिष्ये।

विशेष सुझाव: उक्त संकल्प वाक्य में जहाँ-जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ क्रमशः वर्तमान संवत्सर, अयन, रुतु, मॉस, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, सूर्यादि की राशी तथा अपने गोत्र, अपनी राशी एवं अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए।

गणपति पूजन:-

भारतीय शास्त्रोक्त परंपरा के अनुशार किसी भी पूजा में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा की जाती हैं।

हाथ में पुष्प लेकर भगवान गणेश का ध्यान करें।

गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।

तत पश्चयात आवाहन करें: आह्वान हेतु हाथ में अक्षत लेकर इस मंत्र का उच्चारण करें:-

आगच्छ देव देवेश, गौरीपुत्र विनायक।
तवपूजा करोमद्य, अत्रतिष्ठ परमेश्वर॥

ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः इहागच्छ इह तिष्ठ उच्चारण करते हुए अक्षत को गणेश जी पर चढ़ा दें।

निम्न मंत्रो का उच्चारण करते हुवे संबंधित वस्तु श्री गणेश जी को अर्पित करें।

हाथ में फूल लेकर ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः आसनं समर्पयामि,

तत पश्चयात अर्घा में जल लेकर बोलें ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि,

तत पश्चयात आचमनीय-स्नानीयं ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः आचमनीयं समर्पयामि,

तत पश्चयात वस्त्र लेकर ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः वस्त्रं समर्पयामि,

तत पश्चयात यज्ञोपवीत-ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि,

तत पश्चयात पुनराचमनीयम्, ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः रक्त चंदन लगाएं: इदम रक्त चंदनम् लेपनम् ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः,

तत पश्चयात प्रकार श्रीखंड चंदन बोलकर श्रीखंड चंदन लगाएं,

तत पश्चयात सिन्दूर चढ़ाएं "इदं सिन्दूराभरणं लेपनम् ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः,

तत पश्चयात दूर्वा और विल्बपत्र भी गणेश जी को चढ़ाएं।

पूजन के पश्चयात गणेश जी को भोग अर्पित करें: ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः इदं नानाविधि नैवेद्यानि समर्पयामि, मिष्टान अर्पित करने के लिए मंत्र- शर्करा खण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च, आहारो भक्ष्य भोज्यं गृह्यतां गणनायक।

प्रसाद अर्पित करने के पश्चयात आचमन करायें, इदं आचमनीयं ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः, तत पश्चयात पान सुपारी चढ़ायें- ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि, तत पश्चयात फल लेकर गणपति पर चढ़ाएं ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः फलं समर्पयामि, तत पश्चयात दक्षिणा रखते हुवे इस मंत्र का उच्चारण करें ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, तत पश्चयात विषम संख्या (1,3,5,7,9,11,21 आदि) में दीपक जलाकर निराजन अर्थात आरति करें और भगवान की आरती गायें। तत पश्चयात हाथ में फूल लेकर गणेश जी को अर्पित करें, तत पश्चयात तीन प्रदक्षिणा करें।

इसी प्रकार से अन्य सभी देवताओं का पूजन करें। गणेश के स्थान जिस देवता की पूजा करनी हो पर उस देवता के नाम का उच्चारण करें।

कलश पूजन:-

घड़े अथवा लोटे पर कलावा (मौलि) बांधकर कलश के ऊपर आम का पल्लव रखें। कलश में सुपारी, अक्षत, मुद्रा रखें, दूर्वा, नारियल पर वस्त्र लपेट कर कलश पर स्थापित करें,हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर वरूण देवता का कलश में आवाहन करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहर्विभि:। अहेडमानोवरुणेह बोध्युरुशं समानऽआयु: प्रमोषी:। अस्मिन कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुध सशक्तिकमावाहयामि, ॐ भूर्भुव: स्व: भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि।

तत पश्चयात जिस प्रकार गणेश जी की पूजा की है उसी प्रकार वरूण देवता की विधिवत पूजा करें।

दुर्गा पूजन:

दुर्गा पूजन हेतु सबसे पहले माता दुर्गा का ध्यान करें:

सर्व मंगल मागंल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्येत्रयम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥

तत पश्चयात आवाहन करें:

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:।
दुर्गादेवीमावाहयामि॥

तत पश्चयात फूल अर्पित करते हुए उच्चारण करें। श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आसानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

तत पश्चयात अर्घ्य दें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। हस्तयो: अर्घ्यं समर्पयामि॥

तत पश्चयात आचमन अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आचमनं समर्पयामि॥

तत पश्चयात स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। स्नानार्थं जलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात स्नानांग आचमन- स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात पंचामृत स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। पंचामृतस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात गन्धोदक-स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात शुद्धोदक स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात आचमन दें- शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात वस्त्र अर्पित करें-- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। वस्त्रं समर्पयामि ॥ वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात सौभाग्य सूत्र अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात चन्दन अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। चन्दनं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात हरिद्राचूर्ण अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। हरिद्रां समर्पयामि ॥

तत पश्चयात कुंकुम अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। कुंकुम समर्पयामि ॥

तत पश्चयात सिन्दूर अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात कज्जल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। कज्जलं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात दूर्वाकुंर अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दूर्वाकुंरानि समर्पयामि ॥

तत पश्चयात आभूषण अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आभूषणानि समर्पयामि ॥

तत पश्चयात पुष्पमाला अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। पुष्पमाला समर्पयामि ॥

तत पश्चयात धूप लगाएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। धूपमाघ्रापयामि॥

तत पश्चयात दीप जलाएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दीपं दर्शयामि॥

तत पश्चयात नैवेद्य अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। नैवेद्यं निवेदयामि॥

तत पश्चयात जल अर्पित करें- नैवेद्यान्ते त्रिबारं आचमनीय जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात फल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। फलानि समर्पयामि॥

तत पश्चयात ताम्बूल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात दक्षिणा दें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दक्षिणां समर्पयामि॥

तत पश्चयात आरती करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आरार्तिकं समर्पयामि॥

पूजन में हुई त्रुटि के निवारण हेतु क्षमा प्राथना करें।

क्षमा प्रार्थना

न मंत्रं नोयंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥1॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत्क्षतव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥2॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥3॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापित्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदप कुमाता न भवति ॥4॥
परित्यक्तादेवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शरण्॥5॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥6॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7॥
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभव वांछापिचनमे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिवशिव भवानीति जपतः ॥8॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिंतन परैर्नकृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥9॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति॥10॥
जगदंब विचित्रमत्र किं परिपूर्ण करुणास्ति चिन्मयि ।
अपराधपरंपरावृतं नहि मातासमुपेक्षते सुतम् ॥11 ॥
मत्समः पातकी नास्तिपापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवियथायोग्यं तथा कुरु ॥12॥

नवार्ण मंत्र द्वारा नवग्रह कष्ट निवारण

✍ चिंतन जोशी

दुर्गा पूजा शक्ति उपासना का महापर्व हैं। शारदीय नवरात्र के दिनो में ग्रहों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए मां दुर्गा की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। शक्ति एवं भक्ति के साथ सांसारिक सुखों को देने के लिए वर्तमान समय में यदि कोई देवता है। तो वह एक मात्र देवी दुर्गा ही हैं। सामान्यतया समस्त देवी-देवता ही पूजा का अच्छा परिणाम देते हैं।

हमारे धर्म शास्त्रों के अनुशार:

'कलौ चण्डी विनायकौ'

अर्थातः कलियुग में दुर्गा एवं गणेश हि पूर्ण एवं तत्काल फल देने वाले हैं।

तांत्रिक ग्रन्थों के अनुशार:

नौरत्नचण्डीखेटाश्व जाता निधिनाह्ढवाप्तोह्ढवगुण्ठ देव्या।

अर्थातः नौ रत्न, नौ ग्रहों कि पीड़ा से मुक्ति, नौ निधि कि प्राप्ति, नौ दुर्गा के अनुष्ठान से सर्वथा सम्भव है। इसका तत्पर्य हैं कि नवदुर्गा नवग्रहों के लिए ही प्रवर्तित हुईं हैं।

ज्योतिष कि द्रष्टी में नवग्रह संबंधित पीड़ा एवं दैवी आपदाओं से मुक्ति प्राप्त करने का सरल साधन देवी कि आराधना हैं। यदि जन्म कुंडली में चंडाल योग, दरिद्र योग, ग्रहण योग, विष योग, कालसर्प एवं मांगलिक दोष, एवं अन्यान्य योग अथवा दोष एसे हैं, जिस्से व्यक्ति जीवन भर अथक परिश्रम करने के उपरांत भी दुःख भोगता रहता हैं। जिसकी शांति संभवतः अन्य किसी पूजा, अर्चना, साधना, रत्न एवं अन्य उपायो से सरलता से नहीं होती हैं। अथवा पूर्ण ग्रह पीडाए शांत नहीं हो पाती हैं। एसी स्थिती में आदि शक्ति मां भगवती दुर्गा के नव रुपो कि आराधना से व्यक्ति सरलता से विशेष लाभ प्राप्त कर सकता हैं।

भगवान राम ने भी इसके प्रभाव से प्रभावित होकर अपनी दश अथवा आठ नहीं बल्कि नवधा भक्ति का ही उपदेश दिया है। अनादि काल से कि देवता, दानव,



असुरों से लेकर मनुष्यों में किसी भी प्रकारका संकट होने पर

समस्त लोक में मां दुर्गा कि अराधना करने का प्रचलन चला आरहा हैं। क्योकि मां दुर्गा ने सभी देव-दानव-असुर-मनुष्य सभी प्राणी मात्र का उद्धार किया हैं।

इसलिये किसी भी प्रकार के जादू-टोना, रोग, भय, भूत, पिशाच्च, डाकिनी, शाकिनी आदि से मुक्ति कि प्राप्ति के लिये मां दुर्गा कि विधि-विधान से पूजा-अर्चना सर्वदा फलदायक रहीं है।

दुर्गा दुखों का नाश करने वाली हैं। इसलिए नवरात्रि के दिनो में जब उनकी पूजा पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से कि जाती हैं, तो मां दुर्गा कि प्रमुख नौ शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं, जिससे नवों ग्रहों को नियंत्रित करती हैं, जिससे ग्रहों से प्राप्त होने वाले अनिष्ट प्रभाव से रक्षा होकर ग्रह जनीत पीडाएं शांत हो जाती हैं।

दुर्गा कि नव शक्ति को जाग्रत करने हेतु शास्त्रों में नवार्ण मंत्र का जाप करने का विधान हैं।

नव का अर्थात नौ एवं अर्ण का अर्थात अक्षर होता हैं। (नव+अर्ण= नवार्ण) इसी कारण नवार्ण नव अक्षरों वाला प्रभावी मंत्र हैं।

नवार्ण मंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे

नव अक्षरों वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र के हर अक्षर में देवी दुर्गा कि एक-एक शक्ति समायी हुई हैं, जिस का संबंध एक-एक ग्रहों से हैं।

1. नवार्ण मंत्र का प्रथम बीज मंत्र **ऐं** हैं, **ऐं** से प्रथम नवरात्र को दुर्गा कि प्रथम शक्ति शैल पुत्री कि उपासना कि जाती हैं। जिस में सूर्य ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
2. नवार्ण मंत्र का द्वितीय बीज मंत्र **ह्रीं** हैं, **ह्रीं** से दूसरे नवरात्र को दुर्गा कि द्वितीय शक्ति ब्रह्मचारिणी कि उपासना कि जाती हैं। जिस में चंद्र ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
3. नवार्ण मंत्र का तृतीय बीज मंत्र **क्लीं** हैं, **क्लीं** से तीसरे नवरात्र को दुर्गा कि तृतीय शक्ति चंद्रघंटा कि उपासना कि जाती हैं। जिस में मंगल ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
4. नवार्ण मंत्र का चतुर्थ बीज मंत्र **चा** हैं, **चा** से चौथे नवरात्र को दुर्गा कि चतुर्थ शक्ति कूष्माण्डा कि उपासना कि जाती हैं। जिस में बुध ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
5. नवार्ण मंत्र का पंचम बीज मंत्र **मुं** हैं, **मुं** से पाँचवे नवरात्र को दुर्गा कि पंचम शक्ति स्कंदमाता कि उपासना कि जाती हैं। जिस में बृहस्पति ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
6. नवार्ण मंत्र का षष्ठ बीज मंत्र **डा** हैं, **डा** से छठे नवरात्र को दुर्गा कि छठी शक्ति कात्यायनी कि उपासना कि जाती हैं। जिस में शुक्र ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
7. नवार्ण मंत्र का सप्तम बीज मंत्र **यै** हैं, **यै** से सातवें नवरात्र को दुर्गा कि सप्तम शक्ति कालरात्रि कि उपासना कि जाती हैं। जिस में शनि ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
8. नवार्ण मंत्र का अष्टम बीज मंत्र **वि** हैं, **वि** से आठवें नवरात्र को दुर्गा कि अष्टम शक्ति महागौरी कि उपासना कि जाती हैं। जिस में राहु ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
9. नवार्ण मंत्र का नवम बीज मंत्र **चै** हैं, **चै** से नवमें नवरात्र को दुर्गा कि नवम शक्ति सिद्धिदात्री कि उपासना कि जाती हैं। जिस में केतु ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।

इस नवार्ण मंत्र दुर्गा कि नवो शक्तियाँ व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार कि प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होती हैं।

जप विधान

प्रतिदिन स्नान इत्यादिसे शुद्ध होकर नवार्ण मंत्र का जाप 108 दाने कि माला से कम से कम तीन माला जाप अवश्य करना चाहिए।

दुर्गा सप्तशती के अनुशार

नवार्ण मंत्र के नौ अक्षरों मंत्र के पहले ॐ अक्षर जोड़कर भी कर सकते हैं ॐ लगाने से भी यह नवार्ण मंत्र के समान हि फलदायक सिद्ध होता हैं। इसमें लेस मात्र भी संदेह नहीं हैं। अतः मां भगवती दुर्गा कि कृपा प्राप्ति एवं नवग्रहो के दुष्प्रभावो से रक्षा प्राप्ति हेतु नवार्ण मंत्र का जाप पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा से कर सकते हैं।

कामनापूर्ति हेतु नवार्ण मंत्र साधना

✍ चिंतन जोशी

नवार्ण मन्त्र साधना

विनियोगः-

ॐ अस्य श्री नवार्ण मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषिः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंदांसि, महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यः देवताः, नंदजा शाकुंभरी भीमाः शक्तयः, रक्तदंतिका दुर्गा भ्रामयो बीजानि, ह्रौं कीलकम्, अग्निवायु सूर्यास्तत्वानि, कार्य निर्देश जपे विनियोग।

नवार्ण मन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥

नवार्ण भेद मन्त्र:

शास्त्रों में नवार्ण मन्त्र को अपने आप में अत्यन्त सिद्ध एवं प्रभावयुक्त माना गया हैं। नवार्ण मन्त्र को मन्त्र और तन्त्र दोनो में समान रुप से प्रयोग किया जाता हैं।

नवार्ण मन्त्र के शीघ्र प्रभावि प्रयोग आपके मार्गदर्शन हेतु दिये जारहे हैं।

चेतावनी:

नवार्ण मन्त्र का प्रयोग अति सावधानी से एवं योग्य गुरु, विद्वान ब्राह्मण अथवा जानकार की सलाह से करना चाहिए।

नवार्ण मोहन मन्त्र:

नवार्ण मोहन मन्त्र के बारह लाख जप करने का विधान हैं। इस प्रयोग को करने हेतु सात कुओं या नदियों का जल ताम्रकलश में लेकर उसमें आम के पत्ते डालकर नित्य उसी पानी से स्नान करना चाहिए। ललाट पर पीले चन्दन का तिलक करना चाहिए और शरीर पर पीले रंग के वस्त्र ही धारण करने चाहिए और पीले रंग के आसन का प्रयोग करना चाहिए। साधक को पश्चिम की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। बारह लाख मन्त्र जपने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण मोहन मन्त्र:

ॐ क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) क्लीं क्लीं मोहनम् कुरु कुरु क्लीं क्लीं स्वाहा।

***

नवार्ण उच्चाटन मन्त्र:

नवार्ण उच्चाटन मन्त्र के चौबीस लाख जप करने का विधान हैं। इसमें तीन कुओं का जप ताम्रकलश में लेकर रखना चाहिए और उसी जल से नित्य स्नान करना चाहिए। इस प्रयोग को पूर्व दिशा की तरफ मुहं करके जप करना चाहिए। जप के लिए लाल वस्त्र का आसन बिछाना चाहिए व साधक को भी लाल रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए। इस प्रयोग को बीस दिनो में संपन्न करने का विधान हैं। चौबीस लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण उच्चाटन मन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।

***

नवार्ण वशीकरण मन्त्र:

इस प्रयोग को बीस दिनो में संपन्न करने का विधान हैं। नदी, तालाब या कुएं के जल से स्नान करके साधक को दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। तथा सफेद आसन बिछाना चाहिए और सफेद वस्त्र धारण करने चाहिए। बीस लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण वशीकरण मन्त्र:

वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) वषट् मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

नवार्ण स्तंभन मन्त्र:

इस प्रयोग में साधक को पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। तथा भूरे रंग का आसन बिछाना चाहिए। सोलह लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण स्तंभन मन्त्र:

ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभय ह्रीं जिह्वां कीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा।

***

नवार्ण विद्वेषण मन्त्र:

इस प्रयोग में साधक को उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। तथा काले रंग का आसन बिछाना चाहिए। इस प्रयोग को बीस दिन में संपन्न करने का विधान हैं। तेरह लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं। साधना के दौरान जल में तिल डालकर स्नान करना चाहिए।

नवार्ण विद्वेषण मन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै (अमुकं) विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

नवार्ण महामन्त्र:

इस मन्त्र के उच्चारण मात्र से देवी मां प्रसन्न होती हैं। यह संपूर्ण नवार्ण महामंत्र हैं।

नवार्ण महामन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरी नवदुर्गे नवात्मिके नवचंडी महामाये महामोहे महायोग निद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुर मर्दिनि धूम्र लोचन संहंत्री चंडमुंड विनाशिनी रक्त बीजांतके निशुंभ ध्वंसिनि शुंभ दर्पघ्नि देवि अष्टादश बाहुके कपाल खट्वांग शूल खड्ग खेटक धारिणि छिन्न मस्तक धारिणि रुधिर मांस भोजिनी समस्त भूत प्रेतादि योग ध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादि स्तुते देवि मां रक्ष रक्ष मम् शत्रून् नाशय ह्रीं फट् ह्रूं फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो निम्न मंत्र का जाप करने से पति-पत्नी के बिचमें शांति का वातावरण बनेगा

मंत्र -

धं धिं धुम धुर्जते पत्नी वां वीं बूम वाग्धिश्वरि। क्रं क्रीं क्रूं कालिका देवी शं षीम शूं में शुभम कुरु॥

यदि पत्नी यह प्रयोग कर रही हैं तो पत्नी की जगह पति शब्द का उच्चारण करे

प्रयोग विधि –

- प्रातः स्नान इत्यादी से निवृत्त हो कर के दूर्गा या मां काली देवी के चित्र पर लाल पुष्प भेटा कर धूप-दीप जला के सिद्ध स्फटिक माला से 21 दिन तक 108 बार जाप करे लाभा प्राप्त होता हैं।
- शीध्र लाभ प्राप्ति हेतु प्रयोग करने से पूर्व मां के मंदिर में अपनी समर्थता के अनुशार अर्थ या वस्त्र भेट करें।
- लाभ प्राप्ति के पश्चयात माला को जल प्रवाह कर दें।

यदि आप इस प्रयोग विधि करने में असमर्थ हैं?, तो आप हमसे संपर्क कर अन्य उपाय जान सकते हैं।

दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र साधना

✍ स्वस्तिक.ऐन.जोशी

शास्त्रों में दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र को अत्यन्त गोपनीय और सिद्धिदायक माना गया हैं। दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र के बारें में शास्त्रोक्त वर्णन हैं

साक्षात् सिद्धिप्रदो मंत्रो
दुर्गायाः कलिनाशनः।

अष्टाक्षरो अष्ट सिद्धिशो गोपनीयो दिगंबरैः। ॐ अस्य श्री दुर्गाष्टाक्षर मंत्रस्य महेश्वर ऋषिः, श्री दुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता, दुं बीजम्,ह्रीं शक्ति, ॐ कीलकाय नमः इति दिगबंधः, धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ध्यान:

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां
शंखाब्जखड्ग शर खेटक चापान्।
संतर्जनी च दघतीं महिषासनस्थां
दुर्गा नवारकुल पीठगतां भजेहम्।

दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र :

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः॥

फल:

उक्त मन्त्र के एक लाख जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता हैं। इस मन्त्र में अद्भुत शक्ति हैं। वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु पर विजय, ऋण-रोग आदि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त होती हैं और व्यक्ति को जीवन में संपूर्ण सुखों की प्राप्ति हो इस के लिये यह मन्त्र अचूक एवं सिद्धिदायक हैं।

कुमारी पूजन से सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं।

✍ चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

कुमारी-पूजा से माँ भगवती अति प्रसन्न होती हैं और साधक के सकल मनोरथ सिद्ध करती हैं।

विद्वानो के मत से कुमारी पूजा में किसी भी प्रकार का जाति भेद नहीं माना जाता है। शास्त्रोक्त मत से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र इन चारों वर्णों की कुमारियों की पूजा किया जासकता हैं। चारों वर्णो की कुमारियों की पूजा से साधक को भिन्न-भिन्न फल की प्राप्ति होती हैं। **मेरु तन्त्र** में उल्लेखित है कि

- **ब्राह्मण कुमारी:** के पूजन से साधक को सर्व इष्ट फलो की प्राप्ति होती हैं।
- **क्षत्रिय कुमारी:** के पूजन से साधक को यश की प्राप्ति होती हैं।
- **वैश्य कुमारी:** के पूजन से साधक को धन की प्राप्ति होती हैं।
- **शूद्र कुमारी:** के पूजन से साधक की संतान को लाभ होता है।

स्कन्द-पुराण में उल्लेखित है कि विपत्ति-काल में अन्त्यजा-कुमारी का पूजन करना चाहिए।

शिव कुमारी-पूजा में हेय और काम-बुद्धि अनिष्ट-कारक होती है। अतः सावधान होकर कुमारी-फुजा करनी चाहिए। यामल तन्त्र में उल्लेखित है कि दो वर्ष से ऊपर की कुमारी का पूजन धर्म वैधानिक हैं, क्योंकि एक-वर्ष से कम की कुमारी की गन्ध, पुष्प, वस्त्र और नैवेद्य के प्रति रुचि नहीं होती।

अन्य धर्म ग्रन्थों में एक वर्ष से षोडश (सोलह) वर्ष तक की कन्या कों भिन्न-भिन्न देवी कही गई हैं।

वाडवानलीय तन्त्र: में कुमारी पूजन हेतु उल्लेखित है कि

- **उत्तम कल्प:** सात, आठ और नौ वर्ष की कन्या के पूजन से उत्तम कल्प होता हैं।
- **मध्यम कल्प:** पाँच, छः और दस वर्ष की कन्या के पूजन से मध्यम कल्प होता हैं।
- **अधम कल्प:** एक, दो, तीन और चार वर्ष की कन्या के पूजन से अधम कल्प होता हैं।

विद्वानो के मत से नवरात्र में कुमारि कन्याओं के पूजन का अत्याधिक महत्त्व है।

क्योकि शास्त्रोक्त विधान से कुमारि कन्याएं माँ का प्रत्यक्ष स्वरुप होती हैं। इस लिए कुमारि कन्याओं का पूजन देवी माँ के समान करना कल्याण कारी होता है। प्रतिपदा से नवमी तक कुमारि कन्याओं को दुर्गा स्वरुप मानकर पूजन करना अत्याधिक कल्याण कारी होता हैं। यदि कोई साधक प्रतिदिन कुमारी पूजन नहीं कर सकता हो, तो उनको अष्टमी या नवमी को कुमारी पूजन अवश्य करना चाहिए।

कुमारी-पूजा में भगवान श्री गणेश और बटुक के साथ सात, पाँच, तीन या एक कुमारी की पूजा करनी चाहिए। गणेश और बटुक की पूजा के लिए छोटे लड़कों को लेना चाहिए। आसन बिछाकर पहले गणेश, फिर बटुक, उसके बाद कुमारी पूजन करना चाहिए।

गणेशजी की पूजा के लिए 'ॐ गं गणेशाय नमः' मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, दीप, वस्त्र-नैवेद्य आदि से पूजा करे। बटुक की पूजा के लिए 'ॐ वं वटुकाय नमः' मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, दीप, वस्त्र-नैवेद्य आदि से पूजा करे।

कुमारी पूजन के लिए पहले दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

यथा-मन्त्राक्षर-मयीं लक्ष्मीं, मातृणां रुप-धारिणीं।
नव-दुर्गात्मिकां साक्षात्, कन्यामावाहयाम्महं॥
जगत्-पूज्ये जगद्-वन्द्ये, सर्व-शक्ति-स्वरुपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

उक्त प्रार्थना करके हाथ में लिए पुष्पों को कुमारी के चरणों पर रखकर प्रणाम करे।

तत पश्चयात *ॐ कुमार्यै नमः* मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, दीप, वस्त्र-नैवेद्य आदि से विधिवत पूजन करे।

तत पश्चयात सब कन्याओं को पुष्प माला पहनाकर भोजन कराए। जब वे भली प्रकार संतुष्ट हो जाएँ, तब उनका हाथ मुँह धुलाकर उनके हाथ में दक्षिणा प्रदान करें और उन्हें प्रणाम करें।

विधिवत कुमारी पूजन

कुमारी पूजन एक सिद्ध प्रयोग है। सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्णता इस पूजन द्वारा सम्भव है।

पूजन हेतु सर्व प्रथम संकल्प करे।

यथा:

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्धे, श्री श्वेत-वाराह-कल्पे, जम्बु-द्वीपे, भरत-खण्डे, अमुक-प्रदेशान्तर्गते, अमुक पुण्य-क्षेत्रे, कलियुगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-नाम-सम्वत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम-शर्माऽहं (वर्माऽहं, दासोऽहं वा), सर्वापत् शान्ति-पूर्वक ममाभीष्ट-सिद्धये, गणेश-वटुकादि-सहितां कुमारी-पूजां करिष्ये।

तत पश्चयात

गणेश पूजन करें:

गं गणपतये नमः मन्त्र से भगवान् गणेश का पूजन करे।

यथा:

गं गणपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
गं गणपतये नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
गं गणपतये नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
गं गणपतये नमः पुष्पं समर्पयामि।
गं गणपतये नमः धूपं घ्रापयामि।
गं गणपतये नमः दीपं दर्शयामि।
गं गणपतये नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
गं गणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि।
गं गणपतये नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
गं गणपतये नमः दक्षिणां समर्पयामि।

भगवान श्रीगणेश का पूजन करने के पश्चात् वटुक का पूजन करें।

वटुक पूजन करें:

ॐ वं वटुकाय नमः मन्त्र से भगवान वटुक का पूजन करे।

यथा-

ॐ वं वटुकाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः धूपं घ्रापयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः दीपं दर्शयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
ॐ वं वटुकाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

वटुक का पूजन करने के पश्चयात कुमारी पूजन करें।

कुमारी पूजन:

कुमारी के पैर धोकर उसे श्रद्धा पूर्वक अपने सम्मुख आसन पर बैठाए। फिर दोनों हाथ जोड़कर भक्ति पूर्वक ध्यान करे।

यथा-

बाल-रुपां च त्रैलोक्य-सुन्दरीं वर-वर्णिनीम्। नानालंकार-नम्रांगीं, भद्र-विद्या-प्रकाशिनीम्।। चारु-हास्यां महाऽऽनन्द-हृदयां चिन्तये शुभाम्।।

अर्थात्: बाल-स्वरुपवाली, त्रिलोक-सुन्दरी, श्रेष्ठ वर्णवाली, विविध प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित होने से विनम्र शरीरवाली, कल्याण-कारिणी विद्या को प्रकट करनेवाली, सुन्दर हँसी हँसनेवाली, परमानन्द से युक्त हृदयवाली कल्याणकारिणी कुमारी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

ध्यान करने के बाद इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक पढ़कर **आवाहन करे-**

ॐ मन्त्राक्षर मयीं लक्ष्मीं, मातृणां रुप-धारिणीम्।
नव-दुर्गात्मिकां साक्षात्, कन्यामावाहयाम्यहम्॥

अर्थात्: मन्त्राक्षरों से संयुक्ता, लक्ष्मी-स्वरुपा, मातृकाओं का रुप धारण करने वाली, साक्षात् नव-दुर्गा-स्वरुपा कन्या देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

आवाहन करने के बाद, सम्मुख उपस्थित कुमारी का पाद्य, अर्घ्य, गन्धाक्षत्, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल एवं दक्षिणा आदि उपचारों से पूजन करे।

कुमारी का पूजन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़ते हुए प्रणाम करे-

जगद्-वन्द्ये, जगत्-पूज्ये, सर्व-शक्ति-स्वरुपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

अर्थात्: हे विश्व-वन्द्ये, संसार-पूज्ये, सर्व-शक्ति-स्वरुपे कौमारि देवि, मेरी पूजा स्वीकर करिए। हे जगदम्ब, आपको नमस्कार। कुमारी-पूजा के बाद श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

॥दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं (विश्वसारतन्त्र)॥

ईश्वर उवाचः

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥१॥
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः ।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्द स्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बर परीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥६॥
अमेयविक्रमा क्रुरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहन वाहना ॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि ।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥१९॥
गोरोचनालक्तककुङ्कुमेव सिन्धूरकर्पूरमधुत्रयेण ।
विलिख्ययन्त्रं विधिनाविधिज्ञो भवेत्सदाधारयतेपुरारिः॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् संपदां पदम् ॥२१॥
॥इति श्री विश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्॥

विशेषः- उपर्युक्त विधि से 'कुमारी पूजा' मास में एक बार करना विशेष लाभदायक होता हैं। कुमारियाँ विषम-संख्यक 1, 3, 5, 7.... होनी चाहिए।

॥दुर्गा चालीसा॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी ॥१॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥२॥
शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥३॥
रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरशकरत जन अति सुखपावे ॥४॥
तुम संसार शक्ति लै कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥५॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥६॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥७॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥८॥
रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥९॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥१०॥

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो।
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो॥११॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं॥१२॥
क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा॥१३॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित नजात बखानी॥१४॥
मातंगी अरु धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥१५॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्नभालभव दुःखनिवारिणी॥१६॥
केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी॥१७॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥१८॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥१९॥
नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहुँलोक में डंका बाजत॥२०॥

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे॥२१॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥२२॥
रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥२३॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भईसहाय मातु तुम तब तब॥२४॥
अमरपुरी अरु बासव लोका।
तब महिमा सब रहें अशोका॥२५॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी॥२६॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावें।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें॥२७॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥२८॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योगन हो बिन शक्ति तुम्हारी॥२९॥
शंकर आचारज तप कीनो।
कामअरु क्रोधजीति सब लीनो॥३०॥

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहुकाल नहिं सुमिरो तुमको॥३१॥
शक्ति रूप का मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो॥३२॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्बभवानी॥३३॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥३४॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो॥३५॥

आशा तृष्णा निपट सतावें।
मोह मदादिक सब बिनशावें॥३६॥
शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥३७॥
करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला।३८॥
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ।
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ॥३९॥
श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परमपद पावै॥४०॥
दोहाः देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

श्रीकृष्ण कृत देवी स्तुति

नवरात्र में श्रद्धा और प्रेमपूर्वक महाशक्ति भगवती देवी की पूजा-उपासना करने से यह निर्गुण स्वरूपा देवी पृथ्वी के समस्त जीवों पर दया करके स्वयं ही सगुणभाव को प्राप्त होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश रूप से उत्पत्ति, पालन और संहार कार्य करती हैं।

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी। त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥१॥
कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्। परब्रह्मास्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥२॥
तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा। सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्पर॥३॥
सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया। सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला॥४॥

अर्थातः आप विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, आप सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो।

यद्यपि वस्तुतः आप स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। आप परब्रह्म स्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो।

परम तेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने आप शरीर धारण करती हों। आप सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो। आप सर्वाबीजस्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। आप सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करने वाली एवं सर्व मंगलों कि भी मंगल हो।

ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम्

अहमित्यष्टर्चस्य सूक्त स्य वागाम्भृणी ऋषिः सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता,
द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवीमाहात्म्य पाठे विनियोगः।

ध्यानम्

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

देवीसूक्तम्

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥१॥
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते॥२॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम्॥३॥
मयासो अन्नमत्ति योविपश्यति यः प्राणिति यईश्रृणोत्युक्त म्। अमन्तवो मां तउप क्षियन्ति श्रुधिश्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥४॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥५॥
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ। अहं जनाय समदं कृणोम्यहंद्यावापृथिवीआविवेश॥६॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पशमि॥७॥
अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव॥८॥

सप्तश्लोकी दुर्गा

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

देव उवाचः

श्रृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्री दुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य
नारायण ऋषिः अनुष्टप्छन्दः,

श्रीमह्मकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः,
श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हिसा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥

रोगानशोषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्माश्रयतां प्रयान्ति॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्यद्वैरिविनाशनम्॥

॥ इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा संपूर्णम् ॥

दुर्गा आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निसदिन ध्यावत हरि ब्रम्हा शिवरी॥१॥
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको॥२॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजे॥३॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःख हारी॥४॥

कानन कुंडल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥५॥
शुंभ निशंभु विदारे महिषासुरधाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती॥६॥
चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे॥७॥
ब्रम्हाणी रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥८॥

चौसंठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरुँ।
बाजत ताल मृदंगा अरु डमरुँ॥९॥
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता सुख सम्पत्ति कर्ता॥१०॥
भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांच्छित फल पावे सेवत नर नारी॥११॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बात्ती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योती॥१२॥

माँ अम्बे जी की आरती जो कोई नर गाये।
कहत शिवानंद स्वामी सुख संपत्ति पाये॥१३॥

॥ सिद्धकुंजिकास्तोत्रम् ॥

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥१॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥२॥
कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मंत्रः

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे॥२॥
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते॥३॥
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥४॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी॥५॥
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥६॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं॥७॥
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥
इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥

। इति श्री कुंजिकास्तोत्रम् संपूर्णम् ।

दुर्गाष्टकम्

दुर्गे परेशि शुभदेशि परात्परेशि।
वन्द्ये महेशदयितेकरुणार्णवेशि।
स्तुत्ये स्वधे सकलतापहरे सुरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥१॥
दिव्ये नुते श्रुतिशतैर्विमले भवेशि।
कन्दर्पदारशतयुन्दरि माधवेशि।
मेधे गिरीशतनये नियते शिवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥२॥
रासेश्वरि प्रणततापहरे कुलेशि।
धर्मप्रिये भयहरे वरदाग्रगेशि।
वाग्देवते विधिनुते कमलासनेशि।
कृष्णस्तुतेकुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥३॥
पूज्ये महावृषभवाहिनि मंगलेशि।
पद्मे दिगम्बरि महेश्वरि काननेशि।
रम्येधरे सकलदेवनुते गयेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपा ललितेऽखिलेशि॥४॥
श्रद्धे सुराऽसुरनुते सकले जलेशि।
गंगे गिरीशदयिते गणनायकेशि।
दक्षे स्मशाननिलये सुरनायकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥५॥
तारे कृपार्द्रनयने मधुकैटभेशि।
विद्येश्वरेश्वरि यमे निखलाक्षरेशि।
ऊर्जे चतुःस्तनि सनातनि मुक्तकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां ललितऽखिलेशि॥६॥
मोक्षेऽस्थिरे त्रिपुरसुन्दरिपाटलेशि।
माहेश्वरि त्रिनयने प्रबले मखेशि।
तृष्णे तरंगिणि बले गतिदे ध्रुवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥७॥
विश्वम्भरे सकलदे विदिते जयेशि।
विन्ध्यस्थिते शशिमुखि क्षणदे दयेशि।
मातः सरोजनयने रसिके स्मरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥८॥
दुर्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
सर्वार्थदं हरिहरादिनुतां वरेण्याम्।
दुर्गां सुपूज्य महितां विविधोपचारैः
प्राप्नोति वांछितफलं न चिरान्मनुष्यः॥९॥

॥ इति श्री दुर्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ भवान्यष्टकम् ॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसार-पाश-प्रबद्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यान-योगं
न जानामि तंत्र न च स्तोत्र-मन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानानि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्ति व्रतं वाऽपि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥४॥

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धि कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबंधः सदाऽह
गतिस्त्व गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत् सदाऽहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरा-रोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥८॥

॥ इति श्रीभवान्यष्टकं संपूर्णम् ॥

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥२॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे॥३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्। यां गतिं समवापनेति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके। इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेभ्र्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥६॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे। गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥८॥

दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥१॥
सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्त केशी घोररूपा महाबला॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्ग तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवापनुयात्॥१९॥
गोरोचनालक्त ककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयते पुरारिः॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्॥२१॥

विश्वंभरी स्तुति

विश्वंभरी स्तुति मूल रुपसे गुजराती में वल्लभ भट्ट द्वारा लिखी गई हैं। ✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी

विश्वंभरी अखिल विश्वतणी जनेता।
विद्या धरी वदनमां वसजो विधाता॥
दुर्बुद्धि दुर करी सद्दबुद्धि आपो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१॥

भूलो पडि भवरने भटकुं भवानी।
सुझे नहि लगीर कोइ दिशा जवानी॥
भासे भयंकर वळी मनना उतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥२॥

आ रंकने उगरवा नथी कोइ आरो।
जन्मांध छु जननी हु ग्रही हाथ तारो॥
ना शुं सुणो भगवती शिशुना विलापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥३॥

मा कर्म जन्म कथनी करतां विचारु।
आ सृष्टिमां तुज विना नथी कोइ मारु॥
कोने कहुं कठण काळ तणो बळापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥४॥

हुं काम क्रोध मध मोह थकी भरेलो।
आडंबरे अति धणो मद्‌थी छकेलो॥
दोषो बधा दूर करी माफ पापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥५॥

ना शास्त्रना श्रवणनु पयःपान पीधु।
ना मंत्र के स्तुति कथा नथी काइ कीधु॥
श्रद्धा धरी नथी कर्या तव नाम जापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥६॥

रे रे भवानी बहु भूल थई ज मारी।
आ जिंदगी थई मने अतिशे अकारी॥
दोषो प्रजाळि सधळा तव छाप छापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥७॥

खाली न कोइ स्थळ छे विण आप धारो।
ब्रह्मांडमां अणु-अणु महीं वास तारो॥
शक्ति न माप गणवा अगणित मापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥८॥

पापो प्रपंच करवा बधी रीते पूरो।
खोटो खरो भगवती पण हुं तमारो॥
जाडयांधकार करी दूर सुबुद्धि स्थापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥९॥

शीखे सुणे रसिक छंद ज एक चित्ते।
तेना थकी त्रिविध ताप टळे खचिते॥
बुद्धि विशेष जगदंब तणा प्रतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१०॥

श्री सदगुरु शरनमां रहीने यजुं छुं।
रात्रि दिने भगवती तुजने भजुं छु॥
सदभक्त सेवक तणा परिताप चापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥११॥

अंतर विषे अधिक उर्मि थतां भवानी।
गाऊ स्तुति तव बळे नमीने मृडानी॥
संसारना सकळ रोग समूळ कापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१२॥

महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम्

||भगवतीपद्यपुष्पांजलिस्तोत्र महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम् ||

श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ||

भगवती भगवत्पदपङ्कजं भ्रमरभूतसुरासुरसेवितम् | सुजनमानसहंसपरिस्तुतं कमलयाऽमलया निभृतं भजे ||१|| ते उभे अभिवन्देऽहं विघ्नेशकुलदैवते | नरनागाननस्त्वेको नरसिंह नमोऽस्तुते ||२|| हरिगुरुपदपद्मं शुद्धपद्येऽनुरागाद् विगतपरमभागे सन्निधायादरेण | तदनुचरि करोमि प्रीतये भक्तिभाजां भगवति पदपद्मे पद्यपुष्पाञ्जलिं ते ||३|| केनैते रचिताः कुतो न निहिताः शुम्भादयो दुर्मदाः केनैते तव पालिता इति हि तत् प्रश्ने किमाचक्ष्महे | ब्रह्माद्या अपि शंकिताः स्वविषये यस्याः प्रसादावधि प्रीता सा महिषासुरप्रमथिनीच्छ्द्यादवद्यानि मे ||४|| पातु श्रीस्तु चतुर्भुजा किमु चतुर्बाहोर्महौजान्भुजान् धत्तेऽष्टादशधा हि कारणगुणान्कार्ये गुणारम्भकाः | सत्यं दिक्पतिदन्तिसंख्यभुजभृच्छम्भुः स्वयम्भूः स्वयं धामैकप्रतिपत्तये किमथवा पातुं दशाष्टौ दिशः ||५|| प्रीत्याऽष्टादशसंमितेषु युगपद्द्वीपेषु दातुं वरान् त्रातुं वा भयतो बिभर्षि भगवत्यष्टादशैतान् भुजान् | यद्वाऽष्टादशधा भुजांस्तु बिभृतः काली सरस्वत्युभे मीलित्वैकमिहानयोः प्रथयितुं सा त्वं रमे रक्षमाम् ||६|| अयि गिरिनंदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदनुते गिरिवर विंध्य शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते | भगवति हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरि कुटुंबिनि भूरि कृते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१||||७|| सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते | दनुज निरोषिणि दितिसुत रोषिणि दुर्मद शोषिणि सिन्धुसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२||||८|| अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रिय वासिनि हासरते शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृंग निजालय मध्यगते | मधु मधुरे मधु कैटभ गंजिनि कैटभ भंजिनि रासरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||३||||९|| अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते रिपु गज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते | निज भुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||४||||१०|| अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते चतुर विचार धुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते | दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत कृतांतमते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||५||||११|| अयि शरणागत वैरि वधूवर वीर वराभय दायकरे त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे | दुमिदुमि तामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||६||||१२|| अयि निज हुँकृति मात्र निराकृत धूम्र विलोचन धूम्र शते समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीज लते | शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||७||||१३|| धनुरनु संग रणक्षणसंग परिस्फुर दंग नटत्कटके कनक पिशंग पृषत्क निषंग रसद्भट शृंग हतावटुके | कृत चतुरङ्ग बलक्षिति रङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१४|| सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते हासविलासहुलासमयि प्रणतार्तजनेऽमितप्रेमभरे | धिमिकिटधिक्कटधिकटधिमिध्वनिघोरमृदंगनिनादरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||८||||१५|| जय जय जप्य जयेजय शब्द परस्तुति

तत्पर विश्वनुते झण झण झिञ्जिमि झिंकृत नूपुर सिंजित मोहित भूतपते | नटित नटार्ध नटीनट नायक नाटित नाट्य सुगानरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||९||||१६|| अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कांतियुते श्रित रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते | सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१०||||१७|| सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते | सितकृत फुल्लिसमुल्ल सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||११||||१८|| अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त मतङ्गज राजपते त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते | अयि सुद तीजन लालसमानस मोहन मन्मथ राजसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१२||||१९|| कमल दलामल कोमल कांति कलाकलितामल भाललते सकल विलास कलानिलयक्रम केलि चलत्कल हंस कुले | अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालि कुले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१३||||२०|| कर मुरली रव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते मिलित पुलिन्द मनोहर गुञ्जित रंजितशैल निकुञ्जगते | निजगुण भूत महाशबरीगण सद्गुण संभृत केलितले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१४||||२१|| कटितट पीत दुकूल विचित्र मयूखतिरस्कृत चंद्र रुचे प्रणत सुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुल सन्नख चंद्र रुचे | जित कनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भर कुंजर कुंभकुचे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१५||||२२|| विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते कृत सुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते | सुरथ समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१६||||२३|| पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् | तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१७||||२४|| कनकलसत्कल सिन्धु जलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं भजति स किं न शचीकुच कुंभ तटी परिरंभ सुखानुभवम् | तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१८||||२५|| तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते | मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१९||||२६|| अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते | यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२०||||२७|| स्तुतिमितस्तिमितः सुसमाधिना नियमतोऽयमतोऽनुदिनं पठेत् | परमया रमयापि निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ||२८|| रमयति किल कर्षस्तेषु चित्तं नराणामवरजवर यस्माद्रामकृष्णः कवीनाम् | अकृत सुकृतिगम्यं रम्यपद्यैकहर्म्यं स्तवनमवनहेतुं प्रीतये विश्वमातुः ||२९|| इन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो यतः सोऽनवद्यः स्मृतः | श्रीपतेः सूनूना कारितो योऽधुना विश्वमातुः पदे पद्यपुष्पाञ्जलिः ||३०||

|| इति श्रीभगवतीपद्यपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ||

गुप्त सप्तशती

स्वस्तिक.ऎन.जोशी, आलोक शर्मा

संपूर्ण श्री दुर्गा सप्तशती के मंत्रो का पाठ करने से साधक को जो फल प्राप्त होता है, वैसा ही कल्याणकारी फल प्रदान करने वाला गुप्त सप्तशती के मंत्रो का पाठ हैं।

गुप्त सप्तशती में अधिकतर मंत्र बीजों के होने से यह साधकों के लिए अमोघ फल प्रदान करने में समर्थ हैं। गुप्त सप्तशती के पाठ का क्रम इस प्रकार हैं।

प्रारम्भ में **कुञ्जिका स्तोत्र** उसके बाद **गुप्त सप्तशती** उसके पश्चयात स्तवन का पाठ करे।

कुञ्जिका-स्तोत्र

पूर्व-पीठिका-ईश्वर उवाच:

श्रृणु देवि, प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका-मन्त्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेन चण्डीजापं शुभम् भवेत्॥१॥
न वर्म नार्गला-स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तम् नापि ध्यानम् च न न्यासम् च न चार्चनम्॥२॥
कुञ्जिका-पाठ-मात्रेण दुर्गा-पाठ-फलं लभेत्।
अति गुह्यतमम् देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयम् प्रयत्नेन स्व-योनि-वच्च पार्वति।
मारणम् मोहनम् वश्यम् स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठ-मात्रेण संसिद्धिः कुञ्जिकामन्त्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मन्त्र:

ॐ श्लैं दुँ क्लीं क्लौं जुं सः ज्वलयोज्ज्वल ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल प्रबल-प्रबल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मन्त्र:

इस कुञ्जिका मन्त्र का दस बार जप करना चाहिए। इसी प्रकार स्तव-पाठ के अन्त में पुनः इस मन्त्र का दस बार जप कर कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

कुञ्जिका स्तोत्र मूल-पाठ

नमस्ते रुद्र-रूपायै, नमस्ते मधु-मर्दिनि।
नमस्ते कैटभारी च, नमस्ते महिषासनि॥
नमस्ते शुम्भहंत्रेति, निशुम्भासुर-घातिनि।
जाग्रतं हि महा-देवि जप-सिद्धिं कुरुष्व मे॥
ऐं-कारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका॥
क्लीं-कारी कामरूपिण्यै बीजरूपा नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्ड-घाती च यैं-कारी वर-दायिनी॥
विच्चे नोऽभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि॥
धां धीं धूं धूर्जटेर्पत्नी वां वीं वागेश्वरी तथा।
क्रां क्रीं श्रीं मे शुभं कुरु, ऐं ॐ ऐं रक्ष सर्वदा।।
ॐ ॐ ॐ-कार-रुपायै, ज्रां-ज्रां ज्रम्भाल-नादिनी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि, शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥
ह्रूं ह्रूं ह्रूं-काररूपिण्यै ज्रं ज्रं ज्रम्भाल-नादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवानि ते नमो नमः॥7॥

मन्त्र:

अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराविर्भव, आविर्भव, हं सं लं क्षं मयि जाग्रय-जाग्रय, त्रोटय-त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा॥
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा, कुञ्जिकायै नमो नमः॥
सां सीं सप्तशती-सिद्धिं, कुरुष्व जप-मात्रतः॥
इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं मंत्र-जाल-ग्रहां प्रिये।
अभक्ते च न दातव्यं, गोपयेत् सर्वदा श्रृणु॥
कुंजिका-विहितं देवि यस्तु सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिं, अरण्ये रुदनं यथा॥

॥इति श्रीरुद्रयामले गौरीतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रं संपूर्णम्॥

गुप्त-सप्तशती

ॐ ब्रीं-ब्रीं-ब्रीं वेणु-हस्ते, स्तुत-सुर-बटुकैर्हां गणेशस्य माता।
स्वानन्दे नन्द-रुपे, अनहत-निरते, मुक्तिदे मुक्ति-मार्गे॥
हंसः सोहं विशाले, वलय-गति-हसे, सिद्ध-देवी समस्ता।
हीं-हीं-हीं सिद्ध-लोके, कच-रुचि-विपुले, वीर-भद्रे नमस्ते॥१॥

ॐ ह्रींकारोच्चारयन्ती, मम हरति भयं, चण्ड-मुण्डौ प्रचण्डे।
खां-खां-खां खड्ग-पाणे, ध्रक-ध्रक ध्रकिते, उग्र-रुपे स्वरुपे॥
हुँ-हुँ हुँकांर-नादे, गगन-भुवि-तले, व्यापिनी व्योम-रुपे।
हं-हं हंकार-नादे, सुर-गण-नमिते, चण्ड-रुपे नमस्ते॥२॥

ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रां-घ्रां-घ्रां घोर-रुपे, घघ-घघ-घटिते, घर्घरे घोर-रावे॥
निर्मांसे काक-जंघे, घसित-नख-नखा, धूम्र-नेत्रे त्रि-नेत्रे।
हस्ताब्जे शूल-मुण्डे, कुल-कुल ककुले, सिद्ध-हस्ते नमस्ते॥३॥

ॐ क्रीं-क्रीं-क्रीं ऐं कुमारी, कुह-कुह-मखिले, कोकिलेनानुरागे।
मुद्रा-संज्ञ-त्रि-रेखा, कुरु-कुरु सततं, श्री महा-मारि गुह्ये॥
तेजांगे सिद्धि-नाथे, मन-पवन-चले, नैव आज्ञा-निधाने।
ऐंकारे रात्रि-मध्ये, स्वपित-पशु-जने, तत्र कान्ते नमस्ते॥४॥

ॐ व्रां-व्रीं-व्रूं व्रैं कवित्वे, दहन-पुर-गते रुक्मि-रुपेण चक्रे।
त्रिः-शक्तया, युक्त-वर्णादिक, कर-नमिते, दादिवं पूर्व-वर्णे॥
ह्रीं-स्थाने काम-राजे, ज्वल-ज्वल ज्वलिते, कोशिनि कोश-पत्रे।
स्वच्छन्दे कष्ट-नाशे, सुर-वर-वपुषे, गुह्य-मुण्डे नमस्ते॥५॥

ॐ घ्रां-घ्रीं-घ्रूं घोर-तुण्डे, घघ-घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रि-घोषे।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च-चक्रे, रर-रर-रमिते, सर्व-ज्ञाने प्रधाने॥
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुग-जुग जजुगे म्लीं पदे काल-मुण्डे।
सर्वांगे रक्त-धारा-मथन-कर-वरे, वज्र-दण्डे नमस्ते॥६॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वाम-नमिते, गगन गड-गडे गुह्य-योनि-स्वरुपे।
वज्रांगे, वज्र-हस्ते, सुर-पति-वरदे, मत्त-मातंग-रुढे॥
स्वस्तेजे, शुद्ध-देहे, लल-लल-ललिते, छेदिते पाश-जाले।
किण्डल्याकार-रुपे, वृष वृषभ-ध्वजे, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते॥७॥

ॐ हुँ हुँ हुंकार-नादे, विषमवश-करे, यक्ष-वैताल-नाथे।
सु-सिद्धयर्थे सु-सिद्धैः, ठठ-ठठ-ठठठः, सर्व-भक्षे प्रचण्डे॥
जूं सः सौं शान्ति-कर्मेऽमृत-मृत-हरे, निःसमेसं समुद्रे।
देवि, त्वं साधकानां, भव-भव वरदे, भद्र-काली नमस्ते॥८॥
ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराह-स्वरुपा।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री॥
ऐं ह्रीं क्लींकार-भूते, वितल-तल-तले, भू-तले स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे, हरि-हर-भुवने, सिद्ध-चण्डी नमस्ते॥९॥

हं लं क्षं शौण्डि-रुपे, शमित भव-भये, सर्व-विघ्नान्त-विघ्ने।
गां गीं गूं गैं षडंगे, गगन-गति-गते, सिद्धिदे सिद्ध-साध्ये॥
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसति-वदने, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।
हां हूं गां गीं गणेशी, गज-मुख-जननी, त्वां महेशीं नमामि॥१०॥

स्तवन

या देवी खड्ग-हस्ता, सकल-जन-पदा, व्यापिनी विशऽव-दुर्गा।
श्यामांगी शुक्ल-पाशाब्दि जगण-गणिता, ब्रह्म-देहार्ध-वासा॥
ज्ञानानां साधयन्ती, तिमिर-विरहिता, ज्ञान-दिव्य-प्रबोधा।
सा देवी, दिव्य-मूर्तिर्प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥१॥

ॐ हां ह्रीं हूं वर्म-युक्ते, शव-गमन-गतिर्भीषणे भीम-वक्त्रे।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोध-मूर्तिर्विकृत-स्तन-मुखे, रौद्र-दंष्ट्रा-कराले॥
कं कं कंकाल-धारी भ्रमसि, जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती-
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥२॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्र-रुपे, त्रिभुवन-नमिते, पाश-हस्ते त्रि-नेत्रे।
रां रीं रुं रंगे किले किलित रवा, शूल-हस्ते प्रचण्डे॥
लां लीं लूं लम्ब-जिह्वे हसति, कह-कहा शुद्ध-घोराट्ट-हासैः।
कंकाली काल-रात्रिः प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥३॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर-रुपे घघ-घघ-घटिते घर्घराराव घोरे।
निर्माँसे शुष्क-जंघे पिबति नर-वसा धूम्र-धूम्रायमाने॥
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती, सकल-भुवि-तले, यक्ष-गन्धर्व-नागान्।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥४॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्र-काली, हरि-हर-नमिते, रुद्र-मूर्ते विकर्णे।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ, शशि-मुकुट-शिरो वेष्ठितां केतु-मालाम्॥
स्त्रक्-सर्व-चोरगेन्द्रा शशि-करण-निभा तारकाः हार-कण्ठे।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥५॥
ॐ खं-खं-खं खड्ग-हस्ते, वर-कनक-निभे सूर्य-कान्ति-स्वतेजा।
विद्युज्ज्वालावलीनां, भव-निशित महा-कर्त्रिका दक्षिणेन॥
वामे हस्ते कपालं, वर-विमल-सुरा-पूरितं धारयन्ती।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥६॥

ॐ हुँ हुँ फट् काल-रात्रीं पुर-सुर-मथनीं धूम्र-मारी कुमारी।
ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दुष्टान् कलित किल-किला शब्द अट्टाट्टहासे॥
हा-हा भूत-प्रभूते, किल-किलित-मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं कपालीं परिजन-सहिता चण्डि चामुण्डा-नित्ये।
रं-रं रंकार-शब्दे शशि-कर-धवले काल-कूटे दुरन्ते॥
हुँ हुँ हुंकार-कारि सुर-गण-नमिते, काल-कारी विकारी।
त्र्यैलोक्यं वश्य-कारी, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥८॥

वन्दे दण्ड-प्रचण्डा डमरु-डिमि-डिमा, घण्ट टंकार-नादे।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा थथ-थइ विभवैर्निर्मला मन्त्र-माला॥
रुक्षौ कुक्षौ वहन्ती, खर-खरिता रवा चार्चिनि प्रेत-माला।
उच्चैस्तैश्चाट्टहासै, हह हसित रवा, चर्म-मुण्डा प्रचण्डे॥९॥

ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि-गमना त्वं च देवी कुमारी।
त्वं चक्री चक्र-हासा घुर-घुरित रवा, त्वं वराह-स्वरुपा॥
रौद्रे त्वं चर्म-मुण्डा सकल-भुवि-तले संस्थिते स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे हरि-हर-नमिते देवि चण्डी नमस्ते॥१०॥

रक्ष त्वं मुण्ड-धारी गिरि-गुह-विवरे निर्झरे पर्वते वा।
संग्रामे शत्रु-मध्ये विश विषम-विषे संकटे कुत्सिते वा॥
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि-भुवि-तले वह्नि-मध्ये च दुर्गे।
रक्षेत् सा दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥११॥

इत्येवं बीज-मन्त्रैः स्तवनमति-शिवं पातक-व्याधि-नाशनम्।
प्रत्यक्षं दिव्य-रुपं ग्रह-गण-मथनं मर्दनं शाकिनीनाम्॥
इत्येवं वेद-वेद्यं सकल-भय-हरं मन्त्र-शक्तिश्च नित्यम्।
मंत्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र-सिद्धिम्॥१२॥

चं-चं-चं चन्द्र-हासा चचम चम-चमा चातुरी चित्त-केशी।
यं-यं-यं योग-माया जननि जग-हिता योगिनी योग-रुपा॥
डं-डं-डं डाकिनीनां डमरुक-सहिता दोल हिण्डोल डिम्भा।
रं-रं-रं रक्त-वस्त्रा सरसिज-नयना पातु मां देवि दुर्गा॥१३॥

***

माँ दुर्गा के चमत्कारी मन्त्र

चिंतन जोशी

ब्रह्माजी ने मनुष्यों कि रक्षा हेतु मार्कण्डेय पुराण में कुछ परमगोपनीय साधन-कल्याणकारी देवी कवच एवं परम पवित्र उपायो का उल्लेख किया हैं, जिस्से साधारण से साधारण व्यक्ति जिसे माँ दुर्गा पूजा अर्चना के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं होने पर भी विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

माँ दुर्गा के इन मंत्रो का जाप प्रति दिन भी कर सकते हैं। पर नवरात्र में जाप करने से शीघ्र प्रभाव देखा गया हैं।

सर्व प्रकार कि बाधा मुक्ति हेतुः

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

अर्थात:- मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त तथा धन, धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा- इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

किसी भी प्रकार के संकट या बाधा कि आशंका होने पर इस मंत्र का प्रयोग करें। उक्त मंत्र का श्रद्धा से जाप करने से व्यक्ति सभी प्रकार की बाधा से मुक्त होकर धन-धान्य एवं पुत्र की प्राप्ति होती हैं।

बाधा शान्ति हेतुः

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥

अर्थात:- सर्वेश्वरि! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

विपत्ति नाश हेतुः

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थात:- शरण में आये हुए दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीडा दूर करनेवाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है।

पाप नाश हेतुः

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव॥

अर्थात:- देवि! जो अपनी ध्वनि से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके दैत्यों के तेज नष्ट किये देता है, वह तुम्हारा घण्टा हमलोगों की पापों से उसी प्रकार रक्षा करे, जैसे माता अपने पुत्रों की बुरे कर्मो से रक्षा करती है।

विपत्तिनाश और शुभ की प्राप्ति हेतुः

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

अर्थात:- वह कल्याण की साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मङ्गल करे तथा सारी आपत्तियों का नाश कर डाले।

भय नाश हेतुः

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्याहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्। त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥

अर्थात:- सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्ति यों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि! सब भयों से हमारी रक्षा करो; तुम्हें नमस्कार है। कात्यायनी! यह तीन लोचनों से विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करे। तुम्हें नमस्कार है। भद्रकाली! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होनेवाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमें बचाये। तुम्हें नमस्कार है।

सर्व प्रकार के कल्याण हेतुः

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थात:- नारायणी! आप सब प्रकार का मङ्गल प्रदान करनेवाली मङ्गलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थो को सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो। आपको नमस्कार हैं।

व्यक्ति दु:ख, दरिद्रता और भय से परेशान हो चाहकर भी या परीश्रम के उपरांत भी सफलता प्राप्त नहीं होरही हों तो उपरोक्त मंत्र का प्रयोग करें।

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति हेतुः

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥

अर्थात:- मन की इच्छा के अनुसार चलनेवाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसारसागर से तारनेवाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो।

शक्ति प्राप्ति हेतुः

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थात:- तुम सृष्टि, पालन और संहार करने वाली शक्ति भूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

रक्षा प्राप्ति हेतुः

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥

अर्थात:- देवि! आप शूल से हमारी रक्षा करें। अम्बिके! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हमलोगों की रक्षा करें।

देह को सुरक्षित रखने हेतु एवं उसे किसी भी प्रकार कि चोट या हानी या किसी भी प्रकार के अस्त्र-सस्त्र से सुरक्षित रखने हेतु इस मंत्र का श्रद्धा से नियम पूर्वक जाप करें।

विद्या प्राप्ति एवं मातृभाव हेतुः

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः
सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः
स्तव्यपरा परोक्तिः॥

अर्थात:- देवि! विश्वकि सम्पूर्ण विद्याएँ तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। जगत् में जितनी स्त्रियाँ हैं, वे सब तुम्हारी ही मूर्तियाँ हैं। जगदम्ब! एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थो से परे हो।

समस्त प्रकार कि विद्याओं की प्राप्ति हेतु और समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति के लिये इस मंत्रका पाठ करें।

प्रसन्नता की प्राप्ति हेतुः

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥

अर्थात:- विश्व की पीडा दूर करनेवाली देवि! हम तुम्हारे चरणों पर पडे हुए हैं, हमपर प्रसन्न होओ। त्रिलोकनिवासियों की पूजनीय परमेश्वरि! सब लोगों को वरदान दो।

आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति हेतुः

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

अर्थात:- मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो। परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि मेरे शत्रुओं का नाश करो।

महामारी नाश हेतुः

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥

अर्थात:- जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा- इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! तुम्हें मेरा नमस्कार हो।

रोग नाश हेतु:

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

अर्थातः- देवि! तुमहारे प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवाछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरणमें गये हुए मनुष्य दूसरोंको शरण देनेवाले हो जाते हैं।

विश्व की रक्षा हेतुः

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

अर्थातः- जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मीरूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों के हृदय में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जारूप से निवास करती हैं, उन आप भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं। देवि! आप सम्पूर्ण विश्व का पालन कीजिये।

विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश हेतु:

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥

अर्थातः- शरणागत की पीडा दूर करनेवाली देवि! हमपर प्रसन्न होओ। सम्पूर्ण जगत् की माता! प्रसन्न होओ। विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। देवि! तुम्हीं चराचर जगत् की अधीश्वरी हो।

विश्व के पाप-ताप निवारण हेतु:

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः। पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥

अर्थातः- देवि! प्रसन्न होओ। जैसे इस समय असुरों का वध करके तुमने शीघ्र ही हमारी रक्षा की है, उसी प्रकार सदा हमें शत्रुओं के भय से बचाओ। सम्पूर्ण जगत् का पाप नष्ट कर दो और उत्पात एवं पापों के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाले महामारी आदि बडे-बडे उपद्रवों को शीघ्र दूर करो।

विश्व के अशुभ तथा भय का विनाश करने हेतु:

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तु मलं बलं च। सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु॥

अर्थातः- जिनके अनुपम प्रभाव और बल का वर्णन करने में भगवान् शेषनाग, ब्रह्माजी तथा महादेवजी भी समर्थ नहीं हैं, वे भगवती चण्डिका सम्पूर्ण जगत् का पालन एवं अशुभ भय का नाश करने का विचार करें।

सामूहिक कल्याण हेतु:

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या। तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥

अर्थातः- सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति का समुदाय ही जिनका स्वरूप है तथा जिन देवी ने अपनी शक्ति से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर रखा है, समस्त देवताओं और महर्षियों की पूजनीया उन जगदम्बा को हम भक्ति पूर्वक नमस्कार करते हैं। वे हमलोगों का कल्याण करें।

कैसे करें मंत्र जाप :-

नवरात्रि के प्रतिपदा के दिन संकल्प लेकर प्रातःकाल स्नान करके पूर्व या उत्तर दिशा कि और मुख करके दुर्गा कि मूर्ति या चित्र की पंचोपचार या दक्षोपचार या षोड्षोपचार से पूजा करें।

शुद्ध-पवित्र आसन ग्रहण कर रुद्राक्ष, स्फटिक, तुलसी या चंदन कि माला से मंत्र का जाप 1, 5, 7, 11 माला जाप पूर्ण कर अपने कार्य उद्देश्य कि पूर्ति हेतु मां से प्राथना करें। संपूर्ण नवरात्रि में जाप करने से मनोवांच्छित कामना अवश्य पूरी होती हैं।

उपरोक्त मंत्र के विधि-विधान के अनुसार जाप करने से मां कि कृपा से व्यक्ति को पाप और कष्टों से छुटकारा मिलता हैं और मोक्ष प्राप्ति का मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सुगम प्रतित होता हैं।

नवरात्र में लाभदायक कन्या पूजन

✍ चिंतन जोशी

नवरात्र में कुमारिका पूजन-व्रत-अनुष्ठान को अनिवार्य अंग माना जाता हैं। नवरात्रमें कुंवारी कन्याओं का विधि-विधान से पूजन कर उनको भोजन कराके वस्त्र-दक्षिणा आदि भेट देकर संतुष्ट करना चाहिए। कुमारिका पूजन हेतु कन्या दो से दस वर्ष तक ही होनी चाहिए।

दो वर्ष की कन्या को कुमारी माना जाता हैं।

कुमारी पूजन से व्यक्ति के दु:ख-दरिद्रता का शमन होता हैं।

कुमारी के पूजन का मंत्र-

कुमारस्यचतत्त्वानिया सृजत्यपिलीलया।
कादीनपिचदेवांस्तांकुमारींपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो कुमार कार्तिकेय कि जननी एवं ब्रह्मादि देवताओं की लीलापूर्वक रचना करती हैं, उन कुमारी देवी कि मैं पूजा करता हूं।

तीन वर्ष की कन्या को त्रिमूर्ति माना जाता हैं।

त्रिमूर्ति के पूजन से व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम कि प्राप्ति होती हैं। इसी के साथ घर में धन-धान्य में वृद्धि होता हैं, तथा पुत्र-पौत्रों का लाभ प्राप्त होता हैं।

त्रिमूर्ति के पूजन का मंत्र-

सत्त्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्यातैर्हिनानास्वरूपिणी।
त्रिकालव्यापिनीशक्तिस्त्रिमूर्तिंपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सत्व, रज, तम तीनों गुणों के तीन रूप धारण करती हैं, जिनके अनेक रूप हैं एवं जो तीनों कालों में व्याप्त हैं, उन भगवती त्रिमूर्ति कि मैं पूजा करता हूँ।

चार वर्ष की कन्या को कल्याणी माना जाता हैं।

कल्याणी के पूजन से व्यक्ति को विजय, विद्या, सत्ता एवं सुख कि प्राप्ति होकर व्यक्ति कि समस्त कामनाए पूर्ण होती हैं।

कल्याणी के पूजन का मंत्र-

कल्याणकारिणीनित्यंभक्तानांपूजितानिशम्।
पूजयामिचतांभक्त्याकल्याणीम्सर्वकामदाम्॥

अर्थातः निरंतर सुपूजितहोने पर भक्तों का कल्याण करना जिसका स्वभाव ही है, सब मनोरथ पूर्ण करने वाली उन भगवती कल्याणी की मैं पूजा करता हूं।

पांच वर्ष की कन्या को रोहिणी माना जाता हैं।

रोहिणी के पूजन से व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य कि प्राप्ति होकर उसके समस्त रोग का विनाश होता हैं।

रोहिणी के पूजन का मंत्र-

रोहयन्तीचबीजानिप्राग्जन्मसंचितानिवै।

या देवी सर्वभूतानांरोहिणीम्पूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सब प्राणियों के संचित बीजों का रोहण करती हैं, उन भगवती रोहिणी कि मैं उपासना करता हूं।

छ:वर्ष की कन्या को कालिका माना जाता हैं।

कालिका के पूजन से व्यक्ति के विरोधि तथा शत्रु का शमन हो कर उसपर विजय प्राप्त होती हैं।

कालिका के पूजन का मंत्र-

काली कालयतेसर्वब्रह्माण्डंसचराचरम्।

कल्पान्तसमयेया तांकालिकाम्पूजयाम्यहम्॥

अर्थातः कल्प के अन्त में जो चर-अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने अंदर विलीन कर लेती हैं, उन भगवती कालिका कि मैं पूजा करता हूं।

सात वर्ष की कन्या को चण्डिका माना जाता हैं।

चण्डिका के पूजन से व्यक्ति को धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती हैं।

चण्डिका के पूजन का मंत्र-

चण्डिकांचण्डरूपांचचण्ड-मुण्ड विनाशिनीम्।

तांचण्डपापहरिणींचण्डिकांपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो चण्ड-मुण्ड का संहार करने वाली हैं तथा जिनकी कृपा से घोर पाप भी तत्काल नष्ट हो जाता है, उन भगवती चण्डिका कि मैं पूजा करता हूं।

आठ वर्ष की कन्या को शाम्भवी माना जाता हैं।

शाम्भवी के पूजन से व्यक्ति कि निर्धनता दूर होती हैं, वाद-विवाद में विजय प्राप्त होता हैं।

शाम्भवी के पूजन का मंत्र-

अकारणात्समुत्पत्तिर्यन्मयैः परिकीर्तिता।

यस्यास्तांसुखदांदेवींशाम्भवींपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः वेद जिनके प्राकट्य के विषय में कारण का अभाव बतलाते हैं तथा सबको सुखी बनाना जिनका स्वाभाविक गुण है, उन भगवती शाम्भवीकी मैं पूजा करता हूं।

नौ वर्ष की कन्या को दुर्गा माना जाता हैं।

दुर्गा के पूजन से व्यक्ति के दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति का दमन होता हैं। व्यक्ति के कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से सिद्धि होते हैं।

दुर्गा के पूजन का मंत्र-

दुर्गात्त्रायतिभक्तंया सदा दुर्गार्तिनाशिनी।

दुर्ज्ञेयासर्वदेवानांतांदुर्गापूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो भक्त को सदा संकट से बचाती हैं, दुःख दूर करना जिनका स्वभाव हैं तथा देवता लोग भी जिन्हें जानने में असमर्थ हैं, उन भगवती दुर्गा की मैं पूजा करता हूं।

दस वर्ष की कन्या को सुभद्रा माना जाता हैं।

सुभद्रा के पूजन से व्यक्ति को समस्त लोक में सुख प्राप्त होता हैं।

सुभद्रा के पूजन का मंत्र-

सुभद्राणि चभक्तानांकुरुतेपूजितासदा।

अभद्रनाशिनींदेवींसुभद्रांपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सुपूजित होने पर भक्तों का कल्याण करने में सदा संलग्न रहती हैं, उन अशुभविनाशिनीभगवती सुभद्रा की मैं पूजा करता हूं।

नवरात्रकी अष्टमी अथवा नवमी के दिन कुमारिका-पूजन करने पर विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

॥दुर्गा चालीसा॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी ॥१॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥२॥
शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥३॥
रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरशकरत जन अति सुखपावे ॥४॥
तुम संसार शक्ति लै कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥५॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥६॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥७॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥८॥
रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥९॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥१०॥

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो।
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो॥११॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं॥१२॥
क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा॥१३॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित नजात बखानी॥१४॥
मातंगी अरु धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥१५॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्नभालभव दुःखनिवारिणी॥१६॥
केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी॥१७॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥१८॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥१९॥
नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहुँलोक में डंका बाजत॥२०॥

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे॥२१॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥२२॥
रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥२३॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भईसहाय मातु तुम तब तब॥२४॥
अमरपुरी अरु बासव लोका।
तब महिमा सब रहें अशोका॥२५॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी॥२६॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावें।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें॥२७॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥२८॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योगन हो बिन शक्ति तुम्हारी॥२९॥
शंकर आचारज तप कीनो।
कामअरु क्रोधजीति सब लीनो॥३०॥

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहुकाल नहिं सुमिरो तुमको॥३१॥
शक्ति रूप का मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो॥३२॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्बभवानी॥३३॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥३४॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो॥३५॥

आशा तृष्णा निपट सतावें।
मोह मदादिक सब बिनशावें॥३६॥
शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥३७॥
करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला।३८॥
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ।
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ॥३९॥
श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परमपद पावै॥४०॥

दोहा: देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

शाप विमोचन मंत्र

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र के पाठ को करने से देवी की पूजा में की गयी किसी भी प्रकार त्रुटि (भूल) से मिला श्राप खत्म हो जाता है।

शाप-विमोचन संकल्प

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन मन्त्रस्य वसिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषय: सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्ति: त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तो मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

शापविमोचन मंत्र

ॐ (ह्रीं) रीं रेत:स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१॥
ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै,ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥२॥
ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥३॥
ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥४॥
ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥५॥
ॐ तं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥६॥
ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥७॥
ॐ जां जातिरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥८॥
ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥९॥
ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१०॥
ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफ़लदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥११॥
ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१२॥
ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१३॥
ॐ माँ मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमासहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१४॥
ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नम: शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१६॥
ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फ़ट स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नम:॥१८॥

इत्येवं हि महामन्त्रान पठित्वा परमेश्वर, चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशय:॥१९॥
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति य:, आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशय:॥२०॥
(श्रीदुर्गामार्पणामस्तु)

श्रीकृष्ण कृत देवी स्तुति

नवरात्र में श्रद्धा और प्रेमपूर्वक महाशक्ति भगवती देवी की पूजा-उपासना करने से यह निर्गुण स्वरूपा देवी पृथ्वी के समस्त जीवों पर दया करके स्वयं ही सगुणभाव को प्राप्त होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश रूप से उत्पत्ति, पालन और संहार कार्य करती हैं।

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥१॥
कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
परब्रह्मास्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥२॥
तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्पर॥३॥

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला॥४॥

अर्थातः आप विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, आप सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो।

यद्यपि वस्तुतः आप स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। आप परब्रह्म स्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो।

परम तेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने आप शरीर धारण करती हों। आप सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो। आप सर्वाबीजस्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। आप सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करने वाली एवं सर्व मंगलों कि भी मंगल हो।

मां के चरणों निवास करते समस्त हैं तीर्थ

चिंतन जोशी

त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम कि प्रति मूर्ति जन्म देने वाली मां अपनी संतान को नौ महिने गर्भ में उसका पोषण कर, असहनीय प्रसव कष्ट सहकर उसे जन्म देती हैं। मां के इस त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम का बदला चाहकर भी कोई नहीं चुका सकता।

समस्त व्यक्ति कि प्रथन गुरु मां होती हैं। क्योकि मां से व्यक्ति को जीवन के आदर्श और संस्कार आदि ज्ञान प्राप्त होता हैं। हमारे धर्म शास्त्रो में उल्लेख मिलता हैं कि **उपाध्याओं से दस गुना श्रेष्ठ आचार्य होते हैं, एवं आचार्य से सौ गुना श्रेष्ठ पिता और पिता से हजार गुना श्रेष्ठ माता होती है।** क्योकि मां के शरीर में सभी देवताओं और सभी तीर्थों का वास होता है। इसी लिए विश्व कि सर्वश्रेष्ठ भारतीय संस्कृति में केवल मां को भगवान के समान माना गया हैं। इस लिये मां पूज्य, स्तुति योग्य और आह्वान करने योग्य होती हैं।

महाभारत में भी उल्लेख मिलता हैं कि जब यक्ष ने युधिष्ठिर से सवाल किया कि भूमि से भी भारी कौन हैं? तो युधिष्ठिर ने उत्तर दिया

माता गुरुतरा भूमेः।

अर्थातः मां इस भूमि से भी कहीं अधिक भारी होती हैं।

आदि शंकराचार्य का कथन हैं '

कुपुत्रो जायेत यद्यपि कुमाता न भवति।

अर्थातः पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है, पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।

भगवान श्री रामका वचन हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थातः जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद् में उल्लेख किया गया हैं।

मातृ देवो भवः

शतपथ ब्राह्मण के वचन

मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद

अर्थातः जिसके पास माता, पिता और गुरु जेसे तीन उत्तम शिक्षक हों वहीं मनुष्य सही अर्थ में मानव बनता हैं।

संसार में मातृमान वह होता है, जिसकी माता गर्भाधान से लेकर जब तक गर्भ के शेष विधि-विधान पूरे न हो जाएं, तब तक संयमीत और सुशील व्यवहार करे। क्योकि मातृ गर्भ में संस्कारित होने का सबसे बड़ा आदर्श उदाहरण महाभारत में अभिमन्यु का देखने को मिलता हैं, जिसने अपनी मां से गर्भ में ही चक्रव्यूह तोड़ने का उपाय सीख लिया था।

इसी मां कि ममता और नि:स्वार्थ प्रेम को पाने के लिये मनुष्य हि नहीं देवता भी तरसते हैं। इस लिये बार-बार अवतार लेकर अपनी लीलाएं बिखेरने के लिये पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। इस्से ज्ञात होता हैं कि मां के चरणों में ही सभी तीर्थ का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

इस लिये बच्चा सबसे पहले जो बोल नीकलते हैं, वह मां शब्द होता हैं, एक बार में ही झटके से बच्चे के मुंह से मां निकल जाता है यानि मां का उच्चारण भी सबसे आसान। अन्य सभी सब्दो में उसे थोडी कठिनाई होती हैं जिस कारण वह उन शब्दो का उच्चराण धीरे-धीरे सिखता हैं। सबसे बडा उदाहरण हैं, जो आपने आये दिन देखा सुना और आजमाय होगा, व्यक्ति जब परेशानी में होता हैं, कष्ट झेल रहा होता हैं, या आकस्मिक संकट आने, किसी आघात से शरीर पर चोट लग जाये तो पर सबसे पेहले मां को याद करता हैं। इस लिये मां को कष्ट देने वाली संतान को दैवि आपदा, दुःख, कष्ट भोगना पडता हैं। अपने मां का निरादर न करें और उनकी सेवा अवश्य करें।

पंच देवोपासना में उपयुक्त एवं निषिद्ध पत्र पुष्प

✍ चिंतन जोशी

देव-पूजामें उपयुक्त और निषिद्ध पत्र पुष्प से सम्बन्धित शास्त्रोक्त मत

पञ्चदेव पूजामें भगवान गणेश, गौरी, विष्णु, सूर्य और भगवान शिवकी पूजा की जाती हैं। पाठकों के मार्गदर्शन हेतु इन देवी-देवताओंके पूजन में शास्त्रोंक्त विधान से उपयुक्त और निषिद्ध पत्र-पुष्प आदिका उल्लेख किया जा रहा हैं

गणेशजी के लिये उपयुक्त पत्र-पुष्प का चयन

विद्वानों के मतानुशार शास्त्रोंक्त विधान से गणेशजीको तुलसी छोड़कर सभी पत्र-पुष्प प्रिय हैं। अतः तुलसी छोडकर सभी उपयुक्त पत्र-पुष्प गणेशजी को अर्पण किये जा सकते हैं।

गणपतिको दूर्वा अधिक प्रिय हैं। इस लिए गणेशजी के पूजन में सफेद या हरी दूर्वा अवश्य चढ़ानी चाहिये । दूर्वा की तीन या पाँच पत्ती होनी चाहिए। गणेशजी को तुलसी कभी न चढ़ाये ।

न तुलस्या गणाधिपम्

(पद्मपुराण)

भावार्थ: तुलसी से गणेशजी की पूजा कभी नहीं करनी चाहिये।

गणेश तुलसी पत्र दुर्गा नैव तु दूर्वाया

(कार्तिक माहात्म्य)

भावार्थ: गणेशजी की तुलसी पत्र से एवं दुर्गाजी की दूर्वा पूजा नहीं करनी चाहिये।

गणेशजी की पूजा में मन्दार के लाल फूल चढ़ाने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। लाल पुष्प के अतिरिक्त पूजा में श्वेत,पीले फूल भी चढ़ाए जाते

* गणपतिको नैवेद्यमें लड्डू (मोदक) अधिक प्रिय हैं।

देवी के लिये उपयुक्त पत्र-पुष्प का चयन

विद्वानों के मतानुशार जो पत्र-पुष्प भगवान शिवजी को प्रिय हैं या जो शिवजी को अर्पण किये जाते हैं वे सभी पत्र-पुष्प देवी भगवती को भी प्रिय हैं ।

देवी भगवती को अपामार्ग अधिक प्रिय हैं, इस लिए अधिकतर देवी पूजन में अपामार्ग विशेष रुप से चढ़ाया जाता हैं।

इस के अलावा विद्वानो का कथन हैं की जो पत्र-पुष्प शास्त्रोक्त विधान से भगवान शिव की पूजा में निषेध हैं उसे भी देवी पूजन में चढ़ाये जा सकते हैं।

देवी भगवती को सभी प्रकार के लाल फूल चढ़ाएं जा सकते हैं क्योकि लाल रंग के सभी फूल भगवतीको प्रिय हैं तथा सुगन्धित समस्त श्वेत फूल भी भगवतीको अधिक प्रिय हैं।

देवी भगवती के पूजन में चमेली, मदार, केसर, बेला, श्वेत और लाल फूल, श्वेत कमल, पलाश, तगर, अशोक, चंपा, मौलसिरी, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम और अपराजित (अर्थात शंखपुष्पी) आदिका उपयोग किया जा सकता हैं।

कुछ जानकारों का कथन हैं की देवी भगवती के पूजन में आक और मदार यह दो फूलों को निषेध हैं। यहीं कारण हैं की उक्त दोनों फूल को विभिन्न मत के कारण देवी दुर्गा के पूजन मे उपयोग भी किय जाते हैं और निषिद्ध भी माने जाते हैं।

यदि किसी कारण वश जब अन्य उपयुक्त फूल न मिले तब इन दोनोंका उपयोग किया जा सकता हैं ।

देवी दुर्गा को छोड़कर देवियों पर इन दोनों को नहीं चढ़ाना चाहिए। लेकिन देवी दुर्गा पर चढ़ाया जा सकता हैं। क्योंकि कुछ जानकारों का मत हैं की दुर्गाकी पूजामें इन दोनोंका विधान शास्त्रोक्त हैं।

शमी, अशोक, कर्णिकार (कनियार या अमलतास), गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिन्दुवार, शल्लकी, माधव आदि लताऍं, कुशकी मंजरियॉं, बिल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया, कमल ये फूल देवी भगवती को प्रिय हैं।

आक और मदारकी तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल उपयुक्त एवं प्रतिषिद्ध हैं अर्थात ये शास्त्रोंसे विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं।

* विहित-प्रतिशिद्धके सम्बन्धके तत्त्वसागरसंहिताक में उल्लेख हैं कि जब शास्त्रोंसे विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलोंसे पूजा कि जा सकती हैं।

शिव पूजनके लिये उपयुक्त पत्र-पुष्प का चयन

भगवान शिव के पूजन में फूल चढ़ानेका विशेष महत्त्व हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुशार कहां जाता हैंम की तपः, शील, सर्वगुणसम्पन्न वेदमें निष्णात किसी ब्राह्मणको सौ सुवर्ण दान करने से जो फल प्राप्त होता हैं, वह फल भगवान शिवलिंग पर सौ फूल चढ़ा देनेसे प्राप्त हो जाता हैं।

भगवान शिव के पूजन में केतकी एवं केवड़ेका निषेध माना गया हैं।

धर्म-शास्त्रो में शिव पूजन में विशेष फुलोके चढ़ानेसे मिलनेवाले फलका अनुक्रम बतलाया गया हैं जो इस प्रकार हैं..

- दस सुवर्ण मुद्रा के बराबर सुवर्ण **दान करने का** फल एक आकके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार आकके फूलोंको चढ़ाने का फल एक कनेर के फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार कनेरके फूलोंको चढ़ाने का फल एक बिल्वपत्रको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार बिल्वपत्रोंको चढ़ाने का फल एक गूमाफूल (द्रोण-पुष्प) को चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार गूमासे बढ़कर एक चिचिड़ा (अपामार्गो) फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार चिचिड़ो (अपामार्गो) से बढ़कर एक कुशके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार कुश-पुष्पोंसे बढ़कर एक शमीका पत्ता चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार शमीके पत्तोंसे बढ़कर एक नीलकमलके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार नीलकमलोंसे बढ़कर एक धतूरा चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार धतूरोंसे बढ़कर एक शमीके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।

** पौराणिक मान्यता हैं की समस्त फूलोंकी जातियोंमें सबसे बढ़कर नीलकमल होता हैं।

व्यासमुनि ने कनेरकी श्रेणीमें चमेली, मौलसिरी, पाटला, मदार, श्वेतकमल, शमीके फूल और बड़ी भटकटैयाको रखा हैं और धतूरेकी श्रेणीमें नागचम्पा और पुंनागको रखा हैं।

शास्त्रोंने भगवान शिवकी पूजामें मौलसिरी (बक-बकुल) के फूलको ही अधिक महत्त्व दिया हैं।

भविष्यपुराण में भगवान शिव के पूजन में चढ़ाने योग्य अन्य जिन फूलोंके का उल्लेख किया हैं वह इस प्रकार हैं..

करवीर (अर्थात कनेर), मौलसिरी, धतूरा, पाढर, बड़ी कटेरी, कुरैया, कास, मन्दार, अपराजिता, शमीका फूल, कुब्जक, शंखपुष्पी, चिचिड़ा, कमल, चमेली, चम्पा, नागचम्पा, खस, तगर, नागकेसर, किंकिरात (कटसरैया), गूमा, शीशम, गूलर, जयन्ती, बेला, पलाश, बेलपत्ता, कुसुम्भ-पुष्प, कुङ्कुम अर्थात् केसर, नीलकमल और लाल कमल । जल-थल में उत्पन्न जितने सुगन्धित फूल हैं, सभी भगवान शंकरको प्रिय हैं।

शिव अर्चामें निषिद्ध पत्र-पुष्प का उल्लेख इस प्रकार किया गया हैं..

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, शिरीष, तिन्तिणी, कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, केतकी, वसंत ऋतुमें खिलनेवाला कंद-विशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, शिरीष सर्ज और दोपहरियाके फूल भगवान शिव को नहीं चढ़ाने चाहिये ।

वीरमित्रोदयमें भगवान शिव के पूजन में चढ़ाने योग्य अन्य जिन फूलोंके का उल्लेख किया हैं वह कदम्ब, बकुल और कुन्दपर हैं ।

विशेष नोट: इन पुष्पोंके विषय में शास्त्रों के अध्ययन में कहीं उपयुक्त और कहीं निषेध मिलता हैं।

अतः पाठकों के मार्गदर्शन हेतु विशेष शास्त्रोक्त मत द्वारा निष्कर्ष प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

कदम्ब पुष्प के विषय में शास्त्रोक्त मत:-

कदम्बकुसुमैः शम्भुमुन्मतैः सर्वसिद्धिभाक्।

अर्थात: कदम्ब और धतूरेके फूलोंसे शिव पूजा करनेसे समस्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

कदम्ब पुष्प के विषय में अन्य शास्त्रोक्त मत:-

अत्यन्तप्रतिषिद्धानि कुसुमानि शिवार्चने ।
कदम्बं फल्गुपुष्पं च केतकं च शिरीषकम् ॥

अर्थात: कदम्ब तथा फल्गु (गन्ध आदि से हीन) के फूल शिवके पूजनमें विशेष रुप से निषिद्ध हैं।

विशेष मंतव्य: इस तरह एक वचनसे कदम्बका शिवपूजनमें उपयुक्त होने का उल्लेख मिलता हैं और दूसरे वचनसे निषेध मिलता हैं, जो सामान्य रुप से परस्पर विरुद्ध प्रतीत होता हैं।

उक्त विरुद्ध मतों के परिहार उल्लेख वीरमित्रोदयमें इस प्रकार मिलता हैं। संबंधित शास्त्र में कदम्ब फूल के विषय में जो विधान किया गया हैं, वह केवल भाद्रपदमास या मास विशेष के लिए किया गया हैं ।

कदम्ब पुष्प के विषय में देवीपुराण में वर्णित शास्त्रोक्त मत:-

कदम्बैश्चम्पकैरेवं नभस्ये सर्वकामदा।'

अर्थात: भाद्रपदमासमें कदम्ब और चम्पा के फूल से शिवकी पूजा करनेसे सभी इच्छाए पूरी होती हैं।

उक्त शास्त्रोक्त वचन के पश्चयात सभी स्थितीया स्पष्ट हैं दोनों वचनोंमें कोई विरोध नहीं रह जाता की भाद्रपदमासमें विधि उपयुक्त हो जाती हैं और भाद्रपदमाससे भिन्न मासोंमें निषेध हो जाता हैं।

बकुल(मौलसिरी) से संबंधित अन्य शास्त्रोंक्त मत:-

उपरोक्त मत बकुल-सम्बन्धी विधि निषेधमें किया गया हैं। आचारेन्दुमें बक का अर्थ बकुल किया गया हैं और बकुल का अर्थ हैं मौलसिरी किया गया हैं।

'बकपुष्पेण चैकेन शैवमर्चन्मुत्तमम्।

अर्थात: बकुल पुष्प शिवपूजन में उपयुक्त हैं।

बकुल(मौलसिरी) से संबंधित अन्य शास्त्रोंक्त मत:-

बकुलैर्नार्चयेद् देवम्।

अर्थात: बकुल पुष्प शिवपूजन में वर्जित हैं।

पहले वचनमें मौलसिरीका शिवपूजनमें उपयुक्त बताया गया हैं और दूसरे वचनमें निषेध ।

इन वचनों में भी विरोध प्रतीत होता हैं। इसका परिहार कालविशेष से स्वतः हो जाता हैं, क्योंकि विद्वानों का मत हैं की शास्त्रों में मौलसिरी चढ़ानेका विधान सायंकाल दिया गया हैं-

'सायाह्ने बकुलं शुभम्।

अर्थात: पूजन में बकुल पुष्प का प्रयोग सांय काल में उपयुक्त हैं।

विशेष मंतव्य: इस तरह उक्त वचन से स्पष्ट हो जाता हैं की बकुल पुष्प सायंकालमें विधि चरितार्थ हो जाती हैं और भिन्न समयमें निषेध चरितार्थ हो जाता हैं।

कुन्द फूलके लिये वीरमित्रोदयमें उल्लेख हैं:

कुन्दपुष्पस्य निषेधेऽपि माघे निषेधाभावः ।

अर्थात: माघ महीने में भगवान शिव पर कुन्द चढ़ाया जा सकता हैं, शेष महीनोंमें निषेध हैं ।

विष्णु पूजनमें उपयुक्त पत्र-पुष्प का चयन

रत्न-मणि, स्वर्ण निर्मित फूलों की अपेक्षा भगवान विष्णुको तुलसीदल अधिक प्रिय हैं।

भगवान विष्णुको कौस्तुभ मणि से भी तुलसी अधिक प्रिय हैं। भगवान विष्णुको श्याम तुलसी प्रिय हैं ही लेकिन गौरी तुलसी अधिक प्रिय हैं।

स्वयं भगवान विष्णु का वचन हैं की तुलसीदल न के बिना कनेर, बेला, चम्पा, कमल और मणि आदि से निर्मित फूल भी मुझे प्रिय नहीं ।

धर्म शास्त्रों में यहां तक उल्लेख हैं की तुलसीसे पूजित शिवलिङ्ग या विष्णुकी प्रतिमाके दर्शनमात्रसे ब्रह्महत्या का पाप भी दूर हो जाता हैं।

धर्म शास्त्रमें भगवान विष्णु पर चढ़ाने योग्य पत्रोंका अनुक्रम में तुलसीकी महत्वता अधिक बतलायी हैं,

- चिचिड़ेकी पत्तीसे भंगरैयाकी पत्ती उत्तम मानी गयी हैं।
- भंगरैयाकी पत्ती से उत्तम खैरकी पत्ती मानी गयी हैं।
- खैरकी पत्ती से उत्तम शमीकी पत्ती मानी गयी हैं।
- शमीकी पत्ती से उत्तम दूर्वाकी पत्ती मानी गयी हैं।
- दूर्वाकी पत्ती से उत्तम कुशकी पत्ती मानी गयी हैं।
- कुशकी पत्ती से उत्तम दौनाकी पत्ती मानी गयी हैं।
- दौनाकी पत्ती से उत्तम बेलकी पत्ती मानी गयी हैं।
- बेलकी पत्ती से उत्तम तुलसीदल माना गया हैं।

नरसिंहपुराणमें फूलोंका जो अनुक्रम बताया गया हैं वह इस प्रकार हैं:-

- दस सुवर्ण के बराबर सुवर्ण दान करने का फल एक गूमाके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार गूमाके फूलोंको चढ़ाने का फल एक खैर के फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार खैरके फूलोंको चढ़ाने का फल एक शमी के फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार शमीके फूलोंको चढ़ाने का फल एक सफेद कनेरके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार सफेद कनेर फूलोंको चढ़ाने का फल अपेक्षा एक कुशके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार कुशके फूलोंको चढ़ाने का फल एक वनवेलाके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार वनवेलाके फूलोंको चढ़ाने का फल एक चम्पाके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार चम्पाके फूलोंको चढ़ाने का फल एक अशोक के फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार अशोक के फूलोंको चढ़ाने का फल एक माधवीके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार माधवीके फूलोंको चढ़ाने का फल एक वासन्तियोंके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार वासन्तियोंके फूलोंको चढ़ाने का फल एक गोजटाके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार गोजटाके फूलोंको चढ़ाने का फल एक मालतीके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार मालतीके फूलोंको चढ़ाने का फल एक लाल त्रिसंधि (फगुनिया) फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार लाल त्रिसंधि (फगुनिया)के फूलोंको चढ़ाने का फल एक सफेद त्रिसंधि (फगुनिया) फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार सफेद त्रिसंधि (फगुनिया)के फूलोंको चढ़ाने का फल एक सफेद कुन्दके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार कुन्दके फूलोंको चढ़ाने का फल एक कमलके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार कमलके फूलोंको चढ़ाने का फल एक बेला के फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- हजार बेलाके फूलोंको चढ़ाने का फल एक चमेली के फूलको चढ़ानेसे मिल जाता हैं।

विद्वानो के मतानुशार शास्त्रों में उल्लेख हैं की भगवान विष्णु ने स्वयं अपने श्रीमुख से कहां हैं की उन्हें मालती, मौलसिरी, अशोक, कालीनेवारी (शेफालिका), बसंतीनेवारी (नव मल्लिका), आम्रात (आमड़ा), तगर, आस्फोत, बेल, मधुमल्लिका, जूही, अष्टपद, स्कन्द, कदम्ब, मधुपिङ्गल, पाटला, चम्पा, ह्रद्य, लवंग, अतिमुक्तक (माधवी), केवड़ा, कुरब, बेल, सायंकालमें फूलनेवाला श्वेत कमल (कह्लार) और अड़ूसा फूल उन्हें लक्ष्मीकी तरह प्रिय हैं।

शास्त्रोंक्त मतानुशार कमलका फूल तो भगवान विष्णुको अधिक प्रिय हैं। विष्णुरहस्यमें उल्लेख किया गया हैं कि कमलका एक फूल चढ़ा देनेसे मनुष्य के करोड़ो वर्षके पापोंका भगवान नाश कर देते हैं।

धर्म शास्त्रों में भी कमलके अनेक भेद बताये गये हैं, कमल के भेदोके फल भी भिन्न-भिन्न हैं।

उल्लेख किया गया हैं की...

- सौ लाल कमल को चढ़ानेका फल एक श्वेत कमलके चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- लाखों श्वेत कमलो को चढ़ानेका फल एक नीलकमलके चढ़ानेसे मिल जाता हैं।
- करोड़ो नीलकमलों को चढ़ानेका फल एक पद्मसे प्राप्त हो जाता हैं।
- धार्मिक मान्यताओं के अनुशार यदि कोई अपने जीवन में एक पद्म भी चढ़ा दे, तो उसे विष्णुलोक की प्राप्ति निश्चित होती हैं।

भगवान विष्णु के परम भक्त **प्रल्हाद** ने स्वयं बलीको भगवान विष्णु के प्रिय फूलों का वर्णन क्रमशः इस प्रकार किया हैं सुवर्णजाती (जाती), शतपुष्पा (शताह्वा), चमेली (सुमनाः), कुंद, कठचंपा (चारुपट), बाण, चम्पा, अशोक, कनेर, जूही, पारिभद्र, पाटला, मौलसिरी, अपराजिता (गिरिशालिनी), तिलक, अड़हुल, पीले रंगके समस्त फूल (पीतक) और तगर।

विभिन्न पुराणोंमे भगवान विष्णु के प्रिय फूलों का उल्लेख उक्त नामों को छोड़कर इस प्रकार मिलता हैं अगस्त्य आमकी मंजरी, मालती, बेला, जूही, (माधवी) अतिमुक्तक, यावन्ति, कुब्जई, करण्टक (पीली कटसरैया), धव (धातक), वाण (काली कटसरैया), बर्बरमल्लिका (बेलाका भेद) और अड़ूसा ।

विष्णुधर्मोत्तरमें उल्लेख हैं कि भगवान विष्णु को श्वेत और पीले फूल अधिक प्रिय हैं, इसके अलावालाल फूलोंमें दोपहरिया (बन्धूक), केसर, कुङ्कुम और अड़हुलके फूल, लाल कनेर और बर्रे (बर्रेका फूल पीला-लाल) उन्हें प्रिय हैं, अतः इन्हे अर्पित किया जा सकता हैं ।

आज के आधुनिक युग में विभिन्न तकनिक से कुछ सफेद फूलोंको लाल उगा दिया जाता हैं। अतः लाल रंग होनेमात्रसे वे किसी देवी-देवता के अप्रिय नही हो जाते, इस लिए उन्हे भगवानको अर्पण करने से पूर्व किसी जानकार से सलाह विमर्श कर लेना चाहिये ।

कुछ सफेद फूलोंके बीच भिन्न-भिन्न वर्ण होते हैं। पारिजात जैसे कुछ फूलों के बीचमें लाल वर्ण होते हैं। बीचमें भिन्न वर्ण होनेसे भी उन्हे सफेद फूल माना जाना चाहिये और वे भगवान विष्णु को अर्पण करने योग्य हैं। इसके अलावा तीसी, भूचम्पक, पुरन्ध्रि, गोकर्ण और नागकर्ण भी अर्पण किये जा सकते हैं।

विशेष मंतव्य: फूलों के चयनके लिये एक उपाय बतलाया हैं। उल्लेख हैं कि जो फूल शास्त्रसे निषिद्ध न हो और गन्ध तथा रंग-रूपसे संयुक्त हो उन्हे भगवान विष्णुको अर्पण किया जा सकता हैं।

विष्णुके पूजन के लिये निषिद्ध फूल का वर्ण क्रमशः इस प्रकार हैं आक, धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, कुरैया, सेमल, शिरीष, चिचिड़ा (कोशातकी), कैथ, लाङ्गुली, सहिजन, कचनार, बरगद, गूलर, पाकर, पीपर और अमड़ा (कपीतन) और घर पर उगाये गये कनेर और दोपहरियोके फूल को चढ़ाना निषेध हैं अतः विष्णु भगवानपर उक्त फूलोंको चढ़ाना वर्जित हैं।

सूर्य पूजनमें उपयुक्त पत्र-पुष्प का चयन

भविष्यपुराणमे उल्लेख हैं कि भगवान सूर्यदेव को यदि एक आक का फूल अर्पण किया जाय तो दस सुवर्ण मूद्रा चढ़ानेका फल मिल जाता हैं।

फूलोंका जो अनुक्रम बताया गया हैं वह इस प्रकार हैं:-

- हजार अड़हुलके फूलोंसे बढ़क एक कनेरका फूल होता हैं।
- हजार कनेरके फूलोंसे बढ़क एक बिल्वपत्र होता हैं।
- हजार बिल्वपत्रोंसे फूलोंसे बढ़क एक पद्म (सफेद रंगसे अलग रंगवाला) फूल होता हैं।
- हजार पद्मके फूलोंसे बढ़क एक मौलसिरीका फूल होता हैं।
- हजार मौलसिरीके फूलोंसे बढ़क एक कुशका फूल होता हैं।
- हजार कुशके फूलोंसे बढ़क एक शमीका फूल होता हैं।
- हजार शमीके फूलोंसे बढ़क एक नीलकमलका फूल होता हैं।
- हजार नील व रक्त कमलके फूलोंसे बढ़क एक केसर और लाल कनेरका फूल होता हैं।

विशेष नोट: शास्त्रों में फूलों के सम्बन्ध में कहां गया हैं की यदि उक्त पुष्प न मिले तो बदले में उसकी पत्तियां चढ़ाई जा सकती हैं और यदि पत्तियां भी न मिले तो उसके फल चढ़ाए जा सकते हैं।

* विद्वानो का कथन हैं की फूलकी अपेक्षा फूलकी माला चढ़ाने से दुगुना फल प्राप्त होता हैं।

सन्ध्याकाल में कदम्बके फूल और मुकुरके फूल अर्पण करे और दिनमें शेष समस्त फूल अर्पण करे । बेला दिनमें और रातमे भी चढ़ाया जा सकता हैं।

धर्मगंथों में सूर्यदेव के पूजन हेतु फूलों का जो वर्णन किया गया हैं वह इस प्रकार हैं:

सूर्यदेव पर बेला, मालती, काश, माधवी, पाटला, कनेर, जपा, यावन्ति, कुब्जक, कर्णिकार, पीली कटसरैया (कुरण्टक), चम्पा, रोलक, कुन्द, काली कटसरैया (वाण), बर्बरमल्लिका, अशोक, तिलक, लोध, अरूषा, कमल, मौलसिरी, अगस्त्य और पलाशके फूल तथा दूर्वा अर्पण करनी चाहिए।

सूर्यदेव पर चढ़ाने योग्य अन्य फूलों का वर्णन अनुक्रम में इस प्रकार हैं, शमीका फूल व बड़ी कटेरीका फूल एक समान माने जाते हैं। करवीरकी कोटिमें चमेली, मौलसिरी और पाटला बताये हैं। श्वेत कमल और मन्दारकी श्रेणी एक बताई गई हैं। इसी तरह नागकेसर, चम्पा, पुन्नाग और मुकुर को भी एक समान माना गया हैं।

सूर्यदेव पर चढ़ाने योग्य पत्र में बेल पत्र, शमीका पत्ता, भँगरैयाकी पत्ती, तमालपत्र, तुलसी और काली तुलसीके पत्ते तथा कमलके पत्ते सूर्यभगवानकी पूजामें उपयुक्त हैं।

सूर्यदेवके पूजन में निषिद्ध फूल का वर्णन अनुक्रम में इस प्रकार हैं, गुंजा (कृष्णला), धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, तगर और अमड़ा को सूर्य पूजन में नहीं चढ़ाने चाहिये ।

वीरमित्रोदय में सूर्यपर में निषेध फूलों का वर्णन इस प्रकार मिलता हैं

कृष्णलोन्मत्तकं काञ्ची तथा च गिरिकर्णिका ।
न कण्टकारिपुष्पं च तथान्यद् गन्धवर्जितम ॥
देवीनामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा ।
न चाम्रातकजैः पुष्पैरर्चनीयो दिवाकरः ॥

फूलोंके चयनकी कसौटी सभी फूलोंका नाम गिनाना कठिन हैं। सब फूल सब जगह आसानी से मिलते भी नही । अतः शास्त्रों में योग्य फूलोंके चुनावके लिये एक सरल उपाय बताया हैं कि

येषां न प्रतिषेधोऽस्ति गन्धवर्नान्वितानि च ।
तानि पुष्पाणि देयानि भानवे लोकभानवे ॥

अर्थात: जौ फूल निषेध कोटिमें नही हैं और रंग-रूप तथा सुगन्धसे युक्त हैं उन सभी फूलोंको भगवानको चढ़ाया जा सकता हैं ।

शरद पूर्णिमा (29-अक्टूबर-2012)

चिंतन जोशी

हिंदू पंचांग के अनुसार पूरे वर्ष में बारह पूर्णिमा आती हैं। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपने पूर्ण आकार में होता है। पूर्णिमा पर चंद्रमा का अतुल्य सौंदर्य देखते ही बनता है। विद्वानो के अनुसार पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पूर्ण आकार में होने के कारण वर्ष में आने वाली सभी पूर्णिमा पर्व के समान हैं। लेकिन इन सभी पूर्णिमा में आश्विन मास कि पूर्णिमा सबसे श्रेष्ठ मानी गई है। यह पूर्णिमा शरद ऋतु में आने के कारण इसे शरद पूर्णिमा भी कहते हैं। शरद ऋतु की इस पूर्णिमा को पूर्ण चंद्र का अश्विनी नक्षत्र से संयोग होता है। अश्विनी जो नक्षत्र क्रम में प्रथम नक्षत्र हैं, जिसके स्वामी अश्विनीकुमार है।

कथा के अनुशार च्यवन ऋषि को आरोग्य का पाठ और औषधि का ज्ञान अश्विनीकुमारों ने ही दिया था। यही ज्ञान आज हजारों वर्ष बाद भी हमारे पास अनमोल धरोहर के रूप में संचित है। अश्विनीकुमार आरोग्य के स्वामी हैं और पूर्ण चंद्रमा अमृत का स्रोत। यही कारण है कि ऐसा माना जाता है कि इस पूर्णिमा को ब्रह्मांड से अमृत की वर्षा होती है।

खीर का भोग

शरद पूर्णिमा की रात में गाय के दूध से बनी खीर को चंद्रमा कि चांदनी में रखकर उसे प्रसाद-स्वरूप ग्रहण किया जाता है। पूर्णिमा की चांदनी में 'अमृत' का अंश होता है, इस लिये मान्यता यह है कि ऐसा करने से चंद्रमा की अमृत की बूंदें भोजन में आ जाती हैं जिसका सेवन करने से सभी प्रकार की बीमारियां आदि दूर हो जाती हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी इसकी चांदनी के औषधीय महत्व का वर्णन मिलता है। रखकर दूध से बनी खीर को चांदनी के में असाध्य रोगों की दवाएं खिलाई जाती है।

शरद पूर्णिमा की कथा:



एक साहुकार के दो पुत्रियाँ थी। दोनो पुत्रियाँ शरद पुर्णिमा का व्रत रखती थी। परन्तु बडी पुत्री पूरा व्रत करती थी और छोटी पुत्री अधुरा व्रत करती थी। परिणाम यह हुआ कि छोटी पुत्री की सन्तान पैदा होते ही मर जाती थी। उसने पंडितो से इसका कारण पूछा तो उन्होने बताया की तुम पूर्णिमा का अधूरा व्रत करती थी जिसके कारण तुम्हारी सन्तान पैदा होते ही मर जाती हैं। पूर्णिमा का पुरा विधिपुर्वक करने से तुम्हारी सन्तान जीवित रह सकती हैं। उसने पंतिडतो कि सलाह पर पूर्णिमा का पूरा व्रत विधिपूर्वक किया। उसके लडका हुआ परन्तु शीघ्र ही मर गया । उसने लडके को लकडी के पट्टे पर लिटाकर ऊपर से कपडा ढक दिया। फिर बडी बहन को बुलाकर लाई और बैठने के लिए वही पट्टा दे दिया। बडी बहन जब पीढे पर बैठने लगी जो उसका घाघरा बच्चे का छू गया, बच्चा घाघरा छुते ही रोने लगा। बडी बहन बोली तुम मुझे कंलक लगाना चाहती थी। मेरे बैठने से यह मर जाता तब छोटी बहन बोली यह तो पहले से मरा हुआ था। तेरे ही भाग्य से यह पुनः जीवित हो गया हैं । तेरे पुण्य से ही यह अभी जीवित हुआ हैं। उसके बाद से शरद पूर्णिमा का पूरा व्रत करने का प्रचलन चल निकला।

कोजागरी पूर्णिमा (29-अक्टूबर-2012)

चिंतन जोशी

आश्विन मास की पूर्णिमा को 'कोजागर व्रत' रखा जाता हैं। इस लिये इस पूर्णिमा को कोजागरी पूर्णिमा भी कहा जाता है।

इस दिन व्यक्ति विधिपूर्वक स्नान करके व्रत-उपवास रखने का विधान हैं। इस दिन श्रद्धा भाव से ताँबे या मिट्टी के कलश पर वस्त्र से ढँकी हुई स्वर्णमयी लक्ष्मी की प्रतिमा को स्थापित किया जाता हैं। फिर लक्ष्मी जी कि भिन्न-भिन्न उपचारों से पूज-अर्चना करने का विधान हैं। सायंकाल में चन्द्रोदय होने पर सोने, चाँदी अथवा मिट्टी के घी से भरे हुए दीपक जलाने कि परंपरा हैं।

इस दिन घी मिश्रित खीर को पात्रों में डालकर उसे चन्द्रमा की चाँदनी में रखा जाता हैं। एक प्रहर (३ घंटे) खीर को चाँदनी में रखनेके बाद में उसे लक्ष्मीजी को सारी खीर अर्पण कि जाती हैं। तत्पश्चात भक्तिपूर्वक सात्विक ब्राह्मणों को खीर का भोजन कराएँ और उनके साथ ही मांगलिक गीत गाकर तथा मंगलमय कार्य करते हुए रात्रि जागरण किया जाता हैं।

मान्यता हैं कि पूर्णिमा कि मध्यरात्रि में देवी महालक्ष्मी अपने हाथो में वर और अभय वरदान लिए भूलोक में विचरती हैं। इस दिन जो भक्तजन जाग रहा होता हैं उसे माता लक्ष्मी धन-संपत्ति प्रदान करती हैं।

दुर्गा पूजन में रखे सावधानियां

- माता दुर्गा की पूजा करने वाले साधकों को उपासना संबंधी इन बातों का ध्यान रखना लाभदायक रहता हैं।
  विद्वानो के मत में शास्त्रोक्त विधान से एक ही घर में तीन शक्तियों की पूजा करना वर्जित हैं।
- देवीपीठ पर वाद्य-शहनाई का वादन नहीं करें।
- भगवती दुर्गा का आह्वान बिल्व पत्र, बिल्व शाखा या त्रिशूल पर ही किया जाना चाहिए।
- देवी दुर्गा को केवल लाल कनेर और सुगंधित पुष्प अति प्रिय हैं। इस लिये आराधना में सुगंधित पुष्प ही लें।
- नवरात्र में कलश की स्थापना केवल दिन में करनी चाहिए।
- मां भगवती की प्रतिमा हमेशा लाल वस्त्र से बिराजीत रहे।
- देवी को भी लाल रंग की चुनरी चढाएं।
  नवरात्र में नवार्ण मंत्र जप देवी मां के सामने लाल आसन पर बैठकर लाल चंदन की माला से करना लाभ प्रद होता हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नवग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण करता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर मां महा सदा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारत्मन शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षाहोती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगड सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को **सर्व कार्य सिद्धि कवच** देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- http://gk.yolasite.com/ and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुशार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com http://gk.yolasite.com/ and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- भाग्योदय यंत्र
- मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- गृहस्थ सुख यंत्र
- शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- रोग निवृत्ति यंत्र
- साधना सिद्धि यंत्र
- शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Buy and View Product Online

Visit. www.gurutvakaryalay.com

Kawach....

सर्वजन वशीकरण कवच

Sarva Jan Vasikan Kawach copy

~~Rs : 2000/-~~ Rs :1450

श्री कृष्ण बीसा कवच

Shri Krushna Bisa Kawach

~~Rs : 2500/-~~ Rs :1900

अष्ट लक्ष्मी कवच

Ashta Lakshmi Kawach.

~~Rs : 3000/-~~ Rs :1250

अमोद्य महामृत्युंजय कवच

Amogh Mahamrutyunjay Kawach

~~Rs : 25000/-~~ Rs :10900

View more >>

Yantra....



Saraswati Yantra (2"X2" Copper)

~~Rs : 750/-~~ Rs :460



Ram Raksha Yantra (3"X3" Gold Plated)

~~Rs : 1650/-~~ Rs :1450



Vyapar Vruddhi Yantra (6"X6" Gold Plated)

~~Rs : 7500/-~~ Rs :3600



Vyapar Vruddhi Yantra (6"X6" Copper)

~~Rs : 5000/-~~ Rs :1900

View more >>

Rudraksh....



Real 9 Mukhi Rudraksh

~~Rs : 910/-~~ Rs :1250



Real 7 Face Rudraksh

~~Rs : 500/-~~ Rs :300



Real 14 Face Rudraksh

~~Rs : 12500/-~~ Rs :10500



Real 13 Mukhi Rudraksh

~~Rs : 5500/-~~ Rs :4600

View more >>

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 255 से 10900 तक**

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 730 से 10900 तक**

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	460	1" X 1"	370	1" X 1"	255
2" X 2"	820	2" X 2"	640	2" X 2"	460
3" X 3"	1650	3" X 3"	1090	3" X 3"	730
4" X 4"	2350	4" X 4"	1650	4" X 4"	1090
6" X 6"	3600	6" X 6"	2800	6" X 6"	1900
9" X 9"	6400	9" X 9"	5100	9" X 9"	3250
12" X12"	10800	12" X12"	8200	12" X12"	6400

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

मंत्र सिद्ध रूद्राक्ष

Rudraksh List	Rate In Indian Rupee	Rudraksh List	Rate In Indian Rupee
एकमुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2800, 5500	आठ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	820,1250
एकमुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	750,1050, 1250,	आठ मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	1900
दो मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	30,50,75	नौ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	910,1250
दो मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	नौ मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2050
दो मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	450,1250	दस मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1050,1250
तीन मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	30,50,75,	दस मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2100
तीन मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	ग्यारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1250,
तीन मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	450,1250,	ग्यारह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2750,
चार मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	25,55,75,	बारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1900,
चार मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	बारह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2750,
पंच मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	25,55,	तेरह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	3500, 4500,
पंच मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	225, 550,	तेरह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	6400,
छह मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	25,55,75,	चौदह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	10500
छह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	चौदह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	14500
सात मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	75, 155,	गौरीशंकर रूद्राक्ष	1450
सात मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	225, 450,	गणेश रुद्राक्ष (नेपाल)	550
सात मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	1250	गणेश रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	750

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‍भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‍भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुशार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 730 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 1900

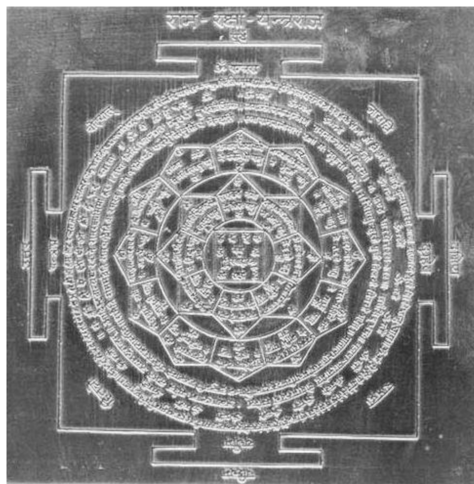
राम रक्षा यंत्र

राम रक्षा यंत्र सभी भय, बाधाओं से मुक्ति व कार्यो में सफलता प्राप्ति हेतु उत्तम यंत्र हैं। जिसके प्रयोग से धन लाभ होता हैं व व्यक्ति का सर्वांगी विकार होकर उसे सुख-समृद्धि, मानसम्मान की प्राप्ति होती हैं। राम रक्षा यंत्र सभी प्रकार के अशुभ प्रभाव को दूर कर व्यक्ति को जीवन की सभी प्रकार की कठिनाइयों से रक्षा करता हैं। विद्वानो के मत से जो व्यक्ति भगवान राम के भक्त हैं या श्री हनुमानजी के भक्त हैं उन्हें अपने निवास स्थान, व्यवसायीक स्थान पर राम रक्षा यंत्र को अवश्य स्थापीत करना चाहिये जिससे आने वाले संकटो से रक्षा हो उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो सके एवं उनकी समस्त आदि भौतिक व आध्यात्मिक मनोकामनाएं पूर्ण हो सके।



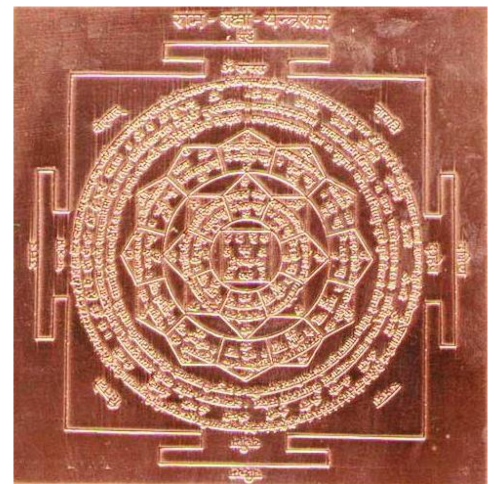
ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस

(Gold Plated)



ताम्र पत्र पर रजत पोलीस

(Silver Plated)



ताम्र पत्र पर

(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1090	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1650	4” X 4”	1090
6” X 6”	3600	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	6400	9” X 9”	5100	9” X 9”	3250
12” X12”	10800	12” X12”	8200	12” X12”	6400

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची	
श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं।

मूल्य:- Rs. 1650 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

मासिक राशि फल

✍ चिंतन जोशी

मेष: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : आर्थिक मामलों में समय उतार-चढ़ाव वाला हो सकता है। कठिन परिश्रम व आत्मविश्वास से धन प्राप्ति होगी। महत्व पूर्ण कार्यो को स्थिगीत करना या किसी और को देना नुक्शान देह हो सकता हैं। नौकरी-व्यवसाय में बदलाव का विचार कर सकते है। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता हैं। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : नौकरी व्यवसाय में उच्च अधिकारी एवं सहकर्मी के कार्य परेशानीयों संभव हैं। सावधान रहें। नौकरी, व्यापार, पूंजी निवेश इत्यादि से आकस्मिक रुप से धन प्राप्ति हो सकती हैं । आपके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नया व्यवसाय या नौकरी प्राप्त हो सकती हैं या आपके कार्य क्षेत्र में नये बदलाव हो सकते हैं। स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी।

वृषभ: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : आपको सभी क्षेत्र में लाभ प्राप्त हो सकते हैं। नौकरी-व्यवसाय की आमदनी में वृद्धि होने से आर्थिक स्थिती में सुधार होगा। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा आपके लिए लाभप्रद होगी।ऋण देने से बचें। पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण हो सकता हैं। आपकी मानसिक अस्थितार महत्वपूर्ण निर्णय लेने में विलंब कर सकती हैं। शत्रुओं पर आपका प्रभाव रहेगा।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : अपने दैनिक कार्य में आप उर्जा व उत्साह की कमी महसूस कर सकते हैं इस लिए सकारात्मक दृष्टीकोण अपनाए। शत्रु पक्ष से झूठा आरोप लग सकते हैं। परिवार में भी कलेश बढ़ सकता हैं। अपने प्रियजनो से वाद-विवाद में उलझने से बचने का प्रयास करे। नये लोगो से मित्रता होगी। विपरीत लिंग के प्रति आपका आकर्षण अधिक रहेगा।



मिथुन: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : आपकी महत्वपूर्ण योजनाए पूर्ण हो सकती हैं। इस अवधि में आपको प्रयासो से अधिक धनलाभ प्राप्त हो सकते हैं। समाज में आपका मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में तेजी से वृद्धि होने के योग हैं। अपने सहकर्मी के प्रति उदारनीति अपना ने का प्रयास करें। आपके भौतिक सुख साधनो में वृद्धि होगी। जीवन साथी से पूर्णसहयोग प्राप्त होगा।

16 से 31 अक्टूबर 2012 : आय से अधिक खर्च करने के प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करें अन्यथा कर्जदार हो सकते हैं। अपने इष्ट मित्रों एवं प्रियजनो से बात करते समय विशेष सावधानी रखें। उत्तम वाहन सुख के योग भी बन रहे हैं। जीवन साथी से छोटी-छोटी बातो पर मन-मुटाव हो सकता हैं। खाने- पीने का ध्यान रखे नहीं तो स्वास्थ्य नरम हो सकता है ।

कर्क: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : आकस्मिक धन प्राप्ति होगी जिस्से आर्थिक स्थिती में सुधार होगा। आपके दैनिक सुख-साधनो में वृद्धि होगी। संतान पक्ष सुख के लिए समय शुभ हैं। आपके सामाजित पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विदेश या दूरस्थ स्थानो से धन प्राप्ति के योग हैं। छोटी-छोटी समस्याओं के कारण दांपत्य जीवन सुखमय रहने के संकेत हैं। इष्ट मित्रों की सहयोग से नए लोगो सें मित्रता होने के योग हैं।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : आपको नया व्यवसाय या नौकरी प्राप्त हो सकती हैं या आपके कार्य क्षेत्र के विस्तार या नये बदलाव हो सकते हैं। आपको शत्रु एवं विरोधी पक्ष से परेशानी के कारण अपने महत्वपूर्ण कार्यों में विलंब हो सकता हैं। आपको अत्याधिक भागदौड़ के कारण आपको थकावट हो सकती हैं। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह तय हो सकता हैं। आपका स्वास्थ्य में उतार-चढाव हो सकता हैं ।

सिंह: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : धन की प्राप्ति से आर्थिक स्थिती में सुधार होगा। व्यवसाये से जुडे लोगो को विशेष लाभ प्राप्त हो सकता हैं। परिवार में खुसी का माहोल रहेगा। मित्र एवं परिवार के सहयोग से धनलाभ हो सकता हैं। शत्रु एवं विरोधीयों के कारण आपको परेशानी हो सकती हैं। मौसम के परिवर्तन से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता हैं। जीवन साथी से सुखों की प्राप्ति होगी।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : नई नौकरी प्राप्त हो सकती हैं, व्यवसाय में हैं तो उन्नती कि मार्ग प्राप्त होंगे। आपके आयके स्रोत विस्तारीत होंगे। समाज में आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। जो आपके लिए आर्थिक लाभप्रद हो सकता हैं। आपके रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूरे हो सकते हैं। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा प्रियजनो से वाद-विवास संभव हैं।

कन्या: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : आपके आयके स्रोत विस्तारीत होंगे। इष्ट मित्रों के सहयोग से नये मित्र बन सकते हैं। कार्यक्षेत्र में स्थान परिवर्तन कि योजना हानिकारक हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों के साथ आपके रिश्तों में कुछ खटास आ सकती है। जीवन साथी का व्यवहार आपके प्रति उदाशीन हो सकता हैं। अपनी बुद्धिमता से परिवार की सुख -शान्ति बनाये रखने का प्रयास करें।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : गलत निर्णयो के कारण आर्थिक पक्ष कमजोर हो सकता हैं। साझेदारी से संबंधित कार्यो को स्थगित करना उचित रहेगा। थोडे समय के लिये परिवर्तन को स्थिगीत करने का प्रयास करे। खान-पान का विशेष ध्यान रखें। परिवार के किसी सदस्या का स्वास्थ्य चिंता का विषय हो सकता हैं। जीवन साथी से सुख कि प्रासी होगी ।

तुला: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : नौकरी-व्यवसाय में बदलाव का विचार कर सकते है। आपको कर्मक्षेत्र में विशेष पद प्राप्ति के योग व धन वृद्धि के योग बन रहे हैं। भूमि-भवन के क्रय विक्रय से धन लाभ होगा। ग्रहों के प्रभाव से अत्याधिक व्यय होने के योग बन रहे हैं। स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी फिर भी खाने- पीने का विशेष ध्यान रखना हितकारी रहेगा। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : पूर्व काल में किये गये कार्य एवं रुके हुवे कार्य से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होगा। नौकरी में उच्च अधिकारि एवं सहकर्मच का सहयोग प्राप्त होगा। कोर्ट-कचहरी के कार्यो में सफलता प्राप्त होने के योग हैं। आपके सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दांपत्य सुख में वृद्धि होगी। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य आपको चिंतित कर सकता हैं।

वृश्चिक: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : पूंजि निवेश द्वारा आकस्मिक धन हानि के योग बन रहे है इस लिए पूंजि निवेष से जुडे महत्वपूर्ण निर्णय लेने से बचें। नौकरी व्यवसाय में उच्च अधिकारी एवं सहकर्मी के कार्य परेशानीयों संभव हैं। सावधान रहें। अपने क्रोध पर नियंत्रण रखे अन्यथा आपका स्वभाव आपके प्रियजनो को विशेष कष्ट दे सकता हैं। प्रेम संबंधित मामलो में सफलता प्राप्त हो सकती हैं।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : इष्ट मित्र एवं परिवार के सदस्यो से सहयोग लेना पड़ सकता हैं। अपनी अधिक खर्च करने कि प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करें। महत्व पूर्ण कार्यो को स्थिगीत करना या किसी और को देना नुक्शान देह हो सकता हैं। शत्रु आपके उपर हावि होने का असफल प्रयास कर सकते हैं। दांपत्य जीवन सुख में वृद्धि के अच्छे संकेत हैं।

धनु: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनेगें जिस्से आर्थिक स्थिती में सुधार होगा। नया व्यवसाय या नौकरी प्राप्त हो सकती हैं या आपके कार्य क्षेत्र में नये बदलाव हो सकते हैं। कोर्ट-कचहरी के कायों में सफलता प्राप्त होगी। पैतृक संपत्ति की प्राप्ति हेतु लाभप्रद रहेगा। स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी फिर भी खाने- पीने का विशेष ध्यान रखना हितकारी रहेगा। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : नौकरी, व्यापार, पूंजी निवेश इत्यादि से आकस्मिक रुप से धन प्राप्ति हो सकती हैं। इष्ट मित्र एवं परिवार के सदस्यो से महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सहयोग लेना पड़ सकता हैं। आपके सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मौसम के बदलाव से अपने खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे अन्यथा आपका का स्वास्थ्य नरम हो सकता है ।

मकर: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : जोखिम भरे कार्य करने से बचे। व्यवसाय से संबंधित का कार्यों से कठिन परिश्रम के उपरांत सफता प्राप्ति के संकेत हैं। पूंजि निवेश इत्यादि कार्यो में सोच-विचार कर लिया गया उचित निर्णय आपके हित में रहेगा। किसी से वाद-विवाद में उलझने से बचने का प्रयास करे। खाने- पीने का ध्यान रखे नहीं तो स्वास्थ्य नरम हो सकता है।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : भूमि-भवन संबंधित कार्य एवं निर्णयों को थोडे समय के लिए स्थगित करना पड सकता हैं। थोडे समय के लिए उच्चाधिकारी एवं सहकर्मीयों का विरोध सहना पड़ सकता हैं। व्यवसायीक कार्यो में प्रतिस्पर्धियों के कारण बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। विरोधी एवं शत्रु पक्ष से परेशानी हो सकती हैं। प्रेम संबंधित मामलो में भी सफलता प्राप्त कर सकते है।

कुंभ: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : आपको कार्यक्षेत्र में मानसिक अस्थिरता का अनुभव हो सकता हैं। परिवार के किसी सदस्या का स्वास्थ्य नरम सकता हैं। अपनी महत्वपूर्ण योजनाओं को गोपनीय रखने का प्रयास करें नहीं, तो आपके प्रतिस्पर्धि इसका लाभ उठाने से पीछे नहीं हटेगें। संतान पक्ष कमजोर होने के योग हैं। प्रेम संबंधित मामलो में थोडे प्रयासो से सफलता मिल सकती हैं।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : पुराने भुगतान की पुनः प्राप्ति से आर्थिक पक्ष सुधरेगा। भूमि-भवन सें संबंधित कार्यो में विशेष रुचि रहेगी। इस समय अवधि में अत्याधिक भ्रमणशील हो सकते हैं। नए व्यवसायीक रिश्तों के लिए उत्तम योग हैं। शत्रु एवं विरोधी पक्ष से आपको परेशानी संभव हैं। दूरस्थ स्थानो की धार्मिक यात्राएं सफल हो सकती हैं। दांपत्य जीवन में थोडा तनाव संभव हैं ।

मीन: 1 से 15 अक्टूबर 2012 : नौकरी-व्यवसाय से संबंधित कार्यो में सफलता के योग हैं। भूमि-भवन से संबंधिअ मामलो में विलंब हो सकता हैं। अनाचश्यक खर्च करने से बचे। परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य चिंताकारक हो सकता हैं। दांपत्य जीवन व प्रेम संबंधों में मतभेद होने के योग बन रहे हैं। इस लिए धैर्य और संयम से काम ले जल्दबाजी परेशानी का कारण बन सकती हैं।



16 से 31 अक्टूबर 2012 : यदि आप नौकरी में हैं तो पदौन्नति हो सकती हैं। व्यापार उद्योग से जुडे लोगो को नये अवसर प्राप्त होंगे। भूमि-भवन-वाहन से संबंधित कार्यो में लाभ प्राप्त होगा। पारीवारिक रिश्तों में कुछ खटास आ सकती है। इस लिए अधिक समय अपने परिवार के साथ बिताने का प्रयास करे। कोर्ट-कचहरी के कार्यो में अतिरिक्त सावधानी बरते। दूरस्थ स्थानो की व्यवसायीक यात्रा होने के योग हैं।



अक्टूबर 2012 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	सोम	आश्विन	कृष्ण	प्रतिपदा	10:03:51	रेवति	17:10:24	ध्रुव	08:44:09	कौलव	10:03:51	मीन	17:11:00
2	मंगल	आश्विन	कृष्ण	द्वितीया	11:49:22	अश्विनी	19:36:15	व्याघात	09:02:30	गर	11:49:22	मेष	-
3	बुध	आश्विन	कृष्ण	तृतीया	13:59:17	भरणी	22:25:32	हर्षण	09:40:32	विष्टि	13:59:17	मेष	29:10:00
4	गुरु	आश्विन	कृष्ण	चतुर्थी	16:30:45	कृतिका	25:29:49	वज्र	10:34:30	बालव	16:30:45	वृष	-
5	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	पंचमी	19:11:36	रोहिणि	28:39:44	सिद्धि	11:37:51	तैतिल	19:11:36	वृष	-
6	शनि	आश्विन	कृष्ण	षष्ठी	21:48:43	मृगशिरा	31:41:13	व्यतिपात	12:40:17	गर	08:30:54	वृष	18:12:00
7	रवि	आश्विन	कृष्ण	सप्तमी	24:06:08	मृगशिरा	07:40:50	वरियान	13:32:23	विष्टि	10:59:35	मिथुन	-
8	सोम	आश्विन	कृष्ण	अष्टमी	25:52:38	आद्रा	10:19:49	परिग्रह	14:05:46	बालव	13:02:57	मिथुन	29:55:00
9	मंगल	आश्विन	कृष्ण	नवमी	26:55:04	पुनर्वसु	12:22:16	शिव	14:08:12	तैतिल	14:28:49	कर्क	-
10	बुध	आश्विन	कृष्ण	दशमी	27:10:39	पुष्य	13:41:35	सिद्ध	13:35:57	वणिज	15:09:42	कर्क	-
11	गुरु	आश्विन	कृष्ण	एकादशी	26:34:39	आश्लेषा	14:12:09	साध्य	12:24:21	बव	14:59:02	कर्क	14:12:00
12	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	द्वादशी	25:12:44	मघा	13:54:55	शुभ	10:34:18	कौलव	13:59:37	सिंह	-
13	शनि	आश्विन	कृष्ण	त्रयोदशी	23:09:34	पूर्वाफाल्गुनी	12:53:38	शुक्ल	08:07:42	गर	12:16:08	सिंह	18:32:00
14	रवि	आश्विन	कृष्ण	चतुर्दशी	20:32:40	उत्तराफाल्गुनी	11:14:51	इन्द्र	25:46:44	विष्टि	09:55:10	कन्या	-
15	सोम	आश्विन	कृष्ण	अमावस्या	17:32:20	हस्त	09:09:50	वैधृति	22:06:05	चतुष्पाद	07:05:09	कन्या	19:59:00
16	मंगल	आश्विन	शुक्ल	प्रतिपदा	14:17:56	चित्रा	06:45:08	विषकुंभ	18:15:08	बव	14:17:56	तुला	-
17	बुध	आश्विन	शुक्ल	द्वितीया	10:58:52	विशाखा	25:42:00	प्रीति	14:21:22	कौलव	10:58:52	तुला	20:18:00
18	गुरु	आश्विन	शुक्ल	तृतीया	07:44:29	अनुराधा	23:20:07	आयुष्मान	10:33:14	गर	07:44:29	वृश्चिक	-
19	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	चतुर्थी	25:57:18	जेष्ठा	21:16:03	सौभाग्य	06:54:29	बव	15:16:03	वृश्चिक	21:16:00
20	शनि	आश्विन	शुक्ल	षष्ठी	23:37:19	मूल	19:35:26	अतिगंड	24:31:41	कौलव	12:43:52	धनु	-
21	रवि	आश्विन	शुक्ल	सप्तमी	21:46:23	पूर्वाषाढ़	18:22:01	सुकर्मा	21:52:01	गर	10:37:57	धनु	24:08:00

22	सोम	आश्विन	शुक्ल	अष्टमी	20:26:25	उत्तराषाढ़	17:38:36	धृति	19:38:36	विष्टि	09:02:58	मकर	-
23	मंगल	आश्विन	शुक्ल	नवमी	19:38:19	श्रवण	17:28:56	शूल	17:50:30	बालव	07:58:56	मकर	29:34:00
24	बुध	आश्विन	शुक्ल	दशमी	19:23:02	धनिष्ठा	17:48:21	गंड	16:26:47	तैतिल	07:26:47	कुंभ	-
25	गुरु	आश्विन	शुक्ल	एकादशी	19:38:42	शतभिषा	18:38:42	वृद्धि	15:28:24	वणिज	07:27:27	कुंभ	-
26	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	द्वादशी	20:24:23	पूर्वाभाद्रपद	19:58:08	ध्रुव	14:53:27	बव	07:58:08	कुंभ	13:36:00
27	शनि	आश्विन	शुक्ल	त्रयोदशी	21:38:11	उत्तराभाद्रपद	21:44:45	व्याघात	14:39:07	कौलव	08:57:52	मीन	-
28	रवि	आश्विन	शुक्ल	चतुर्दशी	23:18:15	रेवति	23:55:45	हर्षण	14:44:30	गर	10:24:49	मीन	23:56:00
29	सोम	आश्विन	शुक्ल	पूर्णिमा	25:19:53	अश्विनी	26:28:19	वज्र	15:09:34	विष्टि	12:15:12	मेष	-
30	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	प्रतिपदा	27:41:12	भरणी	29:20:35	सिद्धि	15:49:39	बालव	14:28:05	मेष	-
31	बुध	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	30:16:36	कृतिका	32:24:06	व्यतिपात	16:40:59	तैतिल	16:57:51	मेष	-

अक्टूबर-2012 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	सोम	आश्विन	कृष्ण	प्रतिपदा	10:03:51	शास्त्रोक्त मत से चातुर्मास के व्रतधारी के लिए आश्विन में दूध वर्जित हैं। द्वितीया का श्राद्ध, दूज का श्राद्ध, अशून्यशयन व्रत, फसली सन् 1420 आरंभ,
2	मंगल	आश्विन	कृष्ण	द्वितीया	11:49:22	तृतीया श्राद्ध, तीज का श्राद्ध, महात्मा गांधी जयंती, शास्त्री जयंती
3	बुध	आश्विन	कृष्ण	तृतीया	13:59:17	तृतीया श्राद्ध, तीज का श्राद्ध दोपहर 1:59 बजे तक, भरणी श्राद्ध, संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (चं.उ.रा.7:53)
4	गुरु	आश्विन	कृष्ण	चतुर्थी	16:30:45	चतुर्थी का श्राद्ध, चौथ का श्राद्ध, कृत्तिका श्राद्ध
5	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	पंचमी	19:11:36	पंचमी का श्राद्ध, चंद्र षष्ठी व्रत,
6	शनि	आश्विन	कृष्ण	षष्ठी	21:48:43	षष्ठी का श्राद्ध, छठ का श्राद्ध, कपिला षष्ठी,
7	रवि	आश्विन	कृष्ण	सप्तमी	24:06:08	सप्तमी का श्राद्ध, सातम का श्राद्ध, भानु सप्तमी पर्व (विद्वानों के मत से सूर्य ग्रहण तुल्य फलप्रद), काली जयंती, साहिब सप्तमी,
8	सोम	आश्विन	कृष्ण	अष्टमी	25:52:38	अष्टमी का श्राद्ध, आठम का श्राद्ध, कालाष्टमी व्रत, महालक्ष्मी अष्टमी,महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, गयामध्याष्टमी, जीवित्पुत्रिका व्रत, जीउतिया व्रत, गजगौरी अष्टमी,
9	मंगल	आश्विन	कृष्ण	नवमी	26:55:04	नवमी का श्राद्ध, नोम का श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्रियों (सुहागिनों) का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत का पारण,
10	बुध	आश्विन	कृष्ण	दशमी	27:10:39	दशमी का श्राद्ध,
11	गुरु	आश्विन	कृष्ण	एकादशी	26:34:39	इंदिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध, ग्यारस का श्राद्ध, वैधृति महापात सायं 6.10 से रात्रि 11.41 बजे तक,
12	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	द्वादशी	25:12:44	एकादशी व्रत (निम्बार्क वैष्णव), द्वादशी का श्राद्ध, बारस का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, संन्यासियों-यति व वैष्णवों का श्राद्ध, रेंटिया बारस, तिथिवासर प्रातः 8.14 बजे तक,
13	शनि	आश्विन	कृष्ण	त्रयोदशी	23:09:34	त्रयोदशी का श्राद्ध, तेरस का श्राद्ध, शनि-प्रदोष व्रत (पुत्र-प्राप्ति हेतु श्रेष्ठ), मासिक शिवरात्रि व्रत, आचार्य श्रीराम शर्मा जयंती

14	रवि	आश्विन	कृष्ण	चतुर्दशी	20:32:40	दुर्मरण श्राद्ध, (आज के दिन शस्त्र, विष, अग्नि, जल, दुर्घटना आदि से अकाल मृत्यु में मरे व्यक्ति का श्राद्ध), चतुर्दशी का श्राद्ध, चौदस का श्राद्ध शास्त्रोक्त मत से अमावस्या में किया जाना शास्त्रोचित रहेगा, किन्तु मतान्तर से कुछ स्थानों पर चतुर्दशी श्राद्ध,
15	सोम	आश्विन	कृष्ण	अमावस्या	17:32:20	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम आश्विनी अमावस्या, पितृविसर्जनी अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, आज अज्ञात मरण तिथिवाले पूर्वजों का श्राद्ध, सोमवती अमावस्या पुण्यकाल सायं 5:32 बजे तक, महालया समाप्त
16	मंगल	आश्विन	शुक्ल	प्रतिपदा	14:17:56	शारदीय नवरात्र प्रारंभ, प्रथम नवरात्र कलश स्थापना, घट स्थापना, नाती द्वारा नाना-नानी का श्राद्ध अपराह्न 2.17 बजे तक, महाराज अग्रसेन जयंती, विश्व खाद्य दिवस,
17	बुध	आश्विन	शुक्ल	द्वितीया	10:58:52	द्वितीय नवरात्र, नवीन चंद्र दर्शन, रेमन्त पूजन, तुला संक्रान्ति के स्नान-दान का पुण्यकाल सूर्योदय से प्रातः 9.51 बजे तक,
18	गुरु	आश्विन	शुक्ल	तृतीया	07:44:29	तृतीय नवरात्र, सिंदूर तृतीया, वरदविनायक चतुर्थी व्रत, माना चतुर्थी (प.बंगाल, ओड़ीसा), रथोत्सव चतुर्थी,
19	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	चतुर्थी	25:57:18	पंचम नवरात्र, उपांग ललिता पंचमी व्रत,
20	शनि	आश्विन	शुक्ल	षष्ठी	23:37:19	छठा नवरात्र, स्कन्द (कुमार) षष्ठी व्रत, बिल्वाभिमंत्रण षष्ठी, शारदीय दुर्गा पूजा प्रारम्भ, गजगौरी व्रत, तपषष्ठी (ओड़ीसा), मूल नक्षत्र में सरस्वती देवी का आवाहन
21	रवि	आश्विन	शुक्ल	सप्तमी	21:46:23	सप्तम नवरात्र, माँ सरस्वती आह्वान, शारदीय दुर्गापूजा (प.बंगाल), पत्रिका-प्रवेश, महासप्तमी व्रत, महानिशा पूजा, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में सरस्वती देवी की पूजा, भानु-सप्तमी पर्व (सूर्यग्रहण तुल्य फलप्रद),
22	सोम	आश्विन	शुक्ल	अष्टमी	20:26:25	अष्टम नवरात्र, श्रीदुर्गा अष्टमी व्रत, महाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा माता दर्शन-पूजन एवं परिक्रमा (काशी), भद्रकाली अष्टमी, सरस्वती पूजन, सूर्य सिद्धान्तानुसार महानिशा पूजन, उत्तराषाढ़ नक्षत्र में सरस्वती देवी के लिये बलिदान, कुमारिका-पूजन, सूर्य सायन वृश्चिक राशि में शेष रात्रि 5.45 बजे, सौर हेमंत ऋतु प्रारंभ,
23	मंगल	आश्विन	शुक्ल	नवमी	19:38:19	नवम नवरात्र, दुर्गा महानवमी व्रत, दुर्गा नवमी, सरस्वती विसर्जन, त्रिशूलनी पूजन (मिथिलांचल), एकवीरा पूजा, नवरात्र व्रत पूर्ण, श्रवण नक्षत्र में सरस्वती देवी का विसर्जन, महाव्यतिपात प्रातः 9.22 से दिन

						3.12 बजे तक
24	बुध	आश्विन	शुक्ल	दशमी	19:23:02	विजया दशमी, दशहरा, शमी एवं अपाजिता-पूजा, सीमोल्लंघन, शस्त्र पूजन, बौद्धावतार दशमी, साईंबाबा महासमाधि दिवस, माधवाचार्य जयंती, श्रीमहाकालेश्वर की सवारी (उज्जयिनी), विजय मुहूर्त में प्रस्थान, संयुक्त राष्ट्र दिवस
25	गुरु	आश्विन	शुक्ल	एकादशी	19:38:42	पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप,
26	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	द्वादशी	20:24:23	पद्मनाभ द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, पक्षवर्धिनी महाद्वादशी व्रत, गणेशशंकर विद्यार्थी जयंती,
27	शनि	आश्विन	शुक्ल	त्रयोदशी	21:38:11	शनि-प्रदोष व्रत,
28	रवि	आश्विन	शुक्ल	चतुर्दशी	23:18:15	वाराह चतुर्दशी, शाकम्भरी देवी मेला
29	सोम	आश्विन	शुक्ल	पूर्णिमा	25:19:53	स्नान-दान-व्रत हेतु उत्तम आश्विनी पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, कोजागिरी लक्ष्मी पूजा, लक्ष्मी एवं इन्द्र पूजन, महारास पूर्णिमा, विद्यासागर जन्म, महर्षि वाल्मीकि जयंती, अग्र महाकुम्भ (अग्रोहा), श्रीसत्यनारायण व्रत-कथा, जयप्रकाश नारायण जयंती, कुमार पूर्णिमा (ओड़ीसा), नवान्न पूर्णिमा, डाकोर जी का मेला (गुजरात), कार्तिक स्नान प्रारंभ, कार्तिक मास के लिए आकाशदीप-दान प्रारंभ,
30	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	प्रतिपदा	27:41:12	पवित्र कार्तिक मास प्रारंभ, दामोदर मास प्रारंभ, शास्त्रोक्त मत से चातुर्मास के व्रती के लिए कार्तिक में दाल खाना वर्जित, कार्तिक में मासपर्यन्त तुलसीदल से श्रीहरि की पूजा करना उत्तम, तुलसी माता को पूरे मास दीप-दान करें।
31	बुध	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	30:16:36	अशून्य शयन व्रत, सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती, संकल्प दिवस, इंदिरा गांधी स्मृति दिवस, एकता दिवस

गणेश लक्ष्मी यंत्र

प्राण-प्रतिष्ठित गणेश लक्ष्मी यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में पूजन स्थान, गल्ला या अलमारी में स्थापित करने व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। यंत्र के प्रभाव से भाग्य में उन्नति, मान-प्रतिष्ठा एवं व्यापर में वृद्धि होती हैं एवं आर्थिक स्थिमें सुधार होता हैं। गणेश लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करने से भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी का संयुक्त आशीर्वाद प्राप्त होता हैं। **Rs.730 से Rs.10900 तक**

मंगल यंत्र से ऋण मुक्ति

मंगल यंत्र को जमीन-जायदाद के विवादो को हल करने के काम में लाभ देता हैं, इस के अतिरिक्त व्यक्ति को **ऋण मुक्ति** हेतु मंगल साधना से अति शीध्र लाभ प्राप्त होता हैं। विवाह आदि में मंगली जातकों के कल्याण के लिए मंगल यंत्र की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। प्राण प्रतिष्ठित मंगल यंत्र के पूजन से भाग्योदय, शरीर में खून की कमी, गर्भपात से बचाव, बुखार, चेचक, पागलपन, सूजन और घाव, यौन शक्ति में वृद्धि, शत्रु विजय, तंत्र मंत्र के दुष्ट प्रभा, भूत-प्रेत भय, वाहन दुर्घटनाओं, हमला, चोरी इत्यादी से बचाव होता हैं। **मूल्य मात्र Rs- 730**

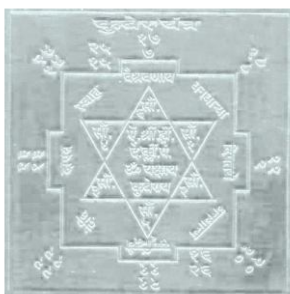
कुबेर यंत्र

कुबेर यंत्र के पूजन से स्वर्ण लाभ, रत्न लाभ, पैतृक सम्पत्ती एवं गड़े हुए धन से लाभ प्राप्ति कि कामना करने वाले व्यक्ति के लिये कुबेर यंत्र अत्यन्त सफलता दायक होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। कुबेर यंत्र के पूजन से एकाधिक स्त्रोत्र से धन का प्राप्त होकर धन संचय होता हैं।



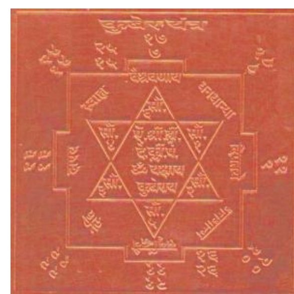
ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस

(Gold Plated)



ताम्र पत्र पर रजत पोलीस

(Silver Plated)



ताम्र पत्र पर

(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1090	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1650	4” X 4”	1090
6” X 6”	3600	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	6400	9” X 9”	5100	9” X 9”	3250
12” X12”	10800	12” X12”	8200	12” X12”	6400

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारण करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं। गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

अष्ट लक्ष्मी कवच

अष्ट लक्ष्मी कवच को धारण करने से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का स्वतः अशीर्वाद प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र: Rs-1250**

मंत्र सिद्ध व्यापार वृद्धि कवच

व्यापार वृद्धि कवच व्यापार के शीघ्र उन्नति के लिए उत्तम हैं। चाहें कोई भी व्यापार हो अगर उसमें लाभ के स्थान पर बार-बार हानि हो रही हैं। किसी प्रकार से व्यापार में बार-बार बांधा उत्पन्न हो रही हो! तो **संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित मंत्र सिद्ध पूर्ण चैतन्य युक्त व्यापात वृद्धि यंत्र** को व्यपार स्थान या घर में स्थापित करने से शीघ्र ही व्यापार वृद्धि एवं नितन्तर लाभ प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र: Rs.730 & 1050**

मंगल यंत्र

(त्रिकोण) मंगल यंत्र को जमीन-जायदाद के विवादो को हल करने के काम में लाभ देता हैं, इस के अतिरिक्त व्यक्ति को ऋण मुक्ति हेतु मंगल साधना से अति शीध्र लाभ प्राप्त होता हैं। विवाह आदि में मंगली जातकों के कल्याण के लिए मंगल यंत्र की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र Rs- 730**

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

विवाह संबंधित समस्या

क्या आपके लडके-लडकी कि आपकी शादी में अनावश्यक रूप से विलम्ब हो रहा हैं या उनके वैवाहिक जीवन में खुशियां कम होती जारही हैं और समस्या अधिक बढती जारही हैं। एसी स्थिती होने पर अपने लडके-लडकी कि कुंडली का अध्ययन अवश्य करवाले और उनके वैवाहिक सुख को कम करने वाले दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

शिक्षा से संबंधित समस्या

क्या आपके लडके-लडकी की पढाई में अनावश्यक रूप से बाधा-विघ्न या रुकावटे हो रही हैं? बच्चो को अपने पूर्ण परिश्रम एवं मेहनत का उचित फल नहीं मिल रहा? अपने लडके-लडकी की कुंडली का विस्तृत अध्ययन अवश्य करवाले और उनके विद्या अध्ययन में आनेवाली रुकावट एवं दोषो के कारण एवं उन दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

क्या आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं?

आपके पास अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु पूजा-अर्चना, साधना, मंत्र जाप इत्यादि करने का समय नहीं हैं? अब आप अपनी समस्याओं से बीना किसी विशेष पूजा-अर्चना, विधि-विधान के आपको अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सके एवं आपको अपने जीवन के समस्त सुखो को प्राप्त करने का मार्ग प्राप्त हो सके इस लिये गुरुत्व कार्यालत द्वारा हमारा उद्देश्य शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त विभिन्न प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

ज्योतिष संबंधित विशेष परामर्श

ज्योति विज्ञान, अंक ज्योतिष, वास्तु एवं आध्यात्मिक ज्ञान सें संबंधित विषयों में हमारे 30 वर्षो से अधिक वर्ष के अनुभवों के साथ ज्योतिस से जुडे नये-नये संशोधन के आधार पर आप अपनी हर समस्या के सरल समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

ओनेक्स

जो व्यक्ति पन्ना धारण करने मे असमर्थ हो उन्हें बुध ग्रह के उपरत्न **ओनेक्स** को धारण करना चाहिए। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु और स्मरण शक्ति के विकास हेतु ओनेक्स रत्न की अंगूठी को दायें हाथ की सबसे छोटी उंगली या लॉकेट बनवा कर गले में धारण करें। ओनेक्स रत्न धारण करने से विद्या-बुद्धि की प्राप्ति हो होकर स्मरण शक्ति का विकास होता हैं।

अक्टूबर 2012 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
2	सूर्योदय से सायं 7.35 तक	21	सायं 6.21 से रातभर
3	रात्रि 10.24 से रातभर	22	सायं 5.38 से रातभर
14	सम्पूर्ण दिन-रात	28	रात्रि 11.56 से रातभर
17	रात्रि 1.40 से 18 अक्टूबर सूर्योदय तक	31	प्रातः 5.19 से दिन-रात
18	सूर्योदय से रात्रि 11.19 तक		
अमृत योग			
2	सूर्योदय से सायं 7.35 तक	17	रात्रि 1.40 से 18 अक्टूबर सूर्योदय तक
14	दिन 11.15 से रात्रिपर्यन्त		
त्रिपुष्कर योग (तीन गुना) योग			
17	प्रातः 4.12 से सूर्योदय तक	31	प्रातः 5.19 से सूर्योदय तक
21	सायं 6.21 से रात्रि 9.45 तक		
द्विपुष्कर (दोगुना फल) योग			
6	रात्रि 9.47 से 7 अक्टूबर को प्रातः 7.40 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
2	रात्रि 12.53 से 3 अक्टूबर दिन 1.59 तक	18	सायं 6.12 से 19 अक्टूबर को प्रातः 4.40 तक
6	रात्रि 9.47 से 7 अक्टूबर को प्रातः 10.56 तक	21	रात्रि 9.45 से 22 अक्टूबर को प्रातः 9.05 तक
10	दिन 3.01 से देर रात 3.09 तक	25	प्रातः 7.30 से सायं 7.38 तक
13	रात्रि 11.08 से 14 अक्टूबर को प्रातः 9.50 तक	28	रात्रि 11.16 से 29 अक्टूबर को दिन 12.17 तक

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोक्त मत से विघ्नकारक भद्रा या भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

वार	गुलिक काल (शुभ) समय अवधि	यम काल (अशुभ) समय अवधि	राहु काल (अशुभ) समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

ग्रह चलन अक्टूबर -2012

Day	Sun	Mon	Ma	Me	Jup	Ven	Sat	Rah	Ket	Ua	Nep	Plu
1	05:14:10	11:24:01	07:01:38	05:29:12	01:22:19	04:03:18	06:05:23	07:02:55	01:02:55	11:12:26	10:06:46	08:12:57
2	05:15:09	00:06:14	07:02:20	06:00:45	01:22:19	04:04:27	06:05:30	07:02:49	01:02:49	11:12:24	10:06:44	08:12:57
3	05:16:08	00:18:16	07:03:02	06:02:17	01:22:20	04:05:37	06:05:37	07:02:46	01:02:46	11:12:21	10:06:43	08:12:58
4	05:17:07	01:00:09	07:03:44	06:03:48	01:22:20	04:06:47	06:05:44	07:02:44	01:02:44	11:12:19	10:06:42	08:12:58
5	05:18:07	01:11:57	07:04:27	06:05:18	01:22:20	04:07:57	06:05:51	07:02:45	01:02:45	11:12:17	10:06:41	08:12:59
6	05:19:06	01:23:44	07:05:09	06:06:47	01:22:20	04:09:07	06:05:58	07:02:46	01:02:46	11:12:14	10:06:40	08:12:59
7	05:20:05	02:05:35	07:05:51	06:08:15	01:22:19	04:10:17	06:06:05	07:02:48	01:02:48	11:12:12	10:06:39	08:13:00
8	05:21:04	02:17:34	07:06:34	06:09:43	01:22:19	04:11:27	06:06:12	07:02:49	01:02:49	11:12:09	10:06:38	08:13:00
9	05:22:03	02:29:47	07:07:16	06:11:09	01:22:18	04:12:38	06:06:19	07:02:48	01:02:48	11:12:07	10:06:37	08:13:01
10	05:23:03	03:12:18	07:07:59	06:12:35	01:22:17	04:13:48	06:06:27	07:02:47	01:02:47	11:12:05	10:06:36	08:13:02
11	05:24:02	03:25:13	07:08:41	06:14:00	01:22:16	04:14:59	06:06:34	07:02:43	01:02:43	11:12:02	10:06:35	08:13:02
12	05:25:01	04:08:33	07:09:24	06:15:24	01:22:14	04:16:10	06:06:41	07:02:38	01:02:38	11:12:00	10:06:34	08:13:03
13	05:26:01	04:22:20	07:10:07	06:16:47	01:22:13	04:17:21	06:06:48	07:02:32	01:02:32	11:11:58	10:06:33	08:13:04
14	05:27:00	05:06:32	07:10:50	06:18:09	01:22:11	04:18:32	06:06:55	07:02:27	01:02:27	11:11:55	10:06:32	08:13:05
15	05:28:00	05:21:05	07:11:33	06:19:30	01:22:09	04:19:43	06:07:02	07:02:22	01:02:22	11:11:53	10:06:31	08:13:06
16	05:28:59	06:05:53	07:12:16	06:20:50	01:22:07	04:20:54	06:07:10	07:02:18	01:02:18	11:11:51	10:06:30	08:13:06
17	05:29:59	06:20:48	07:12:59	06:22:09	01:22:04	04:22:06	06:07:17	07:02:16	01:02:16	11:11:48	10:06:29	08:13:07
18	06:00:58	07:05:41	07:13:43	06:23:27	01:22:02	04:23:17	06:07:24	07:02:15	01:02:15	11:11:46	10:06:28	08:13:08
19	06:01:58	07:20:26	07:14:26	06:24:43	01:21:59	04:24:29	06:07:31	07:02:16	01:02:16	11:11:44	10:06:28	08:13:09
20	06:02:57	08:04:57	07:15:09	06:25:58	01:21:56	04:25:41	06:07:38	07:02:18	01:02:18	11:11:42	10:06:27	08:13:10
21	06:03:57	08:19:10	07:15:53	06:27:11	01:21:53	04:26:52	06:07:46	07:02:19	01:02:19	11:11:40	10:06:26	08:13:11
22	06:04:57	09:03:04	07:16:36	06:28:23	01:21:49	04:28:04	06:07:53	07:02:20	01:02:20	11:11:37	10:06:25	08:13:12
23	06:05:57	09:16:40	07:17:20	06:29:33	01:21:46	04:29:16	06:08:00	07:02:19	01:02:19	11:11:35	10:06:25	08:13:13
24	06:06:56	09:29:57	07:18:04	07:00:41	01:21:42	05:00:28	06:08:07	07:02:18	01:02:18	11:11:33	10:06:24	08:13:14
25	06:07:56	10:12:58	07:18:47	07:01:47	01:21:38	05:01:41	06:08:15	07:02:15	01:02:15	11:11:31	10:06:24	08:13:15
26	06:08:56	10:25:44	07:19:31	07:02:50	01:21:34	05:02:53	06:08:22	07:02:11	01:02:11	11:11:29	10:06:23	08:13:16
27	06:09:56	11:08:17	07:20:15	07:03:51	01:21:30	05:04:05	06:08:29	07:02:08	01:02:08	11:11:27	10:06:23	08:13:17
28	06:10:56	11:20:38	07:20:59	07:04:49	01:21:25	05:05:18	06:08:37	07:02:04	01:02:04	11:11:25	10:06:22	08:13:19
29	06:11:55	00:02:48	07:21:43	07:05:43	01:21:20	05:06:30	06:08:44	07:02:01	01:02:01	11:11:23	10:06:22	08:13:20
30	06:12:55	00:14:50	07:22:27	07:06:34	01:21:16	05:07:43	06:08:51	07:01:59	01:01:59	11:11:21	10:06:21	08:13:21
31	06:13:55	00:26:45	07:23:11	07:07:21	01:21:11	05:08:56	06:08:58	07:01:58	01:01:58	11:11:19	10:06:21	08:13:22

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते हैं. अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता हैं.

- क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच?
- उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं
- कोई विशेष निति-नियम नहीं
- कोई बुरा प्रभाव नहीं
- कवच के बारे में अधिक जानकारी हेतु

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

सर्व कार्य सिद्धि	4600/-	ऋण मुक्ति	910/-	विघ्न बाधा निवारण	550/-
सर्व जन वशीकरण	1450/-	धन प्राप्ति	820/-	नज़र रक्षा	550/-
अष्ट लक्ष्मी	1250/-	तंत्र रक्षा	730/-	दुर्भाग्य नाशक	460/-
संतान प्राप्ति	1250/-	शत्रु विजय	730/-	* वशीकरण (२-३ व्यक्तिके लिए)	1050/-
स्पे- व्यापर वृद्धि	1050/-	विवाह बाधा निवारण	730/-	* पत्नी वशीकरण	640/-
कार्य सिद्धि	1050/-	व्यापर वृद्धि	730/-	* पति वशीकरण	640/-
आकस्मिक धन प्राप्ति	1050/-	सर्व रोग निवारण	730/-	सरस्वती (कक्षा +10 के लिए)	550/-
नवग्रह शांति	910/-	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक	640/-	सरस्वती (कक्षा 10 तकके लिए)	460/-
भूमि लाभ	910/-	कामना पूर्ति	640/-	* वशीकरण (1 व्यक्ति के लिए)	640/-
काम देव	910/-	विरोध नाशक	640/-	रोजगार प्राप्ति	550/-
पदों उन्नति	910/-	रोजगार वृद्धि	730/-		

*कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

YANTRA LIST		EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 255, 370, 460, 550, 640, 730, 820, 910, 1250, 1850, 2300, 2800 and Above…..

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA KARYALAY

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	200.00	500.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	75.00	90.00	12.00	180.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	120.00	150.00	190.00	280.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	20.00	28.00	42.00	51.00	90.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye Orissa	(उडिसा लहसुनिया)	460.00	640.00	1050.00	2800.00	5500.00 & above
Gomed	(गोमेद)	15.00	27.00	60.00	90.00	120.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	300.00	410.00	640.00	1800.00	2800.00 & above
Zarakan	(जरकन)	350.00	450.00	550.00	640.00	910.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	60.00	120.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	60.00	90.00	120.00	280.00	460.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	20.00	30.00	45.00	60.00	120.00 & above
Opal	(उपल)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Garnet	(गारनेट)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	09.00	12.00	15.00	19.00	25.00 & above
Real Onyx	(ओनेक्स)	60.00	90.00	120.00	190.00	280.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	25.00	30.00	45.00	55.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	21.00	30.00	45.00	100.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	09.00	12.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Diamond (.05 to .20 Cent)	(हीरा)	50.00 (Per Cent)	100.00 (Per Cent)	200.00 (PerCent)	370.00 (Per Cent)	460.00 & above (Per Cent)

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

BOOK PHONE/ CHAT CONSULTATION

We are mostly engaged in spreading the ancient knowledge of Astrology, Numerology, Vastu and Spiritual Science in the modern context, across the world.

Our research and experiments on the basic principals of various ancient sciences for the use of common man. exhaustive guide lines exhibited in the original Sanskrit texts

BOOK APPOINTMENT PHONE/ CHAT CONSULTATION

Please book an appointment with Our expert Astrologers for an internet chart . We would require your birth details and basic area of questions so that our expert can be ready and give you rapid replied. You can indicate the area of question in the special comments box. In case you want more than one person reading, then please mention in the special comment box . We shall confirm before we set the appointment. Please choose from :

PHONE/ CHAT CONSULTATION	
Consultation 30 Min.:	RS. 1250/-*
Consultation 45 Min.:	RS. 1900/-*
Consultation 60 Min.:	RS. 2500/-*

*While booking the appointment in Addvance

How Does it work Phone/Chat Consultation

This is a unique service of **GURUATVA KARYALAY** where we offer you the option of having a personalized discussion with our expert astrologers. There is no limit on the number of question although time is of consideration.

Once you request for the consultation, with a suggestion as to your convenient time we get back with a confirmation whether the time is available for consultation or not.

- We send you a Phone Number at the designated time of the appointment
- We send you a Chat URL / ID to visit at the designated time of the appointment
- You would need to refer your Booking number before the chat is initiated
- Please remember it takes about 1-2 minutes before the chat process is initiated.
- Once the chat is initiated you can commence asking your questions and clarifications
- We recommend 25 minutes when you need to consult for one persona Only and usually the time is sufficient for 3-5 questions depending on the timing questions that are put.
- For more than these questions or one birth charts we would recommend 60/45 minutes Phone/chat is recommended
- Our expert is assisted by our technician and so chatting & typing is not a bottle neck

In special cases we don't have the time available about your Specific Questions We will taken some time for properly Analysis your birth chart and we get back with an alternate or ask you for an alternate.

All the time mentioned is Indian Standard Time which is + 5.30 hr ahead of G.M.T.

Many clients prefer the chat so that many questions that come up during a personal discussion can be answered right away.

BOOKING FOR PHONE/ CHAT CONSULTATION PLEASE CONTECT

GURUTVA KARYALAY

Call Us:- 91+9338213418, 91+9238328785.

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com, chintan_n_joshi@yahoo.co.in,

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों , सामाजिक , कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका अक्टूबर -2012

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
http://www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



OCT 2012